प्रस्तावना.

—— o✻o ——

यह रत्नसार नाम का अपूर्व ग्रन्थ अनेक जैन शास्त्रों के गूढार्थ को निरूपण करनेवाले धारने लायक ३०४ प्रश्नों का परमोत्तम संग्रह है. इस ग्रन्थ को देख कर बहुतसे जैनी भाइयों की इस पर विशेष रुचि हुई और हस्त लिखित प्रति सब को मिल नहीं सक्ती इसलिये इस ग्रन्थ को छपाकर प्रसिद्ध किया.

यह ग्रन्थ किस आचार्य ने बनाया है सो मालूम नहीं होता परन्तु प्रश्नों के आशय और रचना पर से प्रगट होता है कि किसी द्रव्यानुयोग में परिपूर्ण, बुद्धिमान, विचक्षण आचार्य ने भेदाभेद करके वस्तु का निर्णय भली भांति किया है.

जिस प्रति पर से यह ग्रन्थ छापा गया है वह हम को अशुद्ध प्राप्त हुई कि जिस में प्रश्नों का नंबर तक बराबर नहीं (जो पीछे से सुधार दिया गया) और हमने दूसरी प्रति की बहुत सी तलाश भी की परन्तु

हम को मिल नहीं सकी. तब श्रद्धालु जैनी भाइयों का आग्रह देख कर हम ने उसी प्रति पर से पुस्तक छपाना आरंभ कर दिया और दूसरी प्रति मिलने का उद्योग करते रहे. पीछे से श्रीमद् विजय राजेंद्र सूरीश्वर मुनिराज ने कृपा करके शिवगंज के भंडार से प्रति भिजवा कर परम उपकार किया. दूसरी प्रति मिलने पर शुद्धाशुद्ध देखने में बहुत कुछ सहायता मिली तथापि दोनों प्रतें न्यूनाधिक अशुद्ध होने से भली प्रकार संशोधन नहीं हो सका. अनेक स्थलों पर तो हस्तलिखित पाठ ज्यों का त्यों रखना पड़ा, कारण कि हमारे समझ में बराबर आया नहीं तो ग्रंथकार के अभिप्राय से विरुद्ध न छपजाने का ध्यान रखना पड़ा.

आशा है कि श्रद्धालु जैनी भाई इस ग्रन्थ को आश्रय देकर परम लाभ उठावेंगे और हमारा उत्साह बढावेंगे जिस से हम अपूर्व २ ग्रन्थ प्रकाश करके उन को भेट करने में समर्थ होवें.

विषयानुक्रमणिका.

॥ विषयानुक्रमाणिका ॥

प्रश्न.	विषय.	पृष्ठ.
१७	धर्म ना च्यार प्रकार.	१३
१८	कर्म तीन प्रकार ना छै.	१४
१९-२०	नव पदार्थ ना भावार्थ.	"
२१	उदय बंधनो स्वरूप.	१६
२२	बोध समाधि नो लक्षण.	१७
२३	संवेग वैराग्य नुं लक्षण.	"
२४	दान, शील, तप, भाव, श्या वडे होय ?	१८
२५	ध्यान प्रतिबंधकनो स्वरूप	"
२६	तिर्यग परिचय ऊर्द्ध परिचय नो अर्थ.	१९
२७	धर्म केतली प्रकार नो?	२०
२८	च्यार प्रकार नो मुनि नें संयम.	"
२९	उरपरि, भुजपरि सर्पनी जाति शरीर आयु नो प्रमाण.	२१
३०	च्यार प्रकार नो मरण	२२
३१	जीव ना जे द्रव्य, गुण, पर्याय छै तेहना घातक कुण छै ?	"

॥ विषयानुक्रमणिका ॥

॥ विषयानुक्रमाणिका ॥

विषय.	पृष्ट.

प्रश्न.	विषय.	पृष्ठ.
	हेतु पमाडे ?	५२
७९	हिंसा ना केतला भेद छै ?	५३
८०	शास्त्रमध्ये ३ योग नो स्वरूप. ?	५५
८१	द्रव्य, गुण, पर्याय किवारे विगड़े	”
८२	मति श्रुत ज्ञानी तथा अज्ञानी जिन वाणी सांभले ते शी रीते प्रणमै ?	५६
८३	जीव कर्म सुं किम् मिल्यो छै ?	”
८४	पांच इंद्रिय नी सोल संज्ञा.	५७
८५	सोले संज्ञा जीव केहनें होइ ?	”
८६	धर्म कर्म किम् होइ ?	५८
८७	श्रीजिन ना ४ निक्षेपा तेहनो स्थानक शरीर मांहि किहां छै ?	”
८८	पांचेंद्री शेणे भरी छै ?	५९
८९	च्यार संज्ञा नो परमार्थ कहै छै.	”
[illegible]	च्यार संज्ञा बीजी प्रकारे.	६०
	सिद्ध ना जीव नें अनन्ता गुण छै ते सम	

विषय. पृष्ठ.

विषय. पृष्ठ.

विषय. पृष्ठ.

प्रश्न.	विषय.	पृष्ठ.

पद

प्रश्न. विषय पृष्ठ.

पद

प्रार्थना.

—:0:—

सब लोगों से निवेदन है कि इस उत्तम पुस्तक में कोई दृष्टि दोष से भूल रही हुई मालूम होतो सुधारलेवें और क्षमा करें तथा आगेकी आवृत्ति में शुद्ध करने के वास्ते खुलासा लिख भेजें ऐसी हमारी प्रार्थना है.

लि० नि०

पुस्तक मिलने का ठिकाना :—

बाबू चाँदमल बालचन्द
चौमुखी पुल
रतलाम (मालवा.)

॥ श्रीजिनायनमः ॥

॥ रत्नसार ॥

॥ श्लोक ॥

प्रणम्य श्री महावीरं शंकरं परमेश्वरं ॥
विचार रत्नसारस्य क्रियते बालबोधकं॥ १॥

अथ श्रीवीतरागनी वाणी, भव वेल्ल कृपाणी, संसार समुद्र तारणी, महा मोहान्धकार दिनकरानुकारणी, क्रोध दावानलोपशमनी, मुक्ति मार्ग प्रकाशनी, कलि-मल प्रलयनी, मिथ्यात्व छेदनी, त्रिभुवन पालनी, पाप विशोधनी, मन्मथ प्रतिथंभनी, अमृत रस आस्वादनी, हृदय आल्हादनी, विक्षेप विस्तारणी, आगमोद्गारणी, चतुर्विध सघं मनोहारणी, भव्य जन कर्णामृत श्रावणी,

प्रार्थना.

——:0:——

सब लोगों से निवेदन है कि इस उत्तम पुस्तक में कोई दृष्टि दोष से भूल रही हुई मालूम होतो सुधारलेवें और क्षमा करें तथा आगेकी आवृत्ति में शुद्ध करने के वास्ते खुलासा लिख भेजें ऐसी हमारी प्रार्थना है.

लि० नि०

पुस्तक मिलने का ठिकाना :—

बाबू चाँदमल बालचन्द

चौमुखी पुल

रतलाम (मालवा.)

॥ श्रीजिनायनमः ॥

॥ रत्नसार ॥

॥ श्लोक ॥

प्रणम्य श्री महावीरं शंकरं परमेश्वरं ॥
विचार रत्नसारस्य क्रियते बालबोधकं ॥ १ ॥

अथ श्रीवीतरागनी वाणी, भव वेल कृपाणी, संसार समुद्र तारणी, महा मोहान्धकार दिनकरानुकारणी, क्रोध दावानलोपशमनी, मुक्ति मार्ग प्रकाशनी, कलिमल प्रलयनी, मिथ्यात्व छेदनी, त्रिभुवन पालनी, पाप विशोधनी, मन्मथ प्रतिथंभनी, अमृत रस आस्वादनी, हृदय आल्हादनी, विक्षेप विस्तारणी, आगमोदगारणी, चतुर्विध सघं मनोहारणी, भव्य जन कर्णामृत श्रावणी,

योजन प्रमाण विस्तारणी, एहवी वीतरागनी वाणी जाणवी.

जीव १ अजीव २ पुण्य ३ पाप ४ आश्रव ५ संवर ६ निर्जरा ७ बंध ८ मोक्ष ९ धर्म १० अधर्म ११ हेय १२ ज्ञेय १३ उपादेय १४ निश्चय १५ व्यवहार १६ उत्सर्ग १७ अपवाद १८ आश्रवा १९ परिश्रवा २० आतिचार २१ अनाचार २२ अतिक्रम २३ व्यति-क्रम २४ इत्यादिक सांभल्यां विना शास्त्र ना भेद न जाणै.

सुठाम, सुगाम, सुजात, सुभ्रात, सुतात, सुमात, सुबात, सुकुल, सुबल सुस्त्री, सुपुत्र, सुपात्र, सुक्षेत्र, सुदान, सुमान, सुरूप, सुविद्या, सुदेव, सुगुरु, सुधर्म, सुवेस, सुदेश, २२ ए बावीस योगवाई पुण्य विना न पामिये.

सुमति, शीलवंत, संतोषी, सत संजमी, स्वजन, साचा बोला, सत्पुरुष, सुमेला, सुलक्षण, सुलज्जा, सुकुलीन, गंभीर, गुणवंत, गुणज्ञ, एहवा पुरुष नो संग कीजे तो धर्म पामै.

चुगल, चोर, छलग्राही, अधर्मी, अधर्म, अविनीत, अधिक बोला, अणाचारी, अन्यायी, अधीर, अमोही, निःस्नेही, कुलक्षणा, कुबोला, कुपात्र, कुडा बोला, कुशीलीया, कुसामनि, कुलखंपणा, भूंडा, तुच्छ एहवा पुरुष नो संग न कीजे.

॥ अथ धारवा रूप छुट्टा बोल लिख्यते ॥

१ जीव धर्म किम पामे ? गुरु कहे छै—जीव ३ तीन प्रकारे धर्म पामे. गुरु ना उपदेश थी १ तथा अभ्यास थी २ तथा वैराग्य थी ३ एहवो उपदेशसार पद्मानन्दी २५ (पच्चीसी) मध्ये कह्यो छै.

२ तथा अभ्यास ४ प्रकार ना कह्या छै ते बीजो प्रश्न—सूत्र अभ्यास १ अर्थाभ्यास २ वस्तु ना अभ्यास ३ अनुभवाभ्यास ४. ए चार अभ्यास पकताये वस्तु पामे.

जीव नें पाप उपजे हिंसाइ, पुण्य ऊपजे ते दयाइ. तथा छःकाय जीव नें हणवानो परिणाम थाइ तिहां पाप नीपजे. ते छःकाय ना जीव नें त्रिकरण

योगे हणतां वैर अने पाप बे नीपजै. ते पाप नें उदयै असाता, आकुलता, उद्वगता, अथिरता उपजै १. वैर नें योगै ते जीव आवी यथा योगै पीड़ै, ए भाव बीजो २.

३ धर्म, पुण्य, पाप कर्म श्या थी ऊपजै ते त्रीजो प्रश्नः—तेह ना उत्तर ए ३ तीन मध्ये पहलो बोल जे धर्म १ ते एक मोहनी कर्म ना क्षयोपशम थी. ते किम ?दर्शन मोहनी कर्म ना क्षयोपशम थी धर्म ऊपजै. तथा चारित्र मोहनी ना उदय थी पुण्य पाप ऊपजै.

अविरत नों उदय मंद थाइ तथा क्षयोपशम थाइ तिवारे विरति नो उदय थाइ. तिवारे षट काय ना जीव ऊपर दया प्रणाम ऊपजे तेथी पुण्य ऊपजे २. तथा अविरति ना उदयै तीव्र पाप नीपजै ३.

ते मध्ये एटलो विशेष जे पुण्य पाप ते चारित्र मोहनी उदय मंद तीव्रैं होइ. अने धर्म दर्शन मोहनी

क्षयोपशम क्षायक थी होइ. तथा पुण्य पाप ना फल भोगवावै ते वेदनी कर्म. तेहनें उदये वेदावे—फल देखाड़ै तथा पुण्य पाप नो बंध पडै ते मोहनी कर्म नी मुंझताइ. पुण्य पाप प्रणमैं ते अंतराय नें क्षयोपशमे, इत्यादि विस्तार स्वबुद्धि करि जाणवा. इति भावए

तथा राजा ते न्यायी नें सोम दृष्टि, अने आचार्य ते निस्पृही होइ तिहां जैन धर्म प्रवर्त्तै.

४ देशना नु चोथो प्रश्न—देशना ते कहिये जिहां मिथ्यात्व नी पुष्टी न थाय अने मार्ग विरुद्ध न प्रकाशैः आत्म स्वरूप उपादेय रूपे, तथा शुभ क्रिया नो अत्यादर पण प्ररूपै. अने शुभ क्रिया ना फल नी वांछा न करावै, तिरस्कारै राखै. पाप की आसेवना कालै तिरस्कारै राखै. इत्यादि आगमोक्त रीते प्ररूपे ते देसना कहिये. तथा पाप की आसेवना कालैज माठी जाणवी. जेहनो फल दुर्गति नें मेलवै. धर्म पामवो वेगलो करै ते मांहे तिरस्कारै राखवी.

५ अने पुन्य क्रिया ते सेवना कालै अत्यादरें सेववी पण तेहना फल नी वांछा न करवी. तेह नो रहस्य श्यो ? जे पुण्य क्रिया शुभ व्यापारै शुभयोगै न आदरै तो मार्ग विरुद्ध थाइ. परम्पराये पण वीतराग मार्गे न जोड़ाई अने जो पुण्य ना फल नी वांछा करै तो निदान रूप मिथ्यात्व प्रणमे. जो सहज रूप शुभ क्रिया करै तो कर्म नो काटनिवारी शीघ्र मुक्तिपद पामै ए रहस्यं.

६ छठा प्रश्न मध्ये हेय, ज्ञेय, उपादेय शब्द नो भावार्थ लिखिये छै—समभावै हेय १, यसार्थे(यथार्थ) ज्ञेय, २ स्वरूपे उपादेय ३ ए रीते जाणवूं. वली गीतार्थ पासे एह नो विशेष अर्थ धारवो । इति

७ हिवै श्री उवाई सूत्र मध्ये तप ना भेद विशेष कह्या छै, तिहां काउसग्ग द्रव्य १ भाव २ बे प्रकार कह्यो छै. तिहां द्रव्य काउसग ४ च्यार प्रकार ना कह्या छै—प्रथम शरीर काउसग १ उपधि काउसग २ भात ३ पाणी नो ४. त्यागते पण काउसग तथा, भाव काउसग ते ३ तिन प्रकार नो—कषाय काउसग १ संसार काउसग २

कर्म काउसग ३. ते मध्ये कषाय काउसग ते ४ * प्रकार नो, संसार काउसग ते चार † गति निवारण रूप २, कर्म काउसग ते ८ ‡ आठ प्रकार नो जाणवो, आठ कर्म क्षय थी.

हिवे जे शुभ क्रिया विधि नी छै ते स्वभाव रूपै प्रणमै तिहां निर्जरा नीपजै. तथा शुभ क्रिया जे अविधि नी छै ते बंध रूप प्रणमै, तथा लौकिक यश सौभाग्य रूप प्रणमै, तथा पुण्य रूप प्रणमें ते बन्ध रूप थाइ, जेह थी संसार भ्रमण विशेष नीपजै, एह भाव.

८ अथ जीवने खेद ऊपन्यो किम टलै आठमो प्रश्न— जीव नें खेद निवारवा नें अर्थे पूर्व बंध कर्म संभारिये. जेहवा में पूर्व कर्म बांध्या छै तेहवा उदय आवै छै. ते मध्ये केतलायक कर्म प्रदेश वेदे नें वेदीनें खैरवै छै.

---

* क्रोध १ मान २ माया ३ लोभ ४ थी निवर्तवो ते कषाय काउसग

† देव १ मनुष्य २ तिर्यंच ३ नर्क ४ गती नी इच्छा रहित ते संसार काउसग,

‡ ज्ञानावरणी १ दरस्नावरणी २ वेदनी ३ मोहनी ४ आयू ५ नाम ६ गौत्र ७ अन्तराय ८ ये आठ कर्म ना क्षय ते कर्म काउसग.

त्व टलै,(अने) ग्रंथीभेद थाय उपशम क्षयोपसमसमकित ते पांमै तिवारे मिथ्यात्व परणाम मिथ्यात्व थी टलै. (अने) क्षायक समकित पामै तिवारें प्रदेश मिथ्यात्व टलै. इति रहस्यं.

उववाई सूत्र मध्ये पांच राज चिन्ह कह्या छै, पांच अभिगम स्त्री नें पण कह्या छै, ते तिहां थी जोइयो.

१३. हिवै देशना च्यार ४ प्रकार नी छै ते तेर मो प्रश्न कहै छैः—धर्म देसना १ गति देसना २ बंध देसना ३ मोक्ष देसना ४ तेहना विस्तार गुरु गीतार्थ थकी जाणवा.

१४. च्यार ४ प्रकार ना अनर्थ दंड कह्या ते चउद मो प्रश्न कहै छैः—आरत रुद्र ध्यानै अनर्थ दंड १ प्रमादाचरणै अनर्थ दंड २ हिंसक शास्त्र आपवै अनर्थ दंड ३ पापोपदेशे अनर्थ दंड ४ ए च्यार ४ प्रकारें अनर्थ दंडे सप्तमांगे कह्या छै.

१५. आठ ८ प्रकार ना वचन परिसह सहवा

ते पंदरमो प्रश्न ते कहै छै :—हीलणा—जन्मनी करणी उघाड़ै जे पहिला वइतरु करता रांधणीया हता, हवे. साधु थइ बैठा छै इम कही हीलणा वचन परिसह साधू सहै १. बीजो खींसणा ते अनेरा लोक नी साखे कोई पूर्व कर्म अवगुण होय ते कहै. ते पण साधू सहै २. त्रीजो नंदना—ते मनै करी अवगुणना करै, आदर न दिये, मुख मोहटो राखे ३. चौथो गरहणा—ते साधु ना मुख ऊपरें आवी नें छता अछता अवगुण कहै ४. पांचमो ताडणा—ते साधु पुरुष नें चपेटा प्रमुख आपै ५. छठो तर्जना—ते रे पापिष्ट! तूं जाणीस हवे. अरे विटल! इत्यादि कठिन वचन कहै ६. सातमो पराभव—ते वस्त्र पात्रादिक अपहरै, पात्र तोड़ै, वस्ती थी काढै इत्यादिक करै, ते पण मुनि सहै ७. आठमो एषणा परिसह नो—ते भय नूं उपजाववूं, जे ए रीते तुझ नें दुःख आपीस ८. ए आठ बोल हीलणादिक वचन ना परिसह जाणवा योग्य छै.

१६. हिवै सिझ्झई बुझ्झई नो सोलमो प्रश्नः-ते सिझ्झई १ बुझ्झई २ मुच्चई ३ परिनिव्वाई ४ ए च्यार पद नो अर्थ यथा श्रुत अनुभव छै ते रीतै लिखिये छै. कर्म नो जे ओछो थावो, जे अंशे घटाड़वो ते सिझ्झई १, तिवार पछी वस्तु नूं ज्ञान थयूं ते बुझई २. ते कर्म सत्ता थी क्षय थयूं फिरि बंध क्यारे नावे फिरी न बंधाय ते मुच्चई ३. आतमा के स्वभाव ठरण पाम्या ते परिनिव्वई. ते शीतलीभूत थया जन्म जरा मरण ना भय निवार्या ते (सव्व दुखाणसंतं करेई) ए भाव थी चौथा गुण स्थान थी जे अंशे थाइ ते तरतम भेदे कहवा. अने चवद मानें अंते त[illegible] कहवा. एह नो अर्थ प्रायः इम ऊपजे छै. तो श्री जिनेंद्र प्र[illegible]ते सत्य तथा सर्व कार्य सध्या माटै सिद्धे १. आत्म बोध स[illegible] ज्ञान स्वरूप थया माटै बुद्धे २. सर्व कर्म थी मुकाणा माटे मुत्ते ३. शीतलीभूत थया माटे पडिनिवुडें ४. संसार नो अंत कर्या माटे, अंडगडें ए पाठ नो अर्थ ए रीतें अनुयोग द्वारे, ए भाव छै.

१७. हिव धर्म ना ४ च्यार प्रकार कह्या छै ते किहा ? ते यथा श्रुत सत्रमो प्रश्न लिखिये छैः—प्रथम तो आचार धर्म १ दया धर्म २ क्रिया धर्म ३ वस्तु धर्म ४. ते मध्ये प्रथम आचार धर्म आदरतो जीव अनाचारणपणो टलै, वली लौकिक यश प्रतिष्ठा पामै. अन्य तीर्थी पण जैन धर्म नी प्रशंसा करै, जैन नो आचार अनुमोदै १. बीजो दया धर्म—ते जेह थी हिंसा नो कर्म टलै, मुक्ति पामै, शुभ पुण्य ऊपर जे परंपराये मुक्त हेतु थाय २. तीजो क्रिया धर्म—ते शुभ क्रिया पोषा प्रतिक्रमणा जिनपूजादिक विधे क्रिया करतो कर्म नो काट उतारै, भव तुच्छ करै, परंपरायै मुक्ति मार्गें जोडावै ३. हिवै चौथो वस्तु धर्म—तैं जेह थी वस्तु धर्म पामैं, स्वरूपाचरण पूरण समकित पामै, पुण्य पाप कर्म निर्जरा नीपजे ४. ए च्यार प्रकार धर्म रथ ना ए च्यार हिसा कै. ए वस्तुगतै ए ४ धर्म ना भेद कह्या तेहना दान शील, तप, भावना, ए प्रकार ते कारण प्ररूपै

एणी रीते ४ प्रकार धर्म ना कह्या ते मध्ये एके दुहवा ईनही ४ प्रकारै धर्म जे प्राणी यथा अर्थ स्यादवाद रीते पामै. ते (सूलंभवोधिओथई वहिलो सिद्धि वरै)ए च्यार रीते धर्म ना ४ प्रकार जाणवा. तथा जे प्राणी क्रिया विधि आदरै, उपयोग शुद्ध राखै, ते प्राणी वेहलो भव घटावै, वेहलोही मुक्ति जाय. ए भाव.

१८. हिवै कर्म ३ प्रकार नां छै ते अठार मो प्रश्न कहिये छैः—हिवै कर्म जाते ३ प्रकार ना. तिहां द्रव्य कर्म ते आठ कर्म नी वर्गणा १. नोकर्म ते पांच शरीर २ भाव कर्म ते राग द्वेष परणाति ३. तिहां द्रव्य कर्म, नोकर्म ते पांच शरीर पुद्गलीक पुद्गला श्रित छै. भाव कर्म ते आत्माश्रित छै. पहिला बे कर्म ते कर्प विनाशिक छै. भाव कर्म ते अनादि अविनाशी छै आत्म प्रवृत्ति या मा[illegible] [illegible]ना हर्षोल्लास [illegible]नत छै. [illegible] संग्रह नी टीका मध्ये [illegible]

१९. हिवै नव पदार्थ ना भावार्थ ना उगणीसमो

प्रश्नः—तथा ते पंच परमेष्ठी शरण करवूं ते थी उदय कर्म नूं निवारण थाइ. अरिहंतादिक ना द्रव्य थी शरण करे तो द्रव्य थी जे सर्व पापना उदय आवता ते निष्फल थाय, विपाक वेदना पण अल्प थाइ, इत्यादिक गुण घणो नीपजे. सर्व द्रव्य पाप नो नाश करै. तथा (अप्पा अप्पं मिरउं) इम आत्मा आत्मा नुं सरण करै. सरणागत वज्र पंजर वत् पोता नें स्वरूपे, प्रणमै तिवारे सर्व कर्म नो नाश करै, क्षय करै. इम आत्म शरण अनें निमित्त सरण नो स्वरूप जाणवो. तथा (अरिहंत) नो नाम संभारता, समरतां, प्रणमतां, आत्मा नें श्यो गुण नीपजे? अरि जे राग द्वेष भाव ते मिटैं, वीतराग स्वरूप पामै १. (णमो सिद्धाणं) पद समरतां, संभारतां, प्रणमतां श्यो गुण नीपजे? सिद्ध स्वरूप आत्म अरूपी भाव नें पामै २. तथा (आयरियाणं) पद समरतां, संभारतां, प्रणमतां, जीव नें श्यो गुण नीपजे? पंचाचार प्रवर्त्तन सुलभ उदय आवै भवांतरै, आचार्य पद गणधर पदादिक पामै ३. (उपाध्याय) पद

समरण संभारतां, तन्मय प्रणमतां जीव नें श्यो गुण नीपजे ? शास्त्रार्थ सूत्राभ्यास सुलभ पामै, अध्यापक शक्ति भवांतरै प्रगटै ४. (साधु) पद ध्यान करतां मुक्ति मार्ग नो साधन सुगम, सुलभ, बोधि पामै; चारित्र सुलभ पामी, गज सुकुमाल नी परें, तुरत मुक्ति पद पामै ५. (दर्शन) पद आराधतो सम्यक्त निर्मल करै ६. (ज्ञान) पद आराधतो बोध निर्मल करै. (चारित्र) पद आराधतो निरतीचारपणें सामायकादि पंच चारित्र पंच महा व्रत सुलभ पामै ८. (तप) पद आराधतो इच्छा निरोध थाय अणीच्छक गुण पामै ९. ए नव पद नो भावार्थ संक्षेप थी जाणवो.

२१. हिवै उदय बंध नूं इक्कीसमो प्रश्न कहै छै. ते नो स्वरूप लिखिये छै. बांध्या कर्म उदय आवै; द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव पामी नें जेहवै रसै आवै तेहवा प्रदेशै तथा विपाकै भोगवै. ते भोगवतां जेहवा वेदे तेहवा नवा बीजा बंधाय. तिहां वेद, ते सम भावै वेदै, तिहां निर्जरा थाइ. तथा वेदतां जे विषम राग द्वेष भावै वेदै तो

नवा बंधाय. तथा विषम वेदी नें पछैं पश्चात्ताप करै, तिहां कर्मबंध ना रस घात विघात करी कर्मबंध नी चिकास मिटै तें उदय काले पामीनें सुगमें खरी जाइ. अने जे कर्म विषम वेदीनें मग्न थाय ते चीकणा कर्म बांधै. तें उदय काले घणो दोहिला भोगवी नें निर्जरै. पण वेदतां बीजा कर्म ना बांधणा बंधाय. इति बंध उदय नो भावार्थ जाणवो.

२२. हिवै बोध समाधि नों बावीसमो प्रश्न तेना लक्षण कहै छैः—सम्यक् ज्ञान दर्शन चारित्र अप्राप्त प्रापण बोध तेषांएव निर्विघ्नेन भवान्तर प्रापणं समाधि इति. *

२३. संवेग वैराग्य लक्षणं कथ्यते. ते तेवीसमो प्रश्नः—(संवेगो मोक्षाभिलाष) संसार शरीर भोगादि राग नो जे वय, ते वैराग्य.(मोक्षनो अभिलाष ते संवेग) "धम्मो धम्म फलांहि दोसंणयहरिसो होय संवेगो.

---

* सम्यक् ज्ञान, सम्यक् दर्शन, सम्यक् चारित्र जे अप्राप्त क्यारे प्राप्त थया नथी ते नें प्राप्त करवुं ते बोध केहवाय छै सम्य दर्शन चारित्र नोज निर्विघ्न थकी भवान्तर मां प्राप्त थवुं ते स

संसार देह भोएसु विरति भावोय वेरागं."

२४. हिवै दान शील तप भाव श्या वडे होय ते कहै छै ते चोवीसमो प्रश्नः—धनबल वडे दान देवाय, मन बल वडे शीयल पले, तन बल वडे तप थाय, सम्यक् ज्ञान बल वडे भाव वधै; ए भाव. तथा सद्गुरु नी देसना, सुदेवनी सेवना, सुधर्मनी आराधना ए त्रण निमित्त भाग्य जोगै मिलै.

२५. अथ ध्यान प्रतिबन्ध कानां मोहराग द्वेषाणां स्वरूपम् कथ्यते. पच्चीसमो प्रश्नः—शुद्धात्मादि तत्वेषु विपरीताभिनिवेशनजनको मोहो मिथ्यात्वमिति यावत्। निर्विकार स्वसंवितिविलक्षण वीतराग चारित्रमोहो राग द्वेषो भण्यंते चारित्र मोह शब्देन राग द्वेषो कप्पं भण्यते इति चेत्कषाय मध्ये क्रोध मान द्वयेद्वेषाङ्गं माया लोभ द्वयं रागांगं नो कषाय मध्ये स्त्री पुं नपुंसक वेद त्रयं हास्य रति द्वयं इति पंच रागांगं। अरति शोक द्वयं भय जुगुप्सा इति तुर्यद्वेषांगं भावैतव्यं॥ अत्राह शिष्यः

राग द्वेषोदयं किं कर्म जनितं ? किमात्म जनितं ? इति प्रश्नं पुसात नय विवक्षावशेन चिंतितैक देश शुद्ध निश्चयेन कर्म जनिता भण्यन्ते। तथैव अशुद्ध निश्चयेन जीव जनिता इति स च अशुद्ध निश्चयेन जीव जनिता इति स च अशुद्ध निश्चये शुद्ध निश्चयापेक्षा व्यवहारः एवं अथ मतं। साक्षात् शुद्ध निश्चयेन कस्येति पृच्छामो वयं ॥ तत्रोत्तरं ॥ साक्षात् शुद्ध निश्चयेन स्त्रीपुरुष संयोगरहित पुत्रस्येव । सुद्धा हरिद्रायासंयोगरहित रंगविशेषस्यैव । तेषामुत्पत्तिरेव नास्ति कथमुत्तरं प्रयच्छाम ॥ इति भाव ॥

२६. हिवै तिर्यग परिचय ऊर्द्ध परिचय नो अर्थ प्रश्न छावीसमोः—शास्त्र मध्ये जिहां प्रश्ने तिर्यग परिचय कह्यो छै, ऊर्द्ध परिचय कह्यो छै तेहनो स्यो अर्थ ? जे पांच द्रव्य सप्रदेशी पंचास्तिकाय छै तेहनें तिर्यग प्रसंज्ञा कहीये १. नें जे एक काल अप्रदेशी छै तेह नें ऊर्द्ध संज्ञा जाणवी २. एह नो विस्तार प्रवचनसार ग्रंथे कह्यो छै.

२७. अथ धर्म केतली प्रकार इति सत्तावीसमो प्रश्न ते कहै छैः—तेह नी गाथा भाव नो धर्म तो कह्यो छै. तद्यथा (धम्मो वत्थु सहावो खमादि भावो । य दस विहो धम्मो, रयण तयंच धम्मो । जीवाणं रक्खणं धम्मो ॥ १ ॥)

अस्यार्थ–वस्तु नें वस्तुनो जे स्वभाव जिम चेतन नें चेतन स्वभाव. अेक तो यह धर्म १. बीजो (खंति मद्दव अज्जव) ए गाथाये जे दस प्रकारें यति धर्म कह्यो ते धर्म २. त्रीजो दर्शन, ज्ञान, चारित्र रूप आत्म प्रणमै धर्म ३. चौथो जीव नी द्रव्य भाव सहित दया पालै ते धर्म ४. ए भाव. इति धर्म्मं चतुर्द्धा मुनयो वदंति इत्यर्थः॥

२८. हिवै ४ प्रकारनो मुनि नें संयम कह्यो छै ते अट्ठावीसमो प्रश्न—तिहां प्रथम प्राण संयम. ते षट् काया ना जीव ना वधनी अविरत मिटी ते माटे प्राण संयम १. बीजो इंद्रिया संयम. ते पांच इंद्रिय विकार थी निर्वत्तावै ते इंद्रियसंयम २. त्रीजो कषाय संयम. ते त्रणि चौकडी कषाय ना उदय मिट्या माटे कषाय

संयम ३. चोथुं मनसंयम. ते द्रव्य भाव रूप मन ना विकल्प संवरवा माटे ते मन संयम ४. तिहां द्रव्य मन ते पांच इंद्रिय ना विषय रूप, अने भाव मन ते व्यक्ताव्यक्त विकल्प रूप. ए च्यार प्रकारनो संयम साधु नें जाणवो. आत्मा स्वभावै प्रणमै तिहां सम्यक्त गुण नीपजै. तेहना फल ज्ञान अने आनन्द ए बे नीपजै. तथा देहादिक परभावें प्रणमै तिहां मिथ्यात्व संसार नीपजै. तेह ना फल सुख दुःख ए बे नीपजै. एहवो जाणी आत्म स्वभावें प्रणमवूं ए तात्पर्य.

२९. तथा जीवाभिगम सूत्र मध्ये उरपरि सर्प नी जाति समुर्छिम जेह नो शरीर जघन्य थी आंगुल नी असंख्यातमें भागें, उत्कृष्ट जोयण (जोजन) पहुत कह्यु छै. अने तिहांज असालीओ सर्प ने जाति चक्रवर्त्ति ना स्कंध वार मध्ये ऊपजै ते समुर्छिम नो शरीर जोजन १२ बार नुं कह्यो छै. तेह नो आयु अंतर मुहूर्त्त कह्यो छै. बीजा नें ९ नव जोयण तांई कह्यो एह नें बार जोजनतांई ते विचारवूं. तथा समुर्च्छिम उरपरि नो आयु ५३ त्रेपन

हजार वरस नोउत्कृष्टै कह्यो छै. इति भाव.

३०. हिवै ४ प्रकारे मरण नो तीसमो प्रश्नः— जे ४ प्रकार ना मरणै घणा जीव मरै छै. एह भाव.

३१. हिवै जीव ना जे द्रव्य गुण पर्याय छै तेहना घातक कुण छै ते इकतीसमो प्रश्न कहै छैः— अज्ञान-पणो ते आत्मद्रव्य नो घाती, मिथ्यात्व ते आत्मगुण घाती, अविरत ते आत्मिक सुख-पर्याय घाती. तथा अज्ञान मिथ्यात्व ते आत्मानो जीवपणो दाबे छै, अवि-रति आत्मिक सुख दाबे छै, ए भाव.

३२.तथा. जीव शुद्ध ज्ञान उपयोगैभाव निर्जरा करै छै; अने वैराग्य भाव उदासीनताये द्रव्यनिर्जरा करै छै. इति द्रव्यभाव निर्जरा स्वरूप जाणवो. ए भाव.

३३. हिवै इच्छा मूर्च्छाइ जीव श्युं पुष्ट करै ? ते तेतीसमो प्रश्नः—ते जीव नें पुद्गल नी इच्छा मुर्च्छा छै. ए बे करीनें जीव श्युं पुष्ट करै ? ते कहै छै—

इच्छाये अज्ञान पणो पुष्ट करै, अने मूर्च्छाये मिथ्यात्व पुष्ट करै. ए भाव.

३४. हिवै गुण पर्याय ना घातक नो चोंतीसमो प्रश्नः—हिवै आठ कर्म मध्ये एक मोह नी २८ प्रकृति छै. ते मध्ये ३ प्रकृति मिथ्यात्व मोहनीय जाणवी, २५ प्रकृति चारित्र मोहनी, ते त्रणै भाग वेहचाये, मोहै, राग द्वेषै. तिहां मोह शब्दै मिथ्यात्व जाणवो. राग द्वेष शब्दै चारित्र मोह जाणवो. तेहनी २५ प्रकृति मध्ये १३ प्रकृति राग ना घरनी, १२ प्रकृति रागद्वेष ना घरनी, ते पूर्वे कही छै तिम जाणज्यो. ए अधिकार वीतराग समयसार ग्रंथे बंधाधिकारे कह्यूं छै.

३५. हिवै शरीर परिणाम श्रद्धाननीगति प्रश्न पैंतीसमो तेः—शरीर तथा परिणाम तथा श्रद्धान ए तीननी गति जे रीते छै ते रीत लिखिये छै. शरीर नी गति तो उदयीक भावनी वेदनी मध्ये छै, १. परिणाम गति विषय कषायनी प्रवृति मध्ये इष्टानिष्ट रूपै छै २.

श्रद्धानी गति तत्वातत्ववीनी विवेचन रूपै छै ३. तीन गति, अमारा आत्मानी तो ए रीते दीसै छै.

३६. हिवै द्रव्य गुण पर्याय श्या थी समरै ते छत्तीसमो प्रश्नः—द्रव्य गुण पर्याय जीव ना छै ते जे गुण थी समरै ते कहै छै. दर्शन, ज्ञान, चारित ए तीनथी समरै.

३७. हिवै जीव ना द्रव्य गुण पर्याय समरै ते किम ? तें सैंतीसमो प्रश्नः—आत्मा द्रव्य असंख्यात प्रदेशी तेहनुं जिनवचन प्रतीतें, अनुमानें, अनुभवें परोक्ष प्रत्यक्षें जे भासन थयो प्रतीतात्मक धर्म जे आत्मद्रव्य दीठो छै. सम्यक् दर्शन गुण हेतु ते द्रव्य दर्शन, तथा प्रतीतात्मक धर्म अनन्त गुण नुं जाण पणो थयो ते गुण हेतु सम्यक ज्ञान जाणवो. तथा द्रव्य गुण रूपै प्रणमै जे पर्याय तेह नो हेतु स्वरूपाचरण चारित्र गुण हेतु. एटले जीवना पर्याय समरै ते चारित्र गुण हेतु. इम दर्शन द्रव्य, ज्ञानै गुण, चारित्रै पर्याय, समरै. इति भाव.

३८. हिवै जन्म जरा मरण नुं दुःख किम टलै ते अडतीसमो प्रश्न कहै छैः—तेहना हेतु रत्न त्रय धर्म ते किम ? सम्यक दर्शन गुण थयो अनन्त पुद्‌गल परावर्त्तता ए जे जीव घणा जन्म करतो ते अर्द्ध परा पुद्‌गल मांठैरा तांई उत्कृष्टै जन्म करै. एटले सम्यक दर्शन गुणै घणा जन्म नी परंपरा थी खपावे १. तथा जरा जे शुभाशुभ कर्म उदयागतै आवै ते सुख दुःख रूप वेदावै, तेह नी वेदनी ना सम्यक ज्ञान गुणै मिटाववानो २. जीव नें सम्यक चारित्र गुण ते स्वरूपाचरण व्रताचरण रूपै चारित्र गुणै जिहां मरण थी गति पामै. एटलेइ चारित्र गुणै मरण वेदना मिटाविये ३. ए रीते जन्म जरा मरण भय मिटाववानो हेतु दर्शन ज्ञान चारित्र ए तीन गुण जाणवा. ए भाव.

३९. हिवै योगै बांधै छै कर्म, तथा सत्ताये पिण कर्म छै ते शी रीते छूटै? ते उगणचालीसमो प्रश्न कहै छैः— योग तीन उपार्जा जे कर्म ते तप संजमादि शुभ क्रिया

व्यापारै प्रवर्त्तै त्यारे टलै. तथा सताये कर्म छै ते, शुद्ध उपयोगै स्वाभाविक पोताना गुण पर्याय द्रव्यपणे प्रणमै ते सत्ता कर्म छै ते मिटावै. इम योग कर्म छै ते शुभ क्रियाये निर्जरै. तथाचयोक्तं—"आगम अध्यातमतणा, कह्या घणा प्रबंध। द्रव्य गुणै योगै परणमै, तो सोनो अने सुगंध"। अने हिवै सत्ताये कर्म छै ते, शुद्ध उपयोगै निर्जराय ए भाव. तथा मिथ्यात्व ना बांध्या कर्म सम्यक्त पाम्या थी मिटै, अविरती ना बांध्या ते विरतै टलै.

४०. पुनः मिथ्यात्व अविरती ना बांध्या जे कर्म ते किम मिटै ? ए चालीसमो प्रश्नः—कषाय ना बांध्या कर्म उपशमादिक समता गुणै टलै. तथा प्रमादना बांध्या कर्म अप्रमाद दसाये टलै. इंद्रिय विषय ना बांध्या कर्म ते तपस्यायै टलै. तथा योगना बांध्या कर्म ते अयोगी अवस्थायै सेलेसी करणे टलै. ए भावार्थ जाणवो.

४१. अथ निश्चय व्यवहार नय स्यो गुण करै

ते इकतालीसमो प्रश्नः— ते निश्चय व्यवहार नये सम्यक दृष्टि नें श्यो गुण करै ते कहै छै. निश्चय नय ते जीव द्रव्य वस्तु नें दृढ़ता आस्तिकता करण हेतु. अने व्यवहार नय ते जीवना पर्याय शुभाशुभ कर्म रूपै जे भरयां छै तेहनें समारवानो हेतु छै. ते व्यवहार नय गुणकारी छै. तथा ते व्यवहार नै केडै उद्यम छै. अने निश्चय नय केडै दृढ़ता स्थिरता छै. ए बे नय जिनेश्वरना भाष्या आत्म वस्तु नें समारवाना हेतु छै. ए जैन पद्धति स्यादवाद रूपै छै. एभाव.

४२. हिवै निश्चय व्यवहार सम्यक शी रीते छै ते बिआलीसमो प्रश्न, तेहनो स्वरूप कहै छैः— श्रीजिनवाणी प्रतीतै ग्रहीनें षट् द्रव्य ना यथार्थ पणै गुण पर्याय धारै. अनुभव प्रत्यक्षै स्वरूपनें वेदै, तथा गुण पर्यार्य नो विलेछन करै. तथा पुद्गलादिक कर्म पर्याय सू तदाकार न प्रणमै, पांच इंद्रीना भोग विषै इष्टानिष्ट रूप न वेदै, पोताना स्व-रूप भेद रत्नत्रय रूपै आराधै, तेहनें व्यवहार

सम्यक्त कहिये. तथा पोताना गुण गुणी पर्याय अभेद रूपै रत्न त्रय रूपै निर्विकल्प समाधिपणै प्रणमै तेहनें निश्चय सम्यक्त कहिये. ये पूर्वोक्त वस्तु व्यवहार सम्यक्त ते निश्चय सम्यक्तनो कारण. जे निश्चय सम्यक्त ते केवल ज्ञान नो कारण. इति वीतराग समयसार ग्रंथे उक्तं.

४३. तथा नव तत्व षट् द्रव्य नो जे आस्तिक भावै श्रद्धान, तथा देव गुरु धर्म नु यथार्थ पणै सत्य श्रद्धानु बुद्धिपणा नो प्रकाश विशेशे तत्वातत्व नु नय भंग रूपै, अनेकांत मार्ग विशेष रीते, आगलै परंपराये वस्तु व्यवहार सम्यक्त जे पूर्व कह्यूं ते रूप नें मेलवै. इति रहस्यं.

४४. हिवै धर्म कर्म पुण्य पाप जेह थी होय ते चूमालीसमो प्रश्नः—शुद्धोपयोगै जीव पोता ना द्रव्य गुण पर्याय सुं तदाकारै आत्म पणै प्रणमै ते धर्म. तथा राग द्वेष मय अशुद्धोपयोगै जिहां कर्मबंध नीपजै

ते बंध थी संसार थी ते घणी बंधै. इम शुद्धोपयोगै धर्म अने अशुद्धोपयोगै कर्म. तथा शुद्धोपयोगै शुभ योगै पुन्य. मन वचन काय ना योग प्रशस्त व्यापारै तदाकार पूजा, सामायक, दानादिक शुभ योगै प्रवर्तन तेथी पुण्य बंध नीपजै. तथा अशुभ मन, वचन, काया ना योग विषयादिक व्यापारै तन्मय तल्लीनतापणै प्रणमै तिहां पापबंध नीपजै. एटले शुभ अशुभ योगै पुण्य पाप बंध, अने शुद्धाशुद्धोपयोगै धर्म कर्म नीपजै, तथा पुण्य बंधै, शुभ गति, शुभ सामग्री साता जीव पामै. तथा शुद्धोपयोगै धर्म, निर्जराय कर्म क्षय करी मुक्ति पद पामै. तथा अशुद्धोपयोगै पापबंधे, तेणै संसार मध्ये घणो काल रहै, घणा भव करै, तथा अशु भोपयोगै पाप बंध थी आत्मा जिहां घणी असाता पामै. एटले पापै असाता, पुण्यै साता, कर्मै संसार घणो बंधै, धर्मै मोक्ष. इम चार भेद भिन्न भिन्न जिम हता तिम कह्या. इति रहस्यं.

पंच इंद्रिय ना २३ तेवीस विषय व्यापार अने योगै

३ तीन तल्लीनतापणै न जोडै तेह नें पापबंध अल्प नीपजै, ते आलोयणै निंदै छूटै. तथा शुधोपयोगै जे कर्मबंध नीपजै ते भोगवै छूटै. अत्र चौभंगी. कोई जीव नें नीपजै पाप में कर्म अल्प १. कोई नें कर्म बहु नें पाप अल्प २. कोई नें पाप बहु नें कर्म घणा ३. कोई पापबंध कर्म बंध एकै नहीं ४. इम कर्मबंध पापबंध ना भेद जाणवा.

४५. तथा धर्म कर्म भर्म सेणे. ते पैंतालीसमो प्रश्नः-तत्रोत्तरं, धर्मते शुद्धोपयोगै, कर्मते क्रियाई, भर्मते मिथ्यात्व मोहे.

४६. पुण्य धर्म एक छै किंवा जुदा छै ते छियालीसमो प्रश्नः—पुण्य, पाप, धर्म, ए तीन वस्तु जुदी छै. पुण्यना भेद—अण पुण्य १ पाण पुण्य २ लेण पुण्य ३ सयण पुण्य ४ वथ पुण्य ५ मन्न पुण्य ६ वय पुण्य ७ काय पुण्य ८ नमस्कार पुण्य ९. ए नव भेद उपजवाना कह्या छै तेहना फल ४२ बेतालीस (साउच्च गोयमण, दुगइत्यादि) तथा पाप ना अठारे पाप स्थान, ते १८ भेद. तेहना फल ८२ बयासी (नाणंतराय

दसंग इत्यादि). धर्म ना १०दस भेद—खंति, मद्दव, अज्जव, इत्यादि गाथा जे दस प्रकारे जती धर्म ते धर्म भेद. धर्म ना फल ते मोक्ष. इम धर्म आत्म स्वभाव जनित, अने पुण्य पाप ते कर्म जनित. पुण्य तो बंध रूप छै. पुण्य तो भोगवै छै पुण्य ते आश्रव रूप छै पुण्य मिथ्यादृष्टी नें होय. पुण्य ते जग छै. तथा धर्म ते सम्यक दृष्टी नें छै. धर्म संवर रूप छै. धर्म ते निर्जरा रूप छै. धर्म ते अक्षय रूप छै. धर्म ना दस भेद छै.धर्म ना फल ते मोक्ष रूप छै.इम धर्म पुण्य नी भेदता छै.तथा धर्म पाप पुण्य वस्तु भिन्न, गति भिन्न, उपयोग भिन्न, अने फल भिन्न, ए रीते जाणवो.

४७. हिवै धर्म कर्म उपजतो छदमस्त किम जाणै ते सैंतालीसमो प्रश्नः—संकल्प विकल्प परिणामै जबतांइ जीव वर्तै छै तिहां कर्म नीपजै. जे जीव निर्विकल्प भावे प्रणामै तिहां धर्म नीपजै. एटले विकल्पै कर्म, निर्विकल्पै धर्म, ए भाव.

४८. हिवै स्वाभाविक त्रण गुण नो लक्षण कहै

छै ते अडतालीसमो प्रश्नः——प्रकाशता अने विलंछनता स्वाभाविक लक्षण ज्ञान. १ दृढास्तिकता प्रतीतात्मक श्रद्धानता स्वाभाविक दर्शन लक्षण. २ तथा स्थिरता अने अनाकुलता चरण रूप ते स्वाभाविक चारित्र लक्षण. ३ ए त्रणना सामान्यपणैं लक्षण जाणवा. अने मूल भेद ज्ञान जाणवो. दर्शन देखवो. चारित्र परणमैवा इम छै. पण उत्तर भेदे—स्वभाव लक्षण सामान्यपणै जाणवु ते ज्ञान जाणवो. वस्तु गत दर्शन देखवो प्रतीतात्मक श्रद्धान रूप छै, ते दर्शन जाणवो. अने विवेक रूप ते परण मवूं तेम चारित्र तरण रूप छै. ए जीव मा ३ गुण वस्तु रीते जाणवा ए भाव.

४९. हिवै धर्म सांभलवो, जाणवो, धारवो ते केवी रीते? ते उगणपचासमो प्रश्न कहै छैः——ते धर्म सांभलवो, ते धर्म जाणवो, ते धर्म आदरवो ते विधि कहै छै. वीतराग नी वाणी स्यादवाद रूपै छै. आत्म स्वरूप गुरु उपदेश कहै छै ते धर्म सांभलवो १. स्वसमय पर समय विलंछकता धर्म शुद्धाशुद्ध प्रकाश थयो ते

रत्नत्रय धर्म जाणवो.तथा पोताना गुण पर्याय रूप आत्मा ते आत्मपणै प्रणम्योजेणें धर्म प्ररूप्यो ते धर्म आदरवो ३. इम ३ त्रण भेद जाणवा.

५०. हिवै जीव नी चेतना बे प्रकार नी छै ते पचासमो प्रश्नः—ते एक ज्ञान चेतना १. बीजी अज्ञान चेतना २. अज्ञान चेतना ना बे भेद—एक कर्म चेतना १ बीजी कर्म फल चेतना २. ते मध्ये कर्म चेतना—ते राग द्वेष रूपै प्रणमै ते कर्म चेतना. तथा उदय आव्यां कर्म वेदै ते कर्मफल चेतना. ज्ञान चेतना मध्ये कोई भेद नहीं.ज्ञान चेतना प्रगटै ते कर्म चेतना तथा कर्मफल चेतना मिटै छै.ज्ञान चेतना सम्यक्त पाम्या पछै होई. अने मिथ्यात्वी नें अज्ञान चेतना, ए भाव.

५१.हिवै त्रिकाल भाव कर्म निवारवानुं कारण ते इकावनमो प्रश्नः—ते हिवै त्रण्य कालै जे जीव पाप कर्म बांधै छै ते निवारवानो कौण हेतु? इति प्रश्न. तत्रोत्तरं. गया काल ना पाप कर्म ते प्रतिक्रमणे मिटै,

अने वर्त्तमान काल ना पाप कर्म आलोयणै मिटै, अने अनागत काल ना पाप कर्म पचक्खाणै टलै. ए भाव.

५२. हिवै व्यवहार ना चार भेद नी विगत नो बावनमो प्रश्नः— अणउपचरित सदभूत व्यवहार प्रथम ते श्युं कहिये ? अनंतो ज्ञान, अनंतो दर्शन, अनंतो सुख, अनंतो वीर्य ए आद देई नें अनंत गुणात्मक शुद्धता ते १. बीजो उपचरित सद्भूत व्यवहार. तेहनो अर्थ क्षयोपशम ज्ञान, क्षयोपशम दर्शन, क्षयोपशम चारित्र ते २. त्रीजो अण उपचरित असदभूत व्यवहार. एह नो अर्थ अनादि कर्म अने जीव ज्ञानावरणी आदि देई नें ८ कर्म जे द्रव्य कर्म ते ३. चौथो उपचरित असद्भूत व्यवहार. तेहनो अर्थ बेटा बेटी, घर, द्विपद, चतुष्पद आदि देई नें दस विध परिग्रह ते ४. ए रीते ४. चार व्यवहार नो अर्थ जाणवो.

५३. हिवै ३ तीन प्रकार ना कर्म छै ते तिरपनमो

प्रश्नः—तेह नी विगत. द्रव्य कर्म ज्ञानावरणी आदि देइनेंदकर्म पुद्गलीक ते १.भाव कर्म ते राग द्वेष आदि देईनें आत्मा नो अशुद्ध परिणाम विभावे परिणमै ते भाव कर्म २. नोकर्म ते उदारिकादि पांच शरीर तें जाणवा ३. ए भाव.

५४. हिवै दया ना चार भेद छै ते चोपनमो प्रश्नः—दया ते मिथ्यात्वदृष्टी नें कही ते परहथ वेहचाणी राग द्वेषैं हणाइ ते नथी जाणतो १. वा परदया तो विरति नें होई २. भाव दया ते सम्यकदृष्टी नें होइ ३. स्वदया क्षिपक श्रेणी चढतां होइ ४. इम चार भेदे जाणवी.

५५. हिवै मोक्षना ३ त्रण भेद ते पचपनमो प्रश्नः—भाव मोक्ष सम्यकदृष्टी नें होइ १. द्रव्य मोक्ष साधु नें होइ २. गुण मोक्ष केवली ने गुणस्थानै १३। १४ तेरमा चवदमा सुधी होइ. ३.

५६. हिवै चेतना केवी ते छप्पनमो प्रश्नः—

ते चेतना तीन प्रकारनी कही. तिहां कर्म चेतना त्रस जीव नें १.कर्म फल चेतना एकेंन्द्रियादिक प्रमुख नें २. ज्ञान चेतना सम्यकदृष्टी नें होइ ३. इति भाव.

५७. हिवै संसार मध्ये ३ तीन प्रकार ना जीव नो सत्तावनमो प्रश्न ते कहियें छैः—एक भवाभिनंदी ते मिथ्यादृष्टी जीव १. पुद्गलानंदी ते सम्यकदृष्टी जीव. जेह नें शुभाशुभ कर्म पुद्गल ना उदय आवै, रति वेदाइ, अंतर वेदीपणो जाइ, पण संसार मांहे आनन्दकारी न जाणै.ते माटै सम्यकति जीव पुद्गलानंदी कहिये, जेणै संसार ना पुद्गल नो आनन्दक ते २. केवल आत्मा नो आनंद रत्न त्रय धर्मैं वर्तैं ते माटे मुनि आत्मानंदी जाणवा३. इति भाव.

५८. हिवै सुगति कुगति नो अठावनमो प्रश्नः—ते शुभोपयोगै सुगति, अशुभोपयोगै कुगति. अशुभोपयोगै संसार थाइ,शुद्धोपयोगै मुक्ति थाइ.तेह नो हेतु,जे माटे शुभ प्रकृति नें उदयै. जीव नें शुभ योग थाइ, धर्म नो कारण शुभ क्रिया करै तेथी शुभ बांधै ते शुभ गति.

तथा अशुभ कर्म ना उदय अशुभ योगै थाइ. तेथी अशुभ क्रिया विषयादि सेवै, तेथी पाप प्रकृति बंधाइ, तेथी अशुभ गति. ते माटे पुण्य पाप ते योग नें आयतै, अने धर्म अधर्म ते उपयोग नें आयतै. तेह नो राग द्वेष मोह नें उदय अशुद्धोपयोगै तेज मिथ्यात्व अधर्म कहिये. तथा शुद्धोपयोग जे रत्न त्रय रूप जे परणति वीतराग भाव ते धर्म. ते बे उपयोगै. एटला माटे इम जाणवो. ए भाव जाणवो. इति.

५९.हिवै रोगाक्रान्तनुं गुणसाठमो प्रश्नः—जे रोगाक्रान्तनो अर्थ कहिये छै. घणा काल लगै रहै ते रोग कहिये. अने तत्काल सद्य प्राणघात करै ते आतंतक कहिये. इति भाव.

६०. हिवै बल वीर्य नो साठमो प्रश्नः—ते बल, वीर्य,नै पराक्रम नो अर्थ लिखिये छै.बल ते शरीर नो१, वीर्य ते अंतरंग आत्मा नो२.पराक्रम ते उदयानुसारी जाणवो३. ए भावार्थ सूत्रे इति.

६१. हिवै सम्यक्त, मिथ्यात्व नो इकसठमो प्रश्नः—सम्यक्त ते,जीवनी सत्ताइ द्रव्य तत्व रूप छै. ते जिवारे पोतानो समय पामी नें पडै तोही पिण मिथ्यात्व पर्याय द्रव्य गुण रूपै एकत्व पणै न प्रणमी सकै तेहनाथी,तो तिवारे ७०सीत्तर कोडाकोडी सागरोपम नी थिति बंधाती नथी. एटला माटै मिथ्यात्व ते पर्याय रूप प्रणमै छै. त्यारे एक कोडाकोडी सागर नी माठेरी बंधाय छै, ते भाव पोताना क्षयोपशम थी उपजै छै. पछै ज्ञानवंत बहुश्रुत कहै ते सत्य इति.

६२.हिवै पुद्गल ते कर्म छै,अनें जीव ते पिण कर्म छै ते शी रीते?ते बासठमो प्रश्नः—पुद्गल परमाणु विभाव रूपै प्रणमै तिवारे द्विणुकादि खंध कर्म नीपजै१. अने जीव पिण पोतानो स्वभाव मेली विभाव रूपै प्रणमै तिवारे कर्म रूप थईनें पुद्गल कर्म वर्गणा ग्रहै२.ते जीव जिवारे सम्यक्त पामै तिवारे जीव अकर्म रूप थयो. पुद्गलना कर्म पुद्गल प्रतया उदय प्रतियां रया, अने आत्म प्रतियां गया, ए भाव जाणवो.

६३. हिवै नव तत्व छै. ते चार प्रकारै छै. एक नव तत्व नी गाथा ते च्यार प्रकारै छै, तेनो अर्थ ते तिरसठमो प्रश्न कहै छै:—एक नामै नव तत्व १ बीजो गुण तत्व २ त्रीजो स्वरूपै लक्षणै ३ चौथो प्रणाम रूप नव तत्व जाणवो. ए च्यार प्रकारै नव तत्व छै तेहनो अर्थ—नामै नव तत्व (जीवाजीवा पुन्नं पावा) इत्यादिक ए नाम थी जाणवा १. बीजो गुणै, ते चेतना गुणै जीव ते किम? असंख्यात प्रदेशी अनंत गुणामय ते शुद्ध चेतना गुण, तथा वरणादि गुणवत अजीव में पांचे अजीव द्रव्य ना गुण जे रीते कह्या छै तिम जाणवा. तथा ऊर्द्ध गति इंद्रिय सुख नें आपे ते पुण्य नो गुण, अधोगति संक्लेश रूप ते पाप नो गुण, शुभाशुभ कर्म आगमन रूप ते आश्रव नो गुण. शुभाशुभ निरोध शुद्धोपयोगै रूपें संवर नो गुण, नोतन कर्म पूर्व कर्म सूं मिलै ते बंध गुण. शुभाशुभ रूप कर्म खंडन रूप ते निर्जरा गुण, आत्म प्रदेश थी कर्म जाये गुण. इम बीजो भेद २. तथा त्रीजे भेदे [illegible]

आपआपणौ स्वरूप जाणवा. ३ तथा चोथें भेदै प्रणाम रूप नव तत्व जीव तत्वे जीव नें जीव रूपें प्रणमै ते जीव तत्व.४ इम नवे तत्वै जीव नें आप आपणै रूपै प्रणमै. इम एक जीव तत्व इम एक नव तत्व नी गाथा. तथा अजीव ते जीवे आहारादि हेतु प्रणमै छै. पुण्य ते जीव नें इंद्रिय सुख नी साता रूप प्रणमै ते च्यार प्रकारै जाणवी.एणी रीते श्रावक ते जीवाजीव नें जाणै.एतलें जीव जाण नें संवर,निर्जरा,मोक्ष उपादेय कीधा. अने अजीव जाणनें पुण्य पाप बंध, आश्रवबंध एतला हेय कीधा.ए रीते श्रावक जीव अजीव ना जाण कहीइ. तथा नव तत्व च्यार प्रमाण साते नयै४ च्यार निक्षेपै द्रव्य भाव भेदे भली रीतै जाण्या छै जेणै ते श्रावक स्वसमय परसमय ना जाण कहिये. इति भाव.

६४. हिवै कर्त्तापणै कर्म, अने क्रिया तिहां ताईं बंध ते चौसठमो प्रश्नः— ते कर्त्ताइ कर्म अने क्रियाइ बंध ते किम ? जिहां जेहवो कर्त्ता,तिहां

तेहवा द्रव्य कर्म आवै. तथा जिहां जेहवा हेतु तिहां तेहवी क्रिया. ते क्रियाये शुभ अशुभ कर्म नो बंध नीपजै तथाचोक्तं ॥दोहा॥ कर्त्ता परिणामी दरब,करम रूप परिणाम। किरिया (क्रिया) परजय की फिरनी,वस्तु एक त्रय नाम॥ इति समय सार ग्रंथोक्तं.

हिवै जैन दर्शन ते उपयोगै तथा अक्रिय भावै छै. जैन दर्शन श्रद्धान ते शुद्धोपयोगै छै. ते शुद्ध उपयोग आत्म भावै छै, अक्रिय भावै छै. अने बीजा योगै क्रिया धर्म छै. इति भाव.

६५. द्रव्य संवर भाव संवरनो पैंसठमो प्रश्नः—तथा मन, बचन, काया ना योग प्रतियां जे कर्म छै ते, मुनी तप संयमै करी निर्जरै छंई. बीजा आवतां निरोध करै छै. तथा अशुद्ध उपयोग प्रतिया जे कर्म ते रत्नत्रय रूप आत्मिक धर्म प्रणमीनें सत्ता सोधें कर्म थी मुकाई छै. ए भाव. ते माटै मुनी, योग संवर आराधतां-उदयें कर्म निवारें, तथा उपयोग संवर आरा-

धतां कर्म नी सत्ता सोधै, सकल कर्म थी मुकाई छइ. इम द्रव्य संवर नें भाव संवर नो स्वरूप जाणवो. इति.

६६. दर्शन तेथी जे देखवो ते शी रीते छै ते छांसठमो प्रश्नः—दर्शनते जे देखवो कहै छै तेहनो अर्थ यथा श्रुत लिखिये छै. छद्मस्त सम्यक् दृष्टी प्रत्यक्ष स्वरूप किम देखै ? इति प्रश्न. तत्रोत्तरं. परोक्ष प्रत्यक्ष अनुभव गोचर अनुमान प्रमाण प्रतीते प्रत्यक्ष देखै. ते किम ? पोताना परिणाम शुभाशुभ कर्म रूप राग द्वेष द्वारै, बुद्धि पूर्वक ते परिणाम पोता ना देखै. ते परिणाम जीव द्रव्य थी ऊठै छै. श्या माटै ? ते जीव परिणामी द्रव्य छै, तेहना संगी जीव नें बुद्धि पूर्वक परिणाम दीठो. एणें अनुमानै आत्मा दीठो. किम् ? यथा—सूर्य बादल मांहि उग्यो छै, मेघ नी घटा घणी छै, तोही पण प्रकाश सूर्य नो छै ते अनुमान दिवस कहिये—सूर्य दीठो कहिये. इण दृष्टांते. तथा धूम्र दीठें अग्नि दीठी कहिये. इम जिन वचन नी प्रतीतै, परोक्ष प्रत्यक्ष आत्मा सम्यक् दृष्टी वीतराग वचन नी प्रतीते

यथार्थ देखै छै तेहनी शुचि प्रतीत नी श्रद्धा छै. इम यथार्थ जाणे ते सम्यक् ज्ञान. तथा जेहवो दीठो निज स्वरूप एकांते, जेहवो वस्तु रूपै जीव द्रव्य निकलंक जाण्यो तेहवो राग द्वेष विकल्प रहित प्रणमै ते स्वरूपाचरण चारित्र. तथा गाथा—(पुइयाइ सुवसहियं पुनं जिणेन दीठं। मोह कोहा विहिणो परिणामो अपणो धम्मो ॥ १ ॥) ए स्वरूप चौथै गुण स्थानै होई जेहनें आत्म बोध थाशे. तथा प्रभु मार्ग ना अपहसा ते मानसे एहवो हमें धार्यो छै तेहवु शास्त्र प्रमाणै लिख्यूं छै. ए मांहि ए कांई जिन वचन थी विरूद्ध होइ ते श्रीसंघ साथे मिच्छामि दुक्कडं.

६७. हिवै निर्जरा नूं स्वरूप किंचित् लिख्यते. ते सणठमो प्रश्नः—ते निर्जरा कर्म नो साटन करै ते मध्ये मिथ्यात्वी नें आश्रव बन्ध पूर्वक निर्जरा होई, सम्यक् दृष्टी नें संवर पूर्वक द्रव्य भाव निर्जरा होई. ज्ञान शक्ति वैराग्य बलै करी नें. तिहां ज्ञान शक्ति तें शुद्ध स्वरूप नो अनुभव अने वैराग्य बलै करी

अशुद्धोपयोग नो मिटाविवो. तिहां ज्ञानोपयोगे भाव निर्जरा. ते किम ? जिहां राग द्वेष मोह प्रणमित नुं घटाडवो तिहां भाव निर्ज़रा. अने द्रव्य निर्जरा ते कर्म वर्गणानो घटाडवो. जे उदय आवे ते निर्जरे तेहवा पाछा बंधाइ नहीं. बंध अल्प अने निर्जरा घणी इम ज्ञान शक्ति वैराग्य बलै सम्यक् दृष्टी द्रव्य भाव निर्जरा करै छै. मिथ्यात्वी कर्म निर्जरा करै पण ते निर्जरा थी बंधाई. घणा मार्गानुसार नें पण कर्म निर्जरा पणै बांधै अल्प. पण वस्तु थकी सत्ता निर्जरा ते सम्यक् दृष्टी नें होई. ए भाव.

६८. हिवै जीव नुं गुण पर्यायनो अड़सठमो प्रश्नः— ते हिवै आत्मा ना असंख्यात प्रदेश छै. एकेक प्रदेशै अनंती शक्ति नै अनंतु ज्ञान छै. तथा एकेक प्रदेशै अनंत पर्याय छै. इम द्रव्य गुण पर्याय नुं थापवो जाणवो ते स्यादवाद मार्गै.

६९. हिवै द्रव्य नी शक्ति गुण शक्ति किहां छै ते

गुणंतरमो प्रश्नः—ते हिवै द्रव्य नी शक्ति, गुण नो प्रकाश,पर्याय नो ठरण, एतला वस्तु लीधै आत्म द्रव्य छै. ते सम्यक् दर्शन थी द्रव्य शक्ति प्रगटै. सम्यक् ज्ञान गुण थी प्रकाश थाइ. सम्यक् चारित्रै परिणाम ठरण गुण वधे. ए भाव.

७०. जीव नें उपयोग केतला छै ते सित्तरमो प्रश्नः—ते जीव नें उपयोग बे—एक शुद्ध १ बीजो अशुद्ध २ ते मध्ये शुद्ध मांहि कोई भेद नथी.अशुद्धोपयोग ना बे भेद—एक शुभ १ बीजो अशुभ २. तिहां शुभोपयोगै वर्त्तै (ते जीव) पुण्य उपार्जै, ते थी सुगति पामै. तथा अशुभोपयोगै वर्त्तै ते जीव दुःख रूप कुगति पामै. तथा शुद्धोपयोगै वर्त्ततो ते जीव सिद्ध गति पामै.

७१. हिवै इकोत्तरमो प्रश्न—ते हिवै शुद्धोपयोग ते सम्यक्त पाम्या पछी होई अने अशुद्धोपयोग ना घर ना सर्वे संसारी मिथ्या दृष्टी जीव नें होइ. ते मध्ये मिथ्या दृष्टी नें शुभ क्रिया होइ पिण, शुभोपयोगै नहीं. शुभोपयोग तो शुद्ध ना घर नो छै ते अणइच्छक रूपै

प्रत्यक्ष ते चुमोत्तरमो प्रश्न कहै छैः—जिहां द्रव्य गुण पर्याय एकीभूत अभेद रत्नत्रय रूप मुनि प्रणमै जिहां, तिहां स्वरूप निज पद कंद प्रत्यक्ष देखै. इम ४ च्यार प्रकार सम्यक् दृष्टी आत्म स्वरूप देखै.

"छउमच्छाणं देसण पूर्व नाणं" इति सूत्रे उक्तं. यथा छद्मस्त ने आगल थी देखवो, पछै जाणवो, दर्शन ते सामान्यावबोध छै १. झात्कार रूप भास थाइ थोडो काल रही पछै ज्ञान मांहे भिलें ते ज्ञान विशेषावबोध छै २. घणा काल रहै ते माटै, यथा गाथा "आत्म दर्शन जेणें कर्यो छै, तेणें मुध्यो भव भय कूपरे," इम यसविजय जी ये पण कह्यो छै. यथा "प्रवचन अंजण जो सदगुरु करै, तो देखै परम निधान जिणेसर" एहवो लाभानंदजी यें पिण कह्यूछै. ए रीते सम्यक् दृष्टी आत्म स्वरूपैं देखें पण साक्षात् करामलकवत असंख्यात प्रदेशी आत्मा अरूपी ते केवल दर्शन थई देखै. पण सम्यक् दृष्टी ते प्रतीतें अनुमान अनुभवै स्वरूपै देखै. इम कहे ए जिन वचननी प्रतीतें द्रव्यनुं स्वरूप दीठो. अनुमानै ते चेतना

लक्षण जे गुण प्रत्यक्ष दीठो, अनुभवे ते प्रणलक्ष पर्याय रूपै दीठो, स्वरूपै ते अभेद रत्नत्रयात्मक निज पद कंद दीठो. ए रीतें आत्म स्वरूप नो छद्मस्त सम्यक् दृष्टी नें देखवो कहिये छै. अमारै चिंते तो शास्त्रोक्त रीतें पोतानी बुद्धि मांहे एहवो भासै छै. ते केवली वदें ते सत्य. जे कोई प्राणी सम्यक्त दृष्टी नें आत्म दर्श नथी मानता, श्रद्धा भासन मानै छै ते ऊपर एटली चर्चा लिखी छै. ए मांही जे कोई जिन वचन विरुद्ध स्वमत कल्पित होइ तो मिच्छामि दुक्कडं.

७५. जोग ३ तीन ते साधु नें छै, रत्नत्रय रूपे प्रणमै छै ते किम ? ते पिच्योत्तरमो प्रश्न कहै छैः— मनयोग तो दर्शन श्रद्धान रूपें छै, जे वस्तु ना निर्द्धार थी चलै नहीं १. तथा वचनयोग तो ज्ञान भणवो, यथार्थ उपदेश सत्य प्ररूपणा ज्ञान रूपै प्रणमै छै २. तथा काययोग तो षट् काय नी दया रूपै प्रवर्त्तै छै ३. (जयं चरे जयं चिठे) इत्यादि. इम मुनि ना ३ तीन योग ते रत्न त्रय रूप प्रणम्या छै.

प्रत्यक्ष ते चुमोत्तरमो प्रश्न कहै छैः—जिहां द्रव्य गुण पर्याय एकीभुत अभेद रत्नत्रय रूप मुनि प्रणमै जिहां, तिहां स्वरूप निज पद कंद प्रत्यक्ष देखै. इम ४ च्यार प्रकार सम्यक् दृष्टी आत्म स्वरूप देखै.

"छउमच्छाणं देसण पूर्व नाणं" इति सूत्रे उक्तं. यथा छद्मस्त ने आगल थी देखवो, पछै जाणवो,दर्शन ते सामान्यावबोध छै १. झात्वार रूप भास थाइ थोडो काल रही पछै ज्ञान मांहे भिलें ते ज्ञान विशेषावबोध छै २.घणा काल रहै ते माटै,यथा गाथा "आत्म दर्शन जेणें कर्‍यो छै,तेणें मुध्यो भव भय कूपरे, "इम यसविजय जी ये पण कह्यो छै. यथा"प्रवचन अंजण जो सदगुरु करै,तो देखै परम निधान जिणेसर"एहवो लाभानंदजी यें पिण कह्यूछै. ए रीते सम्यक् दृष्टी आत्म स्वरूपैं देखें पण साक्षात् करामलकवत असंख्यात प्रदेशी आत्मा अरूपी ते केवल दर्शन थई देखै. पण सम्यक् दृष्टी ते प्रतीतें अनुमान अनुभवै स्वरूपै देखै. इम कहे ए जिन ^ प्रतीतें द्रव्यनुं स्वरूप दीठो. अनुमानै ते चेतना

लक्षण जे गुण प्रत्यक्ष दीठो, अनुभवे ते प्रणमन पर्याय रूपे दीठो, स्वरूपै ते अभेद रत्नत्रयात्मक निज पद कंद दीठो. ए रीतें आत्म स्वरूप नो छद्मस्त सम्यक् दृष्टी नें देखवो कहिये छै. अमारै चिते तो शास्त्रोक्त रीतें पोतानी बुद्धि मांहे एहवो भासै छै. ते केवली वदें ते सत्य. जे कोई प्राणी सम्यक्त दृष्टी नें आत्म दर्श नथी मानता, श्रद्धा भासन मानै छै ते ऊपर एटली चर्चा लिखी छै. ए मांही जे कोई जिन वचन विरुद्ध स्वमत कल्पित होइ तो मिच्छामिं दुक्कडं.

७५. जोग ३ तीन ते साधु नें छै, रत्नत्रय रूपे प्रणमै छै ते किम ? ते षिच्योत्तरमो प्रश्न कहे छै:— मनयोग तो दर्शन श्रद्धान रूपें छै, जे वस्तु ना निर्द्धार थी चलै नहीं १. तथा वचनयोग तो ज्ञान भणवो, यथार्थ उपदेश सत्य प्ररूपणा ज्ञान रूपै प्रणमै छै २. तथा काययोग तो षट् काय नी दया रूपै प्रवर्त्तै छै ३. (जयं चरे जयं चिठे) इत्यादि. इम मुनि ना ३ तीन योग ते रत्न त्रय रूप प्रणम्या छै.

प्रत्यक्ष ते चुमोत्तरमो प्रश्न कहै छैः—जिहां द्रव्य गुण पर्याय एकीभूत अभेद रत्नत्रय रूप मुनि प्रणमै जिहां, तिहां स्वरूप निज पद कंद प्रत्यक्ष देखै. इम ४ च्यार प्रकार सम्यक् दृष्टी आत्म स्वरूप देखै.

"छउमच्छाणं देसण पूर्व नाणं" इति सूत्रे उक्तं. यथा छद्मस्त ने आगल थी देखवो, पछै जाणवो,दर्शन ते सामान्यावबोध है १. झात्वार रूप भास थाइ थोडो काल रही पछै ज्ञान मांहे भिलें ते ज्ञान विशेषाव-बोध छै २.घणा काल रहै ते माटै,यथा गाथा "आत्म दर्शन जेणें कर्यो छै,ते णें मुंध्यो भव भय कूपरे," इम यसविजय जी ये पण कह्यो छै. यथा "प्रवचन अंजण जो सदगुरु करै,तो देखै परम निधान जिणेसर" एहवो लाभानंदजी यें पिण कह्यूछै. ए रीते सम्यक् दृष्टी आत्म स्वरूपैं देखें पण साक्षात् करामलकवत असंख्यात प्रदेशी आत्मा अरूपी ते केवल दर्शन थई देखै. पण सम्यक् दृष्टी ते प्रतीतें अनुमान अनुभवै स्वरूपै देखै. इम कहे ए जिन वचननी प्रतीतें द्रव्यनुं स्वरूप दीठो. अनुमानै ते चेतना

लक्षण जे गुण प्रत्यक्ष दीठो, अनुभवे ते प्रणमन पर्याय रूपै दीठो, स्वरूपै ते अभेद रत्नत्रयात्मक निज पद कंद दीठो. ए रीतें आत्म स्वरूप नो छद्मस्त सम्यक् दृष्टी नें देखवो कहिये छै. अमारै चिंते तो शास्त्रोक्त रीतें पोतानी बुद्धि मांहे एहवो भासै छै. ते केवली वदें ते सत्य. जे कोई प्राणी सम्यक्त दृष्टी नें आत्म दर्शी नथी मानता, श्रद्धा भासन मानै छै ते ऊपर एटली चर्चा लिखी छै. ए मांही जे कोई जिन वचन विरुद्ध स्वमत कल्पित होइ तो मिच्छामि दुक्कडं.

७५. जोग ३ तीन ते साधु नें छै, रत्नत्रय रूपे प्रणमै छै ते किम ? ते पिच्योत्तरमो प्रश्न कहै छै:— मनयोग तो दर्शन श्रद्धान रूपें छै, जे वस्तु ना निर्द्धार थी चलै नहीं १. तथा वचनयोग तो ज्ञान भणवो, यथार्थ उपदेश सत्य प्ररूपणा ज्ञान रूपै प्रणमै छै २. तथा काययोग तो षट् काय नी दया रूपै प्रवर्त्तै छै ३. (जयं चरे जयं चिठे) इत्यादि. इम मुनि ना ३ तीन योग ते रत्न त्रय रूप प्रणम्या छै.

तथा ए रत्नत्रय धर्म थी जन्म जरा मरण ना भय टालै छै, ते किम ? सम्यक् दर्शन थी घणा जन्म मिटाव्या, सम्यक् ज्ञान थी जरा दुःख जे वेदना ते मिटावी. तथा सम्यक् चारित्र गुणै मरण भय टलै. इम ३ तीन गुणे जन्म जरा मरण भय मिटै. ए भाव.

७६. हिवै प्रमाण४ चार ते जीव नें किम भोग पडै ते छिहोत्तरमो प्रश्नः— तथा ते प्रमाण च्यार जे रीते आत्मा नें भोग पड़े छै तेहनी विगत लिखिये छै. प्रथम तो आगम प्रमाणै षट् द्रव्य षट काय ना स्वरूपै जे वीतरागै भाष्या वचन प्रमाणै तहकीक करी मानवा, इहां संदेह तथा युक्तायुक्त न करवी. इम जीवाजीव ना स्वरूप आगम प्रमाणै प्रमाण तहत करी मानवा.ते मानता आत्मा नें प्रतीते सम्यक् धर्म नी पुष्टि थाई१. बीजुं अनुमान प्रमाणै लक्ष्य लक्षणे निरधार थाई. यथा धूम दीठो अग्नि नो निर्द्धार थयो, तिम चेतना लक्षण अनुमानै करी लक्ष्य जो आत्मा तेह नो निर्द्धार थयो. इहां आत्मा नें वस्तुगते अनुभवीनें वस्तु ना गुण गुणी

नो अंशे प्रत्यक्ष थाइ २. हिवै त्रीजो उपमा प्रमाण. तिहां वस्तु ना अंश धर्मनें परिपूर्ण पदवी नी उपमा केहवी, जिम आज नें कालै सम्यक्त पाम्यो ते जाणी ई केवल पाम्यों, यथोक्तं समुद्रवत्, इम ओपमा प्रमाण कहीइं. इम मानता आत्मा नें विनय गुण नी पुष्टी थाई ३. चोथो प्रत्यक्ष प्रमाण. जेहवो जिनेश्वरें कह्यो तेहवो इहां पुण्य पाप ना फल प्रत्यक्ष देखिये छै ते प्रत्यक्ष प्रमाणै छै. इम मानता आत्मा नें भव वैरागता गुणनी पुष्टि थाइ, विषय कषाय थकी निवर्त्तै ४. एवी रीते ४ च्यार प्रमाणे आत्मा नें गुण नीपजै. ए भाव.

७७. हिवै तीन कर्म नो सित्योत्तरमो प्रश्नः—ते कर्म ३ कह्या. एक तो द्रव्य कर्म ते आठै कर्म नी वर्गणा रूप छै १. तथा भावतै अशुद्धोपयोगें विभाव रूप ते भाव कर्म २. तथा नोकर्म ते उदारिकादि पांच शरीर द्रव्य कर्म नें समीपे रंया माटै शरीर नें पण नोकर्म कहिये ३. तथा तीन जाति ना कर्म रोग छै. तेह ना वैद्य जिनराज तथा गणधरादिक मुनि छै. तेहनी

पण ३ तीन प्रकार नी देसना आपै छै. यथार्थ वाद १ विधि वाद २ चारितानुवाद ३ ए तीन प्रकार नी देसना नें मध्ये यथार्थ वाद देसना जीव अजीव नां स्वरूप धारया, प्रणम्यां थकी वस्तु तत्वनो प्रकाश थाइ तिणै भाव कर्म रोग मिटै १. तथा विधि वाद देसना महा वृत देस विरत ते रूप क्रिया शुभोपयोगै आचरतो द्रव्य कर्म रोग मिटै, कर्म नो काट उतरै २. तथा चरितानुवाद देसना थी शरीर संबंधी काम भोग विषय कषाय थी निवर्ती जिम जंबू स्वामी प्रमुख महा मुनि एहूना चरित्र भवै वैराग्य ना गुण प्रगटै, तेह थी नोकर्म नो रोग मिटै ३. इम तीन प्रकारनी देसना ते तीन प्रकार ना कर्म रोग मिटाववाना कारण. ए भाव.

७८. हिवै दर्शन, ज्ञान, चारित्र, वीर्य गुण ते कुण हेतु पमाड़े ते अठ्योत्तरमो प्रश्न कहै छैः—धर्म सांभलवो अभ्यास उद्यम एटली जेहनी रुचि होई ते सम्यक् दर्शन गुण नें पमाड़े. तथा तत्वातत्वगवेषणा बुद्धि होय ते सम्यक् ज्ञान गुण नें पमाड़े. तथा पांच

इंद्रिय ना विषय, ४ च्यार कषाय, पांच प्रमाद, तेहना त्याग बुद्धि होइ ते चारित्र गुण नें पमाड़े. तथा वस्तु गतैं अनुभव लग्न तल्लय(तल्लीन)होय ते वीर्य गुण नें पमाड़ै. इम गुण ४च्यार ना हेतु धारवा. तथा एहीज गुण शरीर मध्ये जिहायै मुख्य तांई होय छै ते स्थानिक कहिये. दर्शन ते चक्षु, ज्ञान ते हृदय, चारित्र ते चरणे, तथा उछाह इच्छा वीर्य पाद होइ. एम ४ च्यार गुण स्थानिक समझ लेजो. ए भाव.

७९. हिवै हिंसा ना केतला भेद छै ते गुणयासीमो प्रश्नः—ते हिंसा केतली प्रकार नी छै तेहना भेद लिखिये छै. स्वरूप हिंसा १ अनुबंध हिंसा २द्रव्य हिंसा ३ भाव हिंसा ४ बाह्य हिंसा ५ परणाम हिंसा ६ जोग हिंसा ७ इत्यादिक घणा भेद छै ते मध्ये कांईक नो अर्थ लिखिये छै. स्वरूप हिंसा ते साधु नें, तथा नदी उतरै छै पण मुख्य वर्त्ता हिंसाना परणाम नथी. तथा सम्यक् दृष्टी नें देवपूजा गुरुवंदणा साधुनें आहार आपै तिहां इत्यादि कार्य स्वरूप हिंसासारखी दीसै छै,

पण अल्प बंध रूप छै, ते माटे स्वरूप हिंसा कहिये १. बीजी अनुबंध हिंसा ते राग द्वेष सहित जे प्रणमीनें जे कोई मंदबुद्धि प्राणी छः कायना जीव नें हणै तेहवा तरतम अध्यवसाय महा कर्म ना बंध करै. तेहना अशुभ विपाकै उदय आवै ते अनुबंध हिंसा कहीइ २. वली एह ना भेद मध्ये द्रव्य हिंसा आवै तेह नो किंचित् अर्थ लिखिये छै. द्रव्य हिंसा अणा उपयोगै ३. भाव हिंसा तीब्र प्रणामै होई ४. बाह्यहिंसा ५ तथा योग हिंसा ६ तथा एटली स्वरूप हिंसा मांहि भिलै. तथा प्रणाम हिंसा ७ ते भाव हिंसा मांहि भिलै. इत्यादिक समझ लीजो. तथा एकही जीव नें हिंसा अल्प पण फल कालै दुःख विशेष पामै तेणै करी श्रद्धान विपरीत पणे दुःख घणो पामशे, जमाली नी परें. तथा एक जीव ते हिंसा घणी करै छै, पण फल कालै अल्प दुःख पामै ते शेणैं, दुष्टाध्यवसाय नें अभावै. उदय आव्यां ते निःफल करै दृढ प्रहारनी परै. इत्यादि चौभंगीओ अहिंसा अष्टक ग्रंथ मध्ये विस्तारै कह्यूं ते तथा (एकस्याल्प-

हिंसा ददाति काले तथा फलमनल्पं । अन्यस्य महा हिंसा स्वल्प फला भवाति परिपाके ॥ १ ॥) इत्यादि ८ गाथा छै तिहां थी जोज्यो. इति. श्री हरिभद्रसूरी कृत हिंसाष्टक मध्ये छै.

८०. हिवै शास्त्र मध्ये ३ तीन योग कह्या छै ते असीमो प्रश्नः—इच्छा योग १ शास्त्र योग २ सामर्थ्य योग ३.ते मध्ये इच्छा योग ते दस प्रकारें यती धर्म कह्या ते आदर वानी इच्छा १.शास्त्रयोग ते शास्त्रे जे, हेय, ज्ञेय, उपादेय, तीन प्रकार कह्या छै ते मध्ये कह्यूं छै—जे उपादेय वस्तु कही ते आदरै ते बीजो योग २. तिवार पछी त्रीजो सामर्थ्य योग ते कोई आत्मा ज्ञानै वैराग्य बल नी समर्थ ताइ करीनें अनन्त काल भोगववा योग जे कर्म ते थोड़ा काल मध्ये क्षय करै. यथा गज सुकुमाल नी परै ३. योग नो व्याख्यान योगदृष्टी समुच्चय ग्रन्थ मध्ये कह्युं छै ते थी जाणवो. इति.

८१. हिवै द्रव्य, गुण, पर्याय जे विकारै विगड्या

छै ते कहै छै ते इक्यासीमो प्रश्नः—द्रव्य विकार थयो ते कर्म प्रकृति आवरणै १.गुण विकार ते राग द्वेष विभावनाई २.पर्याय विकार थयो ते मनोयोग कल्पनाइ ३. ए भाव.

८२.हिवै मति श्रुत ज्ञानी तथा अज्ञानी जिन वाणी सांभले ते शी रीते प्रणमै ते बियासीमो प्रश्नः—मति अज्ञानी जे जिनवाणी सांभलै ते विकल्प रूपै तथा डामाडोलपणै प्रणमै तथा मति ज्ञानी जे जिनवाणी सांभलै ते निर्विकल्पपणै तथा निरधारता रूपै प्रणमै. तथा श्रुत अज्ञानी जे जिनवाणी सांभलै ते विषय रूप तथा नास्तिक रूप प्रणमै. तथा श्रुत ज्ञानी जे जिनवाणी सांभलै ते वैराग्य रूपै तथा आस्तिकपणै प्रणमै. एटले सम्यक् दृष्टी ते जिनवाणी सांभलवाना अधिकारी जाणवा. ए भाव.

८३. हिवै जीव कर्म सुं किम मिल्यो छै ? ते त्रियासीमो प्रश्नः—ते द्रव्यार्थिक नयै आत्मा कर्म

सु तुंबडी ऊपरे माटीना पड होई तिम तुंबी मृत्तिका नी परे मिल्यो छै. एह ना प्रदेश मांहि कोई कर्म-वर्गणा एकी भाव नथी थई. तथा पर्यायार्थिक नयै आत्मा कर्म सु क्षिरनीर नि परै एकरूपै लौलीभूत थयो. तिहां चतुर्गति भ्रमण करै छै. ए भाव.

८४. हिवै पांच इंद्रिय नी सोल संज्ञा होई ते चौरासीमो प्रश्न लिखिये छैः—आहार संज्ञा १ भय संज्ञा २ मैथुन संज्ञा३ परिग्रह संज्ञा ४ क्रोध संज्ञा ५ मान संज्ञा ६माया संज्ञा७ लोभ संज्ञा ८ सुख संज्ञा ९ दुःख संज्ञा१० मोह संज्ञा ११ वीत गच्छा संज्ञा १२ शोक संज्ञा १३ धर्म संज्ञा १४ ओघ संज्ञा १५ लोक संज्ञा १६ ए मांहिली पहली १० संज्ञा ते एकेंद्री नें, बीजी संज्ञा बेंद्रियादिक नें १५ पंदर होइ. अने १६ संज्ञा पंचेंद्री सम्यक् दृष्टी नें होइ. ए भाव.

८५. हिवै सोले संज्ञा जीव केह नें होइ ते पिचासीमो प्रश्नः— केतलाइ दोष जेह नें मुख्यताई

करै छै, तिणै करि जीव कषाय छै४. ए ४ च्यार संज्ञा मध्ये एक पहली वेदनी कर्म ना घर मांहेनी छै. अने ३ तीन संज्ञा पाछली ते मोहनी कर्म मांहेली छै. तथा आहार संज्ञाइ शरीर परीरै हिंसा इम आहार संज्ञाइ हिंसा ना कर्म घणा बंधाइ तेह थी असाात वेदनी पूर पामै छै. तथा भय संज्ञाइ कल्पना नां कर्म नो योगै व्यक्ताव्यक्तरूप कर्म बंधाइ छै, तथा मैथुन संज्ञाइ पंचेंद्री ना विषय ना कर्म घणा, तथा परिग्रह संज्ञाइं कषाय ना कर्म तीव्र बंधाइ छै. इम ४ च्यार तीव्र भावै जे जीव नें प्रवर्त्तैं ते अधोगति जाइ—संसार मध्ये जन्म मरण घणा करै. ए भाव.

तथा वली ए ४ च्यार संज्ञा बीजी प्रकारे कहै छै. आहार शरीर थी हिंसा ते हिंसाइ, दुःख ते दुःखै. आरत ध्यान ते आरत ध्यानै अनन्ता संसार वधे एटले आहार संज्ञा मांहि अनंतो संसार छै. तथा भय संज्ञाइ कल्पना घणी वधै. कल्पनाइ करी जीवनें राग द्वेष-परणाति वधै. तेणै करी आठ कर्म निबड बांधे. तथी४

च्यार गाति मध्ये गमनागमन करै. तथा मैथुन संज्ञाइ विषय सेवै ते पोताना रत्नत्रय गुणनें आवरे,ते जीव आत्मा कर्म नें, ए ४ च्यार गाति मांहे असाता पामै. तथा परिग्रह संज्ञाइं करी कषाय नो कर्म घणो बांधै,तेणे करी संसार नी प्राप्ति घणी थाइ. एणै रीते ४ च्यार संज्ञाइ करी जीव संसार मांहे दुःख पामै छै. ए ४ च्यार संज्ञा मध्ये साधूजीइ बे २ संज्ञा तो छठै सातमै गुण स्थाने घटाडी. तथा त्रीजी संज्ञा तो नवमै गुण स्थाने गई. अने चौथी संज्ञा दसमै गुण स्थाने गई. ए ४ च्यार संज्ञानो भावार्थ जाणवो. अनादि निगोद थी जे ऊंचो व्यवहार रासी तथा पंचेंद्रीपणा सुधी पामै छै ते ए ४ च्यार संज्ञा नी मंदताई. तथा ए ४ च्यार नी तीव्रताई पाछो अधोगाति जाई छै. तथा जीव नें ज्ञान चारित्र बे गुण छै, तथा दर्शन गुण ते ज्ञान गुण मध्ये अंतर्भूत थाइ छै. सामान्यावबोध माटै ते मध्ये ज्ञान गुण नें मते छै. अने चारित्र गुण उपादान रूप छै ते माटे ए उपादान गुण नु ४ च्यार संज्ञानी मंदताइ जीव ऊंचो

करै छै, तिणै करि जीव कषाय छै४. ए ४च्यार संज्ञा मध्ये एक पहली वेदनी कर्म ना घर मांहेनी छै. अने ३तीन संज्ञा पाछली ते मोहनी कर्म मांहेली छै. तथा आहार संज्ञाइ शरीर परीरै हिंसा इम आहार संज्ञाइ हिंसा ना कर्म घणा बंधाइ तेह थी असाात वेदनी पूर पामै छै. तथा भय संज्ञाइ कल्पना नां कर्म नो योगै व्यक्ताव्यक्तरूप कर्म बंधाइ छै, तथा मैथुन संज्ञाइ पंचेंद्री ना विषय ना कर्म घणा, तथा परिग्रह संज्ञाइं कषाय ना कर्म तीव्र बंधाइ छै. इम ४च्यार तीव्र भावै जे जीव नें प्रकर्त्तै ते अधोगति जाइ——संसार मध्ये जन्म मरण घणा करै. ए भाव.

तथा वली ए ४च्यार संज्ञा बीजी प्रकारे कहै छै. आहार शरीर थी हिंसा ते हिंसाइ, दुःख ते दुःखै. आरत ध्यान ते आरत ध्यानै अनन्ता संसार वधै एटले आहार संज्ञा मांहि अनंतो संसार छै. तथा भय संज्ञाइ कल्पना घणी वधै. कल्पनाइ करी जीवनें राग द्वेष-परणाति वधै. तेणै करी आठ कर्म निवड बांधै. तथी४

च्यार गति मध्ये गमनागमन करै. तथा मैथुन संज्ञाइ विषय सेवै ते पोताना रत्नत्रय गुणनें आवरे,ते जीव आत्मा कर्म नें, ए ४ च्यार गति मांहे असाता पामे. तथा परिग्रह संज्ञाइं करी कषाय नो कर्म घणो बांधे,तेणे करी संसार नी प्राप्ति घणी थाइ. एणें रीतें ४ च्यार संज्ञाइ करी जीव संसार मांहे दुःख पामे छै. ए ४ च्यार संज्ञा मध्ये साधूजीइ बे २ संज्ञा तो छठे सातमे गुण स्थाने घटाडी. तथा त्रीजी संज्ञा तो नवमै गुण स्थाने गई. अने चौथी संज्ञा दसमै गुण स्थाने गई. ए ४ च्यार संज्ञानो भावार्थ जाणवो. अनादि निगोद थी जे ऊंचो व्यवहार रासी तथा पंचेंद्रीपणा सुधी पामे छै ते ए ४ च्यार संज्ञा नी मंदताई. तथा ए ४ च्यार नी तीव्रताई पाछो अधोगति जाई छै. तथा जीव नें ज्ञान चारित्र बे गुण छै, तथा दर्शन गुण ते ज्ञान गुण मध्ये अंतर्भूत थाइ छै. सामान्यावबोध माटे ते मध्ये ज्ञान गुण नें मते छै. अने चारित्र गुण उपादान रूप छै ते माटे ए उपादान गुण नु ४ च्यार संज्ञानी मंदताइ जीव ऊंचो

आवै छै. ए भाव.

१०. हिवै सिद्ध ना जीव नें अनंता गुण छै ते सम रूपै छै कि विषम ते नेउमो प्रश्नः— तत्रोत्तरं—निरावर्ण आसरी सम गुण छै, पण आप आपणा गुण ना पर्याय धर्म आसरी विषम रूपै छै. ए भाव.

११. सिद्ध नें जीव कहिये ते कुण हेतु ते इकाणुमो प्रश्नः— जीव तो प्राणै वते जीवै ते जीव, ते सिद्ध नें तो प्राण नथी. ते माटे सूत्र मध्ये (सिद्धा जीवा) कह्युं ते केम घटै ? तत्रोत्तरं—सिद्ध नें द्रव्य प्राण नथी. सिद्ध ते भाव प्राणै जीवै छै. ते माटे (सिद्धा जीवा) कहिये ते भाव प्राणी कह्या. अनंत ज्ञान प्राण, १ अनन्त दर्शन प्राण २ अनन्त सुख प्राण ३ अनन्त वीर्य प्राण ४ ए च्यार भावै प्राणी जीवे छै. ते माटे सिद्ध नें जीव कहिये. ए भाव प्राण आवरणें द्रव्य प्राण ते कर्म जनित कहिये ते किम ? स्वभाविक दर्शन प्राण नें आवरणे इंद्री प्राण नीपना. स्वभाविक ज्ञान प्राण आवरणे स्वासोस्वास प्राण नीपजै. स्वाभाविक

सुख प्राण नें आवरणे आउ (आयु) प्राण नीपन्यो. स्वभाविक अनंत बल वीर्य प्राण नें आवरणे मनोबल, वचन बल, काय बल, ए विभाविक प्राण नीपन्या. ए अधिकार अध्यात्मसार मध्ये कह्युं छे ए अर्थ. इति.

९२. हिवै आठ कर्म मध्ये लेश्यां किहा कर्म मध्ये छै ते वाणुमो प्रश्नः— ते लेश्या योग प्रत्यई छै अने योग ते नाम कर्म मध्ये छै.ते माटे लेश्या नाम कर्म मांहे कहै. ए भाव.

९३. हिवै वीस विहरमान जिन नूं त्र्यांणुंमो प्रश्नः—ते विहरमान तीर्थंकर वर्त्तमान केवल ज्ञान-पणै विचरै छै. तिहां केई बालक पणै,कोई राजावस्थाये होय. जिवारे जघन्य काले अढी द्वीप मांहि १६० एकसो साठ विजे मांहि केतलाइक तीर्थंकर होइ. १६८० एक हजार छःसौ अस्सी तीर्थंकर होइ ते किम?जघन्य काले वीस विहारमान छै ते एकेको तीर्थंकर एक लक्ष पूर्वनो थाइ तिवारें बीजो तीर्थंकर नो जन्म थाइ तथा गर्भ

मांहि होइ. इम ८४ चौरासी लाख पूर्व नो आउखो. ते मध्ये ८३ तिरयासी तीर्थंकर थाइ. इम ते ८३ नें बीस गुणा करे तिवारे १६६० एक हजार छःसौ साठ थाइ. वीस वधता मांहि भेलाइ तिवारे १६८० एक हजार छअसो अस्मी. तीर्थंकर उत्कृष्टे कालै १७० एक सो सीतर तीर्थंकर वर्त्तता केवलपणे विचरै छै. तिवारे एकेक ना अवतार मांहे ८३ तीरयासी तीर्थंकर ऊपने ते १६० एकसौ साठ गुणा कीजे तिवारें १३३४० तेरा हजार तीन सो चालीस थाइ. अने १७० एकसो सीतर वर्त्तता ते मांहि भेलाइ तिवारे १३५१० तेरा हजार पान सो दस एतला होइ. एतलुं आंच गच्छ नायके कह्यूं छै पिण अक्षर दीठे प्रमाण दीठो करिये ते कहै छै. जे विशेषाविशेषके कह्यूं छै, जिम सांभल्युं तिम लिख्युं छै, पछैं तो जिम केवल ज्ञानी प्रकाश्यो ते सत्य.—— (सत्तरिसय सुक्कोसिजं नयं। विस विहरमान जिना। समय खित्ते दसवा। जंम्पई वीसदस गंवा ॥ १ ॥

॥ दूहा ॥

विवरो ए गाथा तणो, केवलियो संभाल ।
सित्तरसौ जिनवर होई, कहै केई काल ॥ १ ॥
चढतो काल ओसरपेणी, वारे आठम जिन ।
एकसो सित्तर १७० जिनवर हुवै, इण परि सुणो सजन ॥२॥
पांच विदेह मेलवी, साठसौ विजे उपन ।
भरतइरवत दस मिलै, सित्तर सौ होइ जिन ॥ ३ ॥
पडते काले अवसर्पणी, सोलम जिन लगें हुंत ।
भरता रेवत जिन हुवे, साठिसो १६० विदेहे लहंत ॥४॥
केवली केई वाल परण्या, वयणे एहिं सोय ।
आठमा जिन थी सोलमा लगै, विरह विदेहे न होय ॥५॥
सोलमा जिन साथे सहु, मुगति जाइ जिन भाण ।
विरहि समै सहु खेत्र में, उरह एहा पिछाण ॥ ६ ॥
सत्तरमा जिन होय भरह , पंच ऐरवत मिलनें दस ।
समये खेत्रे दस कह्या, लेहवा एह अवरस ॥ ७ ॥
सत्तरमा जिन अठारसमा विचें, जन्मे वीस विदेह ।

वीस एकवीसमा विचें, संयम केवल देह ॥ ८ ॥
भरता रेवत दस मिलै, मध्यम संपद तीस ।
चौवीसमा जिन शिव गया, विदेह विचरै बीस ॥ ९ ॥
आगत चौबीसे सातमा, आठमा विचें निरवाण ।
विरह पडै सहु क्षेत्र में, अठम न होइ जिन भाण ॥ १० ॥
आठमाथी नथी वली, एम सितरकादिक थाइ ।
परंपराई पूर्व जिम कही, लेवी एम सदाय ॥ ११ ॥
दस वीस एकण समै, जिनवर जनम कहात ।
भरतइरावत दिन हुवै, पांच विदेहे रात ॥ १२ ॥
आगमै इम भाखियो, चवण जन्म अध रात ।
भरतेरावत जनि होय, दिव विदेह विख्यात ॥ १३ ॥
त्रीस सिंहासन सहू, दोइ मेरु पांचे लाधे ।
दो दो पूरब पश्चिमे, एक दक्षिण उत्तर साधे ॥ १४ ॥
च्यार जन्मै विदेह प्रतें, पांच मिली नें वीस ।
भरतेरावते दस होय, एक समय जन्म लहीस ॥ १५ ॥
वीस २ जन्में विदेहे सही, साठसो विजये पुराय ।
लाख चोरासी पूर्वायुत, सधनुष पांचसै काय ॥ १६ ॥

चढते दोय पडते तीनें, आरे धर्म कहाय ।
भरतैरावत ते सही, विदेही धर्म सदाय ॥ १७ ॥
परिवर्त्तिना काल भरहेर, वय लेखो इहांथी लेह ।
चोथो नित्य विदेह में, आणंद रुचि भणेह ॥ १८ ॥
जिनवर ए नित्य समरतां, लहिये संपद कोडि ।
पंडित पुण्य रुचि गुरु, सीस कहै कर जोडि ॥ १९ ॥

९४. हिंवै चक्रवर्ति नें १४ चउदा रत्न किहां ऊपजे ते चोराणुमो प्रश्नः—चक्र १ असि २ छत्र ३ अने डंड ४ ए चार रत्न आयुध शाला मांहे ऊपजै. तथा मणि रत्न १ कांगणी रत्न २ चर्म रत्न ३ निधि सिरि ग्रहे नीपजै. एवं ७ सात, पुरोहित रत्न १ वार्द्धक रत्न २ सेनापति रत्न ३ गाथापति रत्न ४ ए ४ च्यार रत्न पोताना नगरै उपजै. एवं तिवार पछी स्त्री रत्न राज कुले नीपजै. गज रत्न १ अने अस्व रत्न २ वैताढ्य पर्वत ऊपर उपजै. ए १४ चउदा रत्न नी उत्पत्ति कही.

९५. हिंवै नव निधान किहां प्रगटै ते पिचाणुमो

प्रश्न कहै छैः—ते मध्ये शी शी वस्तुछै? गंगा नदी नें तटें नव निधान नी नव पेटी प्रगटै, ते ते पेटी केवडी? १२ बार जोयण आयाम लांबी, नव जोयण पोहली विस्तारें, अर्द्ध योजन नी ऊंची. ते जोयण आत्मागुल प्रमाण. ए नव निधि मजुस नें आकारै छै. वैडूर्य माणि रत्नमय कमाड (किंवाड–कपाट) छै, तेहना नाम वस्तु कहिये छै— नै सर्पिक पहलूं. ते मध्ये स्कंधावार नगर निवेस ए विध पाहिलें १ पांडुक नामै बीजु. तिहां धान बीज नी सर्व संपति २. पिंगल नामै त्रीजुं. ते मध्ये नर नारी, हय गय नां आभरण विध छै ३. चोथुं महा पद्म नामै, ते मध्ये १४ चउदे जाति ना रत्न छै ४. पांचमो मल्हि नामै विविध प्रकार ना वस्तु ते मध्ये छै ५.छठुं काल नामै तेमां त्रिकाल ज्ञान ना पुस्तक छै ६.सातमुं महाकाल नामै. ते मध्ये सोनो रूपो मणि लोह सर्व द्रव्य अखूट छै ७.आठमो माणवक नामै, ते मध्ये राज-नीति, युद्ध नीति, सर्व हथियार युद्ध नी नीति छै ८.

नोमो सुख नामै, ते मध्ये. चतुर्विध तुर्यांना अंगना नारि नाटक नी विधि संगीत ना ग्रन्थ छै १. एकेक निधाने एक हजार देवता अधिष्ठायक छे. व्यंतरीक देवता छै, तेह नो आयु एक पल्योपम नु, ए भाव.

१६. हिवै प्रभु जिहां पारणो करै तिहां केतली वृष्टि होइ ते छियाणमो प्रश्न —ते ऊपर गाथा— "अद्धे तेरस कोडि उक्कोसच्छ होइ वसुधारा। अद्ध तेरष लषा जंहं नेया होइ वसुधारा."

१७. हिवै १४ चउद विद्या मोटी छै ते सत्याण मो प्रश्नः—ते विद्याना नाम लिखिये छै. प्रथम नभो-गामिनी १.पर शरीर प्रवेसनी २.रूप परिवर्त्तनी ३.स्तंभनी ४.मोहनी ५.स्वर्ण सिद्धि ६.रजत सिद्धि ७.रस सिद्धि ८.बंध मोक्षणी ९.शत्रु परायणी १०.वश्य करणी ११. भूतादि दमनी १२.सर्व संपत्करी १३. शिवपदप्रापणी १४. ए १४ चउद मोटी विद्या जाणवी.

१८. हिवै पंच प्रस्थानै आत्मा ते पंच प्रस्थान

ते किहां ते अठ्याणमो प्रश्नः—अभय १ अकरण २ अहमेंद्र ३ कल्प ४ तुल्य ५, ए अवस्था साधवा सावधान छै. अभय ते अरिहंत नो ध्यान १. अकरण ते सिद्ध नो ध्यान २. अहमेंद्र ते आचार्य नो ध्यान ३. तुल्य ते उपाध्याय नो ध्यान ४. कल्प ते साधु नो ध्यान ५. ए समान अवस्थाइ ते पंच प्रस्थान मई आचार्य छैइ. ए भाव, अर्थ ध्यानमाला ग्रन्थे विस्तारै कह्यूं छै.

९९. हिवै त्रीजुं गुणस्थान चढतां पडतां किम आवै ते नन्याणमो प्रश्नः—तत्रोत्तरं—चढतां पडतां बे प्रकारै आवै ते किम ? अनादि मिथ्यात्वी होइ तेह नें चढता नावै. ते प्रथम पहलां थी उपशम सम्यक्त पामै. गंठीभेद करै ते चोथे आवै. ते माटे अनादि मिथ्यात्वी ते पहिला थी चोथै आवै. ते माटे मिश्र गुण स्थानै न आवै. तथा सादि मिथ्यात्वी सम्यक्त पामी नें पड्यो होइ ते पाछे क्षयोपशम सम्यक्त पामै, ते तीजुं गुण स्थानकै आवै तेह नें पडतांइ पण आवै. ए भाव इति.

१००. हिवै समोहिया असमोहिया मरण तेह नो अर्थ सूत्रे छै ते एकसोमो प्रश्न लिखिये छे:—समोहिया ते श्युं? जे इहां थी जीव निकले, सम काले सर्वे प्रदेशां लेइनें पर भव जाइ; जिम दडो छूटो नाखे तो दडाना प्रदेश साथै जाय, तें समोहिया मृत्यु कहिये १. अने असमोहि मरणै तो जीव ना प्रदेश श्रेणी बंध जाइ आगल थी मोकलै. अथवा जीव निकल्यां पछी पछ-वाडै जाइ मिलै. श्रेणीगत जाइ पडाइ ना दोड नी परें. ए रीते सूत्र छै. ए भाव.

१०१. जीव ने उपयोग गुण ते सम्यक्त, अने ठरण गुण ते चारित्र ते आचारवा नें कुण बलवत्तर छै ते एकसौ पेलो प्रश्नः—जेहवो आत्मा नो उपयोग वस्तु आत्म जीवन गुण आवरवानें मिथ्यात्व बलवत्तर छै. तिम एह नी प्रणमन सुख निवारवानें अविरत्यादि हेतु बलवत्तर छै. ते माटै मिथ्यात्व नें उदै सम्यक्त गुण न पामै. अविरत नें उदै चारित्र गुण स्थान रूप न पामै. ते माटे एह नी प्रणमन उपयोगै एकाग्र रूपै प्रणमै.

तिवारे ए सुख रूप ज्ञान चारित्र मई संपूर्ण धर्म पाम्या. ए भाव.

१०२. हिवे ३ तीन प्रकार ना कर्म किम छै ते एकसौ बीजुं प्रश्नः—ते कर्म नी वर्गणा छै ते द्रव्य कर्म कहिये. अने ते वर्गणा जिवारे पांच शरीर पणै प्रणमै तिवारे तेह नें नोकर्म कहिये. अशुद्धोपयोग ना राग द्वेष मोह परिणाम ते भाव कर्म. ए भाव.

१०३. हिवै एक पद ना श्लोक नी संख्या केतली ते एकसौ त्रीजुं प्रश्नः—द्वादश्चैव कोट्यो लक्षा एयसीति अधिकानि श्चैव । पंचाशदष्टोच सहस्रसं ॥ अट्ठेव ८ सह सचुलसिहिं८४सय१००छक्क साढा ५० एक वीस पयगं थार ॥ एतली एक पदना श्लोक नी संख्या जाणवी ए भाव.

१०४. हिवै १४ चउद पूर्व ना जेतला पद छै ते जुदा२ लिखिये छै ते एकसौ चोथुं प्रश्नः—तिहां प्रथम उत्पाद पूर्व ना ११ कोडि पद छै १. बीजुं

आग्रायणीय तेहना पूर्व ९६ छनु लाख पद छै २. तीजो वीर्यापवाद पूर्व, तेहना ७० लाख पद छै ३ चोथुं अस्ति-नास्ति प्रवाद पूर्व ना ६० लाख पद छै ४. पांचमुं ज्ञान प्रवाद पूर्व, तेह ना ३६ कोडि पद छै ५. छठो सत्य प्रवाद पूर्व, तेह ना १ एक कोडि ६० साठ लाख पद छै ६. सातमो आत्म प्रवाद पूर्व, ३६ छत्रीस कोडि पद छै ७. आठमो कर्म प्रवाद पूर्व, तेह ना एक कोडि ८ आठ लाख पद छै ८. नवमो प्रत्याख्यान प्रवाद पूर्व, तेह ना ८४ चोरासी लाख पद छै ९. दसमो विद्या-प्रवाद पूर्व, तेहना ११ ग्यारे कोडि १५ पन्दरा हजार पद छै १०. इग्यारमो कल्याण प्रवाद पूर्व, तेहना ६२ बासठ कोडि पद छै ११. बारमो प्राणवायु पूर्व, १. एक कोडि ५६ छपन लाख पद नो छै १२. तेरमो क्रिया विशाली पूर्व, ९ नव कोडि पद नो छै १३. चउदमो लोकबिंदुसार पूर्व, तेहना १३ तेरा कोडि ५० पचास लाख पद छै १४. एक पदना ५१८८८४० अक्षर। ८। एक पद नी संख्या जाणवी. अनुयोग द्वारवर्त्तौ संपूर्ण.

१०५. हिवै बीजा गुण स्थानै (सास्वादन) जिन नाम कर्म सत्ताइ किम न होय ते एकसौ पांचमो प्रश्न छैः— ते कर्म ग्रंथ नी अवचूरी मध्ये कह्यूं छैः यथा (सत्ते अडयालसयं जाव उवसमुवि जिणुं वीयातइय) अस्यार्थः । सत्ताइ कर्म नी प्रकृति १४८, एकसौ अड़तालीस मिथ्यात्व गुणस्थान थी मांडी यावत् इग्यार-मा सुधी होइ.पण बीजे त्रीजे गुण स्थाने जिन नाम कर्म विना १४७ एकसो सेंतालीस प्रकृति सत्ताइ होय ते किम? तेंह ना अभिप्राय कहै छै. चोथे गुण स्थाने क्षयोपशम सम्यक्त छै ते जिन नाम कर्म बांधै ते बांधी नें पाछो पड़े समकित वमै तो ते पहिले गुण स्थानकै आवै,पण बीजे त्रीजै गुण स्थानै नावै. ते माटै मिथ्यात्व गुण स्थाने जिहां सुधी उपशम समकित होइ, तिहां सुधी जिन नाम न बांधै. स्तोक काल माटै क्षयोपशम तथा क्षायक समकित छै ते बांधै. ते पाछौ वमै ते क्षयोपशम सम-कित पडतो जिन नाम कर्म बंध वालो पहिले गुण स्थान आवै, पण बीजै तीजै नावै. तिहां १४८ अेकसो

अडतालीस प्रकृति सत्ताई होय. तथा उपशम समकित वालो जिन नाम कर्म नथी बांध्युं ते पडने त्रीजे गुण स्थानै तथा बीजे आवै. अने उपशम सा ते तो जिन नाम कर्म नो बंध नहीं. ते माटे बीजें त्रीजें गुण स्थानै सत्ताइ १४७ एकसो सैंतालीस प्रकृति होइ. तथा उपशम समकित च्यार वार आवे, भव मांहि ४ च्यारवार तो उपशम श्रेणी चढतां आवै. वली पाछो पड़े एक वार, ते उपशम समकित पामतां गंठी भेद थाइ. ते समै आवै. तथा पांचमी वार आवै ते पाछो पडी आठमै गुण स्थानै आवी नें पछे क्षपक श्रेणीक मांडी केवल ज्ञान पांमी सिद्धि वरें. ए भाव.

१०६. हिवै क्षयोपशम समकितनुं लक्षण कहै छै ते एकसौ छःमो प्रश्नः— ३ तीन मोहनी, ४ च्यार अन्तानुबंधी नी चोकड़ी, ए सात प्रकृति मांहि थी मिथ्या (मोहनी) ३ अने ४ अन्तानुबंधी चौकड़ी ए ७ सात प्रकृति मांहि थी जे कांइक दलिया छे, वर्गणा छे, ते मांहि थी जेतली वर्गणा ना दलिया ते प्रकृति ना उदै

आवै ते खपावै. अने बाकी रह्या तेह नो उपशम करै——उपशमावै तेह नो नाम क्षयोपशम कहिये. ते क्षयोपशम समकित ना भेद लिखिये छै.

॥ दोहा ॥

च्यार खपहिं त्रय उपशमाहिं, पंच खय उपशम दोय।
षय षट उपशम एक यों, क्षय उपशम त्रिक होय॥ १॥

एह नो भावार्थ लिखिये छै. सात प्रकृति मध्ये ४ च्यार चारित्र मोहनी नी छै, ३ तीन प्रकृति मिथ्यात्व मोहनी नी छै. ते मध्ये ६ छः पहली ते वाघण (वाघिनी) जेवी छै. एक सम्यक्त मोहनी ते कुतरी (कुतिया) सरीखी छै. तेह नो विवरो, ए सात प्रकृति जिहां उपशमै तिहां उपशम सम्यक्त कहिये. ए ७ साते प्रकृति सत्ता मांहि थी चय करै तिहां चायक समकित. ए सात मांहिली कांईक खपै, कांईक उपशमै तिहां चयोपशम समकित कहिये.

॥ दोहा ॥

क्षयोपशम वरतें त्रिविध, वेदक च्यार प्रकार ।
च्चायक उपशम युगल जुत, नोधा समकित धार॥ १ ॥

च्चयोपशम समकित ३ तीन प्रकार नो, वेदक समकित ४ च्यार प्रकार नो, च्चायक समकित एक प्रकार नो, उपशम समकित एक प्रकार नो. एह नी विगत—जिहां ए सात मांहि नी ४ च्यार च्चपें अने २ बे उपशमै, अने १ एक वेदै ते प्रथम भेद १.तथा ए सात मांहिली ५ पांच खपै, १ एक उपशमै, १ वेदै ते क्षयोपशम समकित नो बीजो भेद २.ए बे प्रकारे क्षयोपशम वेदक कह्यूं. तथा तीन प्रकार नुं च्चयोपशम समकित कह्यूं,एतले पांच प्रकार कह्या.४ च्यार च्चयोपशम नो, तथा ४ च्यार च्चपै ३ तीन उपशमै ते क्षयोपशम सम्यक्त १. अथवा ५ पांच च्चपै २ दो उपशमावै ते पिण च्चयोपशम समकित २. अथवा ६ छै क्षपै अने एक उपशमावै ते पिण च्चयोपशम समकित ३. ए तीन प्रकार करी च्चयोपशम समकित कहिये.

जे आवे हर्ष नहीं, पाप नें उदै गये खेद नहीं. एहवी जेहनी दृष्टि ते समदृष्टि कहिये. एटले समदृष्टि ए बे पद नो उपादान निमित्त देखाडयो, ए भाव.

११०. हिवै ४ च्यार निक्षेपा जिनना तेह नी द्रव्य भाव थी भक्ति शी रीते करवी ते एकसौदसमो प्रश्नः—प्रथम पवित्रता पणै एकाग्र चित्तें असातना टाली जिन नो नाम जपिये ते नाम जिन नी भक्ति १. तथा थापना जिननी अष्ट प्रकारी तथा सतर भेदी विधि सुं करै. पछै भाव पूजा तन्मय थई प्रणमै ते थापना जिन नी भक्ति २.तथा द्रव्य जिनते जिनना जीव तेह नें विषें तेह नें भावै, जिन ना जीव जाणीनें भाव सुं वंदणा करवी ते द्रव्य जिन नी भक्ति ३. तथा भाव जिन ते अगडै बैठा, समोसरणें घणाएक जीव नें प्रतिबोध आपता एहवा जे आज श्री सीमंधर स्वामी तेह नें वंदणा, नमस्कार, गुण स्तुति इत्यादि करी ए तन्मय थई भावी जिन नें ए रीते भक्ति करै४.ए निक्षेप४ च्यार नी भक्ति नी रीते समन हृदय थी लिख्युं छै. ए भाव.

१११. हिवे जीव नें देवुं अने दरिद्रपणो किम टलै ते एकसौ ग्यारमो प्रश्न—जीव अनादिकाल नो रागद्वेष मोहै प्रणमै छै तेणै देवो नें दरिद्रपणुं ए बे वधें छै. ते किम टलै ? समकित गुण पामै, रत्नत्रय धर्मे पामे टलै. ते किम ? ते दर्शन गुण प्रगटे द्वेष भाव जीवइ समभाव प्रगटै, ज्ञान गुण प्रगटै पुद्गलादि ऊपर राग भाव मिटीजे, वैराग्य गुण प्रगटै. चारित्र गुण प्रगटै, मोहनो दरिद्र जाइ, चरण टरण गुण प्रगटै, इम ए गुण प्रगटै, ए दरिद्र जाइ. तथा ए देवो करज (ऋण) टलै तैं किम् ? दर्शन गुणै जन्म भवनी परंपराइ मिटै. ज्ञान गुणै तो जरा नी वेदना मिटै. चारित्र गुणै मरण भय मिटै, एतले अमर पद पामी सिद्धीवरें. इम दर्शन गुण ज्ञान चारित्र गुणै प्रगटै जन्म जरा-मरण ना भय टलै. जिम एक नर लक्ष्मी धन प्रचुर पामै, दारिद्रपणुं अने देवुं ए बे टलै, तिम रत्नत्रय रूपै धर्म धन प्रगटै. राग द्वेष मोह रूप दरिद्रपणुं जाइ. अने जन्म जरा मरण रूप देवा ना भय टलै. ए भाव.

११२. हिवै ६ छः प्रकारे आत्मा घणा कर्म बांधै ते एकसौ बारमो प्रश्नः—तथा राग१ द्वेष२ आर्त्त३ रुद्र ध्यान ४ अने विषय ५ कषाय६ ए छः—प्रकारे आत्मा घणा कर्म बांधइ छइ, ते किम ? राग द्वेष तै जीव ना परणाम मांहि वर्त्तै छै,तेणे करी कर्म बंध्या ते उदय आवै त्यारै, आर्त्त रुद्र ध्यान जे ते थी श्युं करै ? विषय कषाय सेवै. तेणै वली घणा कर्म बंधाइ तेथी भव नी परंपरा संसारी जीव नें टलै नहीं. ए मूल मंत्र बीज जाणवो. ए भाव.

११३. हिवै सम्यक्दृष्टी एहवो जे शब्द तेह नों श्यो अर्थ ते एकसौ तेरमो प्रश्नः—सम्यक् दृष्टी नो शब्दार्थ ते पूर्वोक्त जाणवो. सम्यक्दृष्टी कहिये ते शब्द नो अर्थ—सम्यक् कहतां यथार्थ, दृष्टी कहता श्रद्धान कहिये. सम्यक् ज्ञान ते यथार्थ जाणवो. सम्यक् चारित्र ते यथार्थ आचरवो. ए सम्यक् नो अर्थ. तथा उदे आव्युं ते सहवो अने स्वरूपे जोवुं ए लक्षण सम्यक् दृष्टी श्रावक साधु ना जाणवा. ए भाव.

११४. हिवै गुणग्राही, गुणगवेषी ते श्युं? ते एकसो चवदमो प्रश्नः—यथा गुणग्राही, गुणगवेषी, साह्य (सहाय)कारी, विनई, सेवाकारी, एहवा श्रावक तथा शिष्य गुरु नें मिलवा दुर्लभ. तथा गुणग्राही ते श्युं? जे गुरु पासे सूत्र सिद्धान्त सांभलीनें घणी प्रशंसा करै,कीर्ति करै, पर गुरु ना कोई उदयीक भाव ना अवगुण देखी नें तिहां द्वेष न ऊपजै. श्या माटै? जे खेद ऊपजै तो भक्ति नो मन विनय गुण थी भागी जाइ. ए भाव. गुणगवेषी ते श्युं? गुणगवेषी ते गुरु माहिं एके उपकार नुं गुण होइ ते जोई पिण विनय चूकै नहीं, अवगुण दृष्टी मांहि नावै. तथा साह्यकारी ते गुरु नें अन्न पानादिक नी, वस्त्र औषधादिक नी घणी सहाय करै. पोतै गांठ थि खरचै, गांठ न होय तो कोई जोग्य जीव पासे थी लावीनें गुरु नी सहाय करै, तथा सेवा करी पोतानो जात थकी तन मन वचनें करी गुरु नें वेयावच्च करै, साता उपजावै. एहवा श्रावक तथा शिष्य पंचम कालें मिलवा दुर्लभ

छै. ए भाव.

११५. हिवै साताइ सुख, असाताइ दुःख ए मांहि निमित्त उपादान कुण छै ते एकसौपंदरमो प्रश्नः—साता,असाता, दुःख, सुक्ख,यो श्रायो विशेषः साता, ते अनुक्रमेण उदय प्राप्तीनां वेदनीय कर्म पुद्गलानां अनुभवरूप, तथा सुख दुःख नें परोदीर्यमान वेदनीय अनुभव रूप. साता असाता ते उपादान रूपै छै. साता असाता ते वेदनीय कर्म ना उदय पाम्या जे पुद्गल तेहनुं वेदवुं भोगवुं, ते अशुद्ध उपादान रूप छै. अने सुख दुःख तेहना फल छै, तेहना फल उदेस्या ?वेदनीय कर्म भोगववुं. एतले निमित्त रूप थयो जो साता उपादानै, सुख निंमित्ते साता तिहां सुख होइ. अने असाता उपादानै, अने दुःख निमित्तै एतले असाता तिहां दुःख एतले जिहां जेहवो वृक्ष तिहां तेहवो फल, ए भाव.

११६. हिवै साता असाता आत्माश्रित छै. सुख दुःख ते पुद्गलाश्रित छै. तथा वेदना २ बे प्रकार नी ते

एकसोसोलमो प्रश्नः—(वेयणा दुविहा अभुपगमीया उवकमीया. अभुपगम कीया स्वयं अभ्युपगम्यते वेदते यथा साधुत्र केश लुंचना तापानोदिभिवेदयंती उपक्राम-किंतु स्वयमुदीर्णस्योदीर्णा करणे न चउदयं उपनीतस्य वेद्यस्य अनुभव इत्यार्थः ॥) एह नो भावार्थ—एक वेदनी कर्म काल पाकी स्वभावै उदय आवे ते समभावें वेदी खपावै ते अभ्युपगामकी वेदना. अने एक उदीरणाइ करी उदय लावीं नें वेदनी कर्म ना पुद्गल सम भावै वेदी खपावै ते उपक्रामकी वेदना जाणवी, ए भाव.

११७.हिवे जिन वचन स्याद वाद रूपैछे ते ४ च्यार प्रकारै छै ते एकसौ सतरमो प्रश्नः—ते कारण कार्य रूपै छै १ ते निमित्त उपादान लीधइ २ द्रव्य भाव सहित छै ३. निश्चय व्यवहार नय युक्त छै ४. एहवा च्यार प्रकारै साहित होइ ते जिन धर्म देसना कही, ए भाव.

११८. हिवै बे परिसह शीत छे ते किहां ? ते एक सौ अठारमो प्रश्नः——आचारंगे तृतीयाऽ

धुरेटिका मध्ये इम कह्यूं छै— जे २२ बावीस परिसह मध्ये २ बे परिसह शीत अने २० बीस परिसह उष्ण. ते बे किहां? एक स्त्री परिसह १ बीजो सत्कार परिसह २. बाकी सर्व उष्ण परिसह छै— मन नें तापकारी माटै उष्ण छै, ए भाव.

११९. हिवै बन्ध १ सत्ता २ उदय ३ नें उदीरणा ४ ए च्यार मध्ये आत्माश्रित अने पुद्गलाश्रित केतला होयते एकसौ उगणीसमो प्रश्न कहै छैः—उदय १ अने सत्ता २ ए बे पुद्गलाश्रित छै, अने बंध १ उदीरणा २ ए बे आत्माश्रित होइ, ए भाव.

१२०. हिवै आठ वर्गणा ना पुद्गल मध्ये थोडा घणा किहा ते एकसौ वीसमो प्रश्नः— आठ वर्गणा मांहि उदारिक वर्गणा मांहि थोड़ा १, तेथी वैक्रिया मांहि अनन्तगुणा २, तेथी आहारक मांहि घणा ३, तेथी तेजस मांहि घणा ४, तेथी भापा मांहि घणा ५, थी सासोसास (श्वासोच्छ्वास) मांहि घणा ६, तेथी

मन ना पुद्‌गल घणा ७, तेथी कार्मणानि वर्गणाना पुद्‌गल घणा ८. इति भाव.

१२१. हिवै २२ बावीस परिसह ते किहा कर्म थी ऊपजै ते एकसो इकवीसमो प्रश्नः— ज्ञानावरणी थी २ बे, मोहनी ना ८. वेदनी ना ११, अंतराय नो १, ए च्यार कर्म थी ऊपजै. अत्र गाथा— (दंसण मोहे दंसण १ परिसहो पन्नाणं २ पढमं मीचारिमे-अलाभ परिसह सत्तेव ते चरित मोहनी १ अकोसे अरई इत्थि ३ नि सीहीया ४ चेला ५ जायणा ६ चेवसक्कार पुरसक्कारोइकारस वेयणी जंमि २ पंचेवं आणु पुव्वी ५ चरीया ६ सिज्ज, तहेव जलेय ८ वहं ९ रोग १० तणु फासा ११ से से सुनथि वियारो १२ ॥ इति.)

१२२. हिवै उपसर्ग परिसह नो अर्थ विचारवो ते एकसौ बावीसमो प्रश्नः— उपसर्ग ते आत्मा कर्म जनित छै. उप (कहतां) समीपे, सर्ग (कहतां)

सर्जन जे उपसर्ग, ते माटे. तथा परिसह ते पर जनित छै. पर ना निमित्त थी कह्या ते सहवुं—परि समंतात् सह्यते. इति उपसर्ग परिसहनो अर्थ विचारवो.

१२३. हिवै प्रमाण ४ च्यार आत्मा थी वीर किम मानिये ते एकसौ तेवीसमो प्रश्न कहै छै:— अथ प्रमाण ४ च्यार अनयोग सूत्रे कह्या छै:— अनुमान प्रमाण १ उपमा प्रमाण २ आगम प्रमाण ३ प्रत्यत्त प्रमाण४.ते मध्ये आज श्रीवीर स्वामी प्रत्यत्त प्रमाणे किम मिले ? ते थापना निच्चेपा थी मिलैं. ते किम् ? सम भाव शान्ति मुद्रा पर्यंकासन नो उत्पादे. अने राग द्वेष नो विनास एहवी असल नी नकल जिन प्रतिमा ते देखीनें भाव थी वीर प्रत्यत्त प्रमाणै मिलै. जिन प्रतिमा जिन सरीखी ते जिन प्रतिमा नी भक्ति जिन भावै कीधाना फल श्रावक नें महानिशीथ सुत्र में कह्यूं छै (अकसिणढो) इति वचनात्.तिवारे जिन प्रतिमानी भक्ति कीधी ते जिन नी कीधी. इम कारण कार्योपचा- रात्. इम जिन नी थापना थी आज प्रत्यक्ष प्रमाणै

श्रीवीरामिल्या कह्याइ. संदेहो नास्ति.

१२४. हिवै कर्म वर्गणा जीव लीए छै ते थोडी घणी को नें आपै छै ते एकसो चोवीसमो प्रश्नः— समै२ जीव कर्म वर्गणा नें ग्रहे छै. ते आठे कर्म पणै वेहचीनें आपै. ते मांहि कोई नें घणी वर्गणा आपै. सर्व थी थोडुं कर्म दल वर्गणा आयु कर्म नें आपै. तेह थी नामगोत्र कर्म नें विशेषाधिक आपै. तेथी ज्ञानावरणी १, दर्शनावरणी २, तथा अंतराय ३, ए कर्म नें विषै मांहो मांहि विशेषाधिक आपै सरीखुं,तेथी मोहनी नें कर्म वर्गणा दल अधिक आपै, तेथी वेदनी नें अधिक. इम सर्व जोतां तो वेदनी कर्म नें कर्म वर्गणा दल विशेष आपै. इति भगवतीजी सूत्रे कह्युं छै. ए भाव.

१२५.हिवै विग्रह गति केतला समय नो ते एकसौ पचीसमो प्रश्नः—भगवतीजी सूत्र मध्ये एकेंद्री नें पांच समय नो विग्रह गति ते त्रस नाडी बाहरै विदिसे रह्यो होय. थावर जीव विदेसें त्रस नाडी बाहरै उपज-

वो होय तेहनो पांच समय थाय. एहवो भगवतीजी में कह्यूं छै.

१२६. हिवै अभिसंधी अनभिसंधि बे शब्द नो अर्थ कहै छै ते एकसौ छावीसमो प्रश्नः—हिवै अभिसंधि तें उपयोग पूर्वक आत्म वीर्य होय तेहनें कहिये. तथा अनभिसंधि ते अणाउपयोगे आत्मवीर्य होय तेह नें कहिये. ए भाव.

१२७. हिवै सम्यक् दृष्टी देशविरति नें गृहस्थवास छतां छठुं गुणस्थान आवै ते एकसौसत्तावीसमो प्रश्नः—सम्यक् दृष्टी देशविरति गृहवास छतां कोई जाणशे जे चौथा पांचमा गुण स्थान वाला नो निर्मल अध्यवसायै ध्यान दसाइ शुभ योगै शुभ धर्म ध्यानैं छठा सातमा गुणस्थान ना परिणाम आवै पछैं ते कालांतरै अंतरमुहूर्त्तमात्र रही नें पछै मिटि जाइ, पोताना गुणस्थान माफक परणाम रहै एहवुं कहै ते असत्य मत कल्पना, पण कोई ग्रंथोक्त नहीं. तत्रोत्तरं

चौथा पांचमा थी भाव चारित्र गुण प्रतें चढतो १३ मा १४ मा सुधी चढीनें मरु देव्या नी परी, पुण्याढय राजा नी परें सिद्धि वरें. पाछो ते गुणस्थान फरसी नें पडै नहीं. तथा पांचमा चौथा वाला नें कषाय ४ च्यार तथा ८ आठ नो क्षयोपशम थयो छै. अने छटो सातमो गुणस्थान तो ३ तीजी चोकडी कषाय नी तेहनो क्षयोपशम थयें आवै, ते माटे पांचमा ना निरमला अध्यवसाय शुभ ध्यान दशाइ उज्ज्वल होय पण गुण स्थान तो पांचमो कहीइ, पण छठो सातमो न कहीइ. गुणस्थान ते कषाय ना क्षयोपशम नें हाथे छै अने अध्यवसाय ते निज परिणति नें हाथे छै,ते माटे विचारवो. ए भाव.

१२८. हिवै सम्यक्त मोहनी ना उदय किहां थकी होय ते एकसौ अट्ठावीसमो प्रश्नः—तथा सम्यक्त मोहनी नो उदय क्षयोपशम समकितवाला नें होय, पण उपशम क्षायक ए बे समकितवाला नें समकित मोहनी नो उदय वेदन होय नहीं. क्षायक वेदक

वाला नें तथा उपशमवेदकवाला नें ए सात माहिज वेदै, एकै पण एक समै रहै, तेहनां कालस्तोक माटै इहां गवेख्यूं नथी. ए भाव.

१२९. हिवै समकित मोह नी प्रकृति को नें कहियें ते एकसौ उगणतीसमो प्रश्नः— क्षयोपशम उपशमवाला नें सत्ताइ छै. तेह नी सत्ताइ मूल छै. तेणैकरी कांक्षा मोहनी वेदै छै. कोईक जिन प्रणीत भाव सूक्ष्म पदार्थ मध्ये मुंझाय. शंका कंखा मोहनी साधू पण वेदै छै. ते माटे भगवतीजी सूत्र मध्ये पण कह्यूं छै ते विचारतां समकित मोहनी प्रकृति तेहनें कहिये ए भाव.

१३०. हिवै उतसर्ग अपवाद बे मार्ग कहिये छै तेहनो स्यों भावार्थ ते एकसौ तीसमो प्रश्नः—तत्रोत्तर उतसर्ग ते व्यवहार मार्ग १. अपवाद ते निश्चय मार्ग २. यथा साधुनें पृथिवी कायादि षट्कायनी विराधि ना निषेधी छै, पण कदाचित् कारणे नदी उतरवी पडै तथा आहारादिक नें

अर्थे तथा गुरु देव वांदवा अर्थे चालतां विराधना थाइ,ते उत्सर्ग.ते माटे अपवादै पचक्खाण महा व्रत नो होइ. अने आचरण काइक कारण पडै उत्सर्ग मार्ग होइ. तथा वचनांतरे कोईक ग्रंथे उत्सर्ग ते निश्चय मार्ग कह्यो छै. अपवाद ते कोमल मार्ग व्यवहार मार्ग कह्यो छै. तेहनो स्वरूप आगुं लिख्यो छै. ए भाव, उत्सर्ग अपवाद मार्ग नी चर्चा घणी छै पण अत्र तो अल्प बुद्धि जेहवो जाणुं तेहवो संक्षेप थी लिख्यो छै. इति.

१३१.हिवै कोइके प्रश्न पूछ्यो जे दीवा प्रमुख ना प्रकाश पडै छै ते दीवा मध्ये अग्नि ना जीव छै तेहना पर्याय, तरयोत रूप ते पुद्गल ना पर्याय ते एकसो इकतीसमो प्रश्नः—तत्रोत्तरं. दीवा मध्ये जे अग्नि ना जीव छै ते मांहेज प्रणमी रह्या छै पण दाहक रूप पर्याय छै ते बाहर निकलै नहीं,तथा दीवा ना प्रकाश रूप जे बाहिरै दीसै छै ते तो विश्रसा पुद्गल नी पर्याय छाया आकृति तेज द्युति इत्यादि बहू भेदें पुलद्ग

पर्याय कह्या छै. तथा दीवा नो जे बाहिरें प्रकाश रूप जे दीसै छै ते प्रकाश रूप पुद्गल नें निमित्तै अपर विश्रसा पुद्गल श्रेणि बंधे जमाव थाइ छै ते दीसै छै. तेहनें निमित्त पण दीवा मध्ये जें अग्निना जीव छै तेहना पर्याय नहीं तेह ना गुण पर्याय दाहक रूपे छे ते जिहां व्यापै तिहां बाली भसम करै. ते माटे ए विश्रसा पुद्गलनो जमाव जाणवो. जिम आरसी मध्ये मुख जोतां आपणा शरीर समान सर्व पुद्गल दीसै छै ते कांई आपणा शरीर ना पर्याय आरसी मांहि गया नहीं. पण ते आरसी नो निमित्त पामीनें मुख जेहवा विश्रसा पुद्गल श्रेणी बंध जमाव थाय छै पण जीव ना नहीं. यथा शरीर नी छाया इत्यादिक सर्वे विश्रसा पुद्गल जाणवा. ए भावार्थ. इति दीपक प्रश्न.

१३२. हिवै यथा शास्त्र १४ चउद गुण वक्ता ना छै तथा १४ चउद गुण श्रोता ना छै ते नाम मात्र थी जाणवा हेतै लिखिये छै ते एकसौ बत्तीसमो —— — आगम मध्ये कह्या छै जे सोले बोल ना

जाण एहवा जे पंडित १. बीजे बोले शास्त्रार्थ विस्तार जाणवा २. त्रीजे बोलै वाणी माहि मिठास ३. चौथै बोलै प्रस्ताव अवसर ओलखै४. पांचमु सांचो बोलै५ छट्ठो बोलै सांभलनार ना संदेह छेदे ६. सातमे बोलै बहुशास्त्र वेत्ता गीतार्थ उपयोगी होइ ७. आठमै अर्थ विस्तारी संवरी जाणै ८. नवमै बोले व्याकरण रहित कठिन भाषा अपशब्द न बोलै ९. दसमै बोलै वाणीइं सभाने रिझावै १०. इग्यारमै बोलै रस स्वाद पामै ११. बारमै बोलै प्रश्नार्थ १२. तेरमै बोलै अहंकार रहित १३. चउदमै बोलै धर्म वंत संतोषबन्त १४. ए बोलना जाण ते वक्ता जाणवा. इति.

हिवै श्रोता ना चउद १४ बोल लिखिय छै. भक्तिवंत १ वाचालतें मीठा बोलै २. गर्व रहित ३. सांभलवा ऊपर रुचि. ४. चंचलाई रहित एकाग्र चित्ते सांभलै अने धारै ५. पडवडो ते जेहवो सांभल्यो तेहवा प्रगट अक्षर कहै ६. प्रश्न जाणवा ७. घणो शास्त्र सांभ-ल्यानो रहस्य जाणै ८. धर्म कार्ये आलसु न होइ ९. धर्म

सांभलतां निद्रा नावै १०. बुद्धिवंत होइ ११. दातार गुण होइ १२. जे पाछै धर्म कथा सांभले तेहना पछवाडे घणा गुण होइ, घणा गुण बोलै १३. निंदा कोई नी न करै तथा कोई सुं ताण खैंच वाद विवाद न करै १४. ए चउदा बोल श्रोता जिन वचन ना सांभलनार ना गुण जाणवा.

हिवै पुराण ना नाम कहै अठार १८. ब्रह्म पुराण १ पद्म पुराण २ विष्णु पुराण ३ शिव पुराण ४ भागवत पुराण ५ मार्कंडेय पुराण ६ आग्नेय पुराण ७ नारद पुराण ८ भविष्य पुराण ९ ब्रहतवैवर्त्त पुराण १० लिंग पुराण ११ स्कंध पुराण १२ वराह पुराण १३ वामन पुराण १४ कूर्म पुराण १५ मच्छ पुराण १६ गरुड़ पुराण १७ ब्रह्मांड पुराण १८ एवं अठार पुराण नाम.

१३३. अथ वर्ण, गन्ध, रस अने फरस (स्पर्श) अने ए परमाणु पुद्गल ना गुण ए च्यार, शब्दे गुण कहां थी आव्यो ? शक्ति होइ ते व्यक्ति थाइ. इहां

तो शक्ति शब्दे गुण नथी. तो शब्दे सांभलिये छै कानैं ते जीव नो गुण छै किम् पुद्गल नो गुण छै इति प्रश्न श्या ऊपर कह्यूं छै तें एकसौ तेतीसमो प्रश्नः—परमाणु मां बे फरस छै. कर्म नी वर्गणा मां च्यार फरस छै. शीत १ उष्ण २ लूखो ३ चोपड्यो ४ ए च्यार फरस छै. शरीर मां आठ फरस छै ते ४ च्यार फरस बीजा किहां थी आव्या? ते ऊपरि आठ फरस किहां थी नीपन्या? ते किहां? इहां बे संबंध छै— समवाय संबंध १. अने संयोग संबंध २. समवाय संबंध वस्तु गुण छै ते जाणवो देखवो. षट द्रव्य पिण समवाय। ४। इति. संयोग संबंधे घणा मिलें उपचारे अपर गुण नीपजे. कुण दृष्टांते? खारो अने हलदरे जिम रत्तास थाइ तिम शब्द गुण नीपन्यो. आत्मा पुद्गल योगे शब्द थयो तिम ४ च्यार समवाय संबंध हता तिम अपर बीजा ४ च्यार संयोग संबंधे नीपन्या ए आठ फरस कहिये.

१३४. हिवैं पर भव नुं आयु किम बंधे ते एकसौ चौंतीसमो प्रश्नः—योग १ कषाय २ ध्यान ३

लेश्या ४ ए च्यार एकठा मिलै तिहारें पर भव नुं आयु बंधै. इति.

१३५. हिवै षट द्रव्य नो एकसौ पैंतीसमो प्रश्नः—हिवै शिष्य जीवाजीव नुं स्वरूप पूछै छै. जे तिहां धर्मास्ति कायादि षट् द्रव्य ना द्रव्य,क्षेत्र, काल, भाव, अनें गुण एकेक द्रव्य ना पांच भेद इम छः द्रव्य ना मिली ३० तीस प्रश्न पूछै छै. तत्रोत्तरं.

१ धर्मास्तिकाय—द्रव्य थी द्रव्य १ चेत्र थी लोक प्रमाण २ काल थी अनादि अनंत ३ भाव थी अवर्णादि ४ गुण चलण ५.

२ अधर्मास्तिकाय—द्रव्य थी द्रव्य १ चेत्र थी लोक प्रमाण २ काल थी अनादि अनंत ३ भाव थी अवर्णादि ४ गुण थिर ५.

३ आकास्तिकाय—द्रव्य थी द्रव्य १ चेत्र थी लोकालोक २ काल थी अनादि अनंत ३ भावथी अवर्णादि ४ गुण थी अवकाश ५.

४ पुद्गलास्तिकाय—द्रव्य थी पुद्गल अनंता १ क्षेत्र थी लोक मध्ये २ काल थी अनादि अनंत ३ भाव थी वर्णादि ४ गुण पुरण गलण परिणाम ५.

५ जीवास्तिकाय—द्रव्य थी जीव अनंता १ क्षेत्र थी लोक मध्ये २ काल थी अनादि अनंत ३ भाव थी अवर्णादि ४ गुण उपयोग सहित ५.

६काल— द्रव्य थी काल अनंता अनंत १ क्षेत्र थी मनुष्य लोक२काल थी अनादि अनंत ३ भाव थी अवर्णादि ४ गुण परिवर्त्तन ५.

पुनरपि * द्रव्य थी, क्षेत्र थी, काल थी, भाव थी श्युं ते कहै छै.द्रव्य थी अप्रदेशी १ बीजे क्षेत्र थी अप्रदेशी २ त्रीजे काल थी अप्रदेशी ३ चौथो भाव थी अप्रदेशी ४.

हिवै क्षेत्र थी ते नियमा अप्रदेशी. ते द्रव्य थी सिय × सप्रदेशी (सिय) अप्रदेशी. हिवै काल थी सिय सप्रदेशी (सिय) अप्रदेशी' काल थी पण भजना.

* काल द्रव्य आसरी नै कहै छै. × सिय कहतां स्यात्

क्षेत्र थी सिय सप्रदेशी (सिय) अप्रदेशी. हिवै भाव थी सिय सप्रदेशी सिय अप्रदेशी. भाव थी पण भजना. भाव थी किम् भजना ? जे द्रव्य थी अप्रदेशी ते चेत्र थी नियमा अप्रदेशी. जे द्रव्य थी अप्रदेशी ते काल थी सिय सप्रदेशी सिय अप्रदेशी. जे द्रव्य थी अप्रदेशी ते भाव थी सिय सप्रदेशी सिय अप्रदेशी. एणी रीते लीज्यो ए भाव.

हिवै जे द्रव्य थी सप्रदेशी छै, जे क्षेत्र थी सप्रदेशी,जे काल थी सप्रदेशी होइ नैं अप्रदेशी पण छै, जे भाव थी सप्रदेशी.

हिवै अप्रदेशी छै ते क्षेत्र थी सप्रदेशी अप्रदेशी. ते द्रव्य थी सप्रदेशी, नियमा ते द्रव्य थी सिय सप्रदेशी सिय अप्रदेशी. ते द्रव्य थी सप्रदेशी होइ नैं अप्रदेशी पण छै.

हिवै अप्रदेशी काल थी सिय सप्रदेशी सिय अप्रदे . काल थी सिय सप्रदेशी सिय अप्रदेशी. ते चेत्र

थी पण सिय सप्रदेशी सिय अप्रदेशी.

हिवै भाव थी सिय सप्रदेशी सिय अप्रदेशी. भाव थी पण भजना. भाव थी सिय सप्रदेशी सिय अप्रदेशी. ते काल थी पण सिय सप्रदेशी सिय अप्रदेशी. इति

१३६. हिवै षट्द्रव्य ना गुण पर्याय किम जाणिये ते एकसौ छत्तीसमो प्रश्नः—अथ षट् द्रव्य नो विवरो द्रव्य गुण पर्याय लिखिये छै. जीव द्रव्य १ पुद्गल द्रव्य २ धर्म द्रव्य ३ अधर्म द्रव्य ४ काल द्रव्य ५ आकाश द्रव्य ६.

१ अथ जीव द्रव्य ना भेद—एक शुद्ध जीव द्रव्य, एक अशुद्ध जीव द्रव्य. शुद्ध जीव द्रव्य कोनें कहिये? नोकर्म (देहादि), द्रव्य कर्म ८ आठ (ज्ञानावर्णादि भाव कर्म २ बे (रागद्वेष) रहित, सिद्ध सिद्धालये तिष्ठे तिहां शुद्ध द्रव्य जीव कहिये. अशुद्ध द्रव्य किं? जीव ना प्रदेश कर्म प्रमाणो मांहि तिष्ठेयें परस्पर तिहां अशुद्ध जीव द्रव्य कहिजे.

अथ जीव ना गुण ते श्युं ? एक शुद्ध गुण, एक अशुद्ध गुण. शुद्ध ते श्युं? शुद्ध गुण ते केवल ज्ञानादि अनंत गुण. अथ अशुद्ध गुण ते श्युं ? मति, श्रुति, अवधि, मन, पर्यव, कुमति, कुश्रुति, कुअवधि, चक्षुदर्शन अचक्षुदर्शन, अवधिदर्शन, एवं १० दस अशुद्ध गुण.

हिवै जीव ना पर्याय किम्? एक व्यंजन पर्याय १, एक अर्थ पर्याय २. व्यंजन पर्याय ना बे भेद—एक शुद्ध व्यंजन १ बीजो अशुद्ध व्यंजन पर्याय २. शुद्ध व्यंजन पर्याय ते चर्म शरीर प्रमाण किंचित् उणो, सिद्ध सिद्धालये तिष्ठयि ते शुद्ध व्यंजन पर्याय कहीजे,

हिवै अशुद्ध व्यंजन पर्याय ते श्यूं? नर नारकादि ४ च्यार गति अशुद्ध व्यंजन पर्याय ज्ञातव्य.

हिवै जीव का अर्थ पर्याय बे२—एक शुद्ध अर्थ पर्याय १ एक अशुद्ध अर्थ पर्याय २. ते शुद्ध अर्थ पर्याय किम् ? जिहां षट् गुणी हानि वृद्धि आपणे गुण सेणी तिहां शुद्ध अर्थ पर्याय कहीजे. अथ अशुद्ध पर्याय किम् ? मति ज्ञानादि अवलोकना अव-

स्थिति एकात्तर नें अनन्तमें भाग पर्याय ते ज्ञान आनि रहै तिहां अशुद्ध अर्थ पर्याय कहीजे. जीव नो उत्पाद व्यय ध्रुव संयुक्त, एक गति नो उत्पाद,अन्य गति नो व्यय, ध्रुव द्रव्य शास्वत, ए जीव ना शुद्धा-शुद्ध द्रव्य गुण पर्याय.

२अथ पुद्गल महास्कंध अपेक्षया सर्वगत भिन्न२ परमाणु अपेक्षाय असवगदं (असर्वगत).

अथ पुद्गल द्रव्य ना भेद—एक शुद्ध पुद्गल द्रव्य १ एक अशुद्ध पुद्गल द्रव्य २. शुद्ध पुद्गल द्रव्य किम् ? आकाशके प्रदेश शुद्ध अविभागी प्रमाण अछेद अभेद तिष्ठे तिहां शुद्ध पुद्गल द्रव्य. हिवै अशुद्ध पुद्गल ते श्युं ? जे द्विणुकादि स्कंध मिल्या ते अशुद्ध पुद्गल.

अथ पुद्गलग ना द्रव्य ना गुण भेद.एक शुद्ध गुण, एक अशुद्ध गुण. शुद्ध गुण किम् ? अविभागी परमाणु वीस गुण संयुक्त तिष्ठे तिहां पुद्गल के शुद्ध गुण कहीजे.अशुद्ध पुद्गल गुण किम् ? विंशति आदि

अनंत गुण मिश्रित द्विणुकादि स्कंध रूप गमन मोख्य रूपान्तर गुण नो कि गोणता सत्तागुण नुं की मुख्यता तिहां अशुद्ध पुद्गल कहिये.

अथ पुद्गल के पर्याय किं? एक व्यंजन पर्याय, एक अर्थ पर्याय. व्यंजन पर्याय के भेद २—एक शुद्ध व्यंजन, एक अशुद्ध व्यंजन पर्याय. शुद्ध व्यंजन पर्याय ते किम्? अविभागी परमाणु शुद्ध आकाश प्रदेशे तिष्ठति, षट्कोणी आकृति, तिहां शुद्ध व्यंजन पर्याय कहीजे. बीजो अशुद्ध व्यंजन पर्याय ते किं? द्विणुकादि स्कंध रूप स्थूल सूक्ष्म रूप परिणामै तिहां अशुद्ध व्यंजन पर्याय कहीजे.

पुद्गल के अर्थ पर्याय के दो भेद—एक शुद्ध अर्थ पर्याय, एक अशुद्ध अर्थ पर्याय. शुद्ध अर्थ पर्याय किम्? शुद्ध अविभाग परमाणु षट् गुणी हानि वृद्धि रूप आपणो गुण सुं करै तिहां पुद्गल को शुद्ध अर्थ पर्याय कहीजे. अशुद्ध अर्थ पर्याय किं? द्विणुकादि

स्कन्ध रूप गुण विगाति तीव्र मंद तारतम्य भेद परिणमै ते तिहां अशुद्ध अर्थ पर्याय पुद्गल को कहिजे. एक स्कन्ध को व्यय, एक स्कन्ध नो उत्पाद, ध्रुव द्रव्य शास्वत.

३ अथ धर्म द्रव्य किं? द्रव्य गुण गाति जीव पुद्गल नो पर्याय असंख्यात प्रदेशी, लोक प्रमाण अखंड षट् गुणी हाणि वृद्धि रूप परिणमवै तिहां शुद्ध पर्याय कहीजे. गाति नो उत्पाद, स्थिति नो व्यय, ध्रुव द्रव्य शास्वत, धर्म द्रव्य लोक प्रमाण असंख्यात प्रदेशी; अखंड द्रव्य किं? आकृति रूप शुद्ध व्यंजन पर्याय धर्म द्रव्य कहीजे. धर्म द्रव्य के शुद्ध अर्थ पर्याय किं? जिहां आपणै गुणन स्यों षट् गुणी हानि वृद्धि करै तिहां शुद्ध अर्थ पर्याय कहीजे. एवं धर्म द्रव्य.

४ अथ अधर्म द्रव्य किं? द्रव्य गुण स्थिति लक्षण जीव पुद्गल नो पर्याय, असंख्यात प्रदेशी, लोक प्रमाण; अखंड षट् गुणी हाणि वृद्धि रूप

परिणमै, आपणै गुण नी सु तिहां शुद्ध पर्याय कहीजे. अधर्म द्रव्य असंख्यात प्रदेशी लोक प्रमाण अखंड आकृति तिहां शुद्ध व्यंजन पर्याय कहीजे. जिहां षट् गुणी हानि वृद्धि करै तिहां शुद्ध अर्थ पर्याय कहीजे. अधर्म द्रव्य के स्थिति नो उत्पाद, गति नो व्यय, ध्रुव द्रव्य शास्वत.

५ अथ काल द्रव्य किं ? द्रव्य गुण वर्त्तना लक्षण, सर्व द्रव्याणं पर्याय असंख्यात अणु लोक प्रमाण शुद्ध पर्याय कहीजे. वर्त्तमान समै नो व्यय, अनागत समय नो उत्पाद, ध्रुव द्रव्य शास्वत. एक कालाणुनी द्रव्य आकृति तिहां शुद्ध व्यंजन पर्याय कहीजे. एवं काल द्रव्य.

६ अथ आकाश द्रव्य किं ? द्रव्य गुण अवकाश लक्षण पंच द्रव्याणां पर्याय लोकालोक प्रमाणं अनंत प्रदेशी, घटाकाश उत्पाद, घटाकाश व्यय, ध्रुव द्रव्य शास्वत, आकाश द्रव्य लोकालोक प्रमाण आकृति तें

शुद्ध व्यंजन पर्याय कहीजे. एवं आकाश द्रव्यं ६. इति षट् द्रव्य हानि वृद्धि समासः.

हिवै षट् द्रव्य ना गुण पर्याय जाणवा ने गाथा कहै छै—(परिणाम जीव मुत्ता संपऐसाएग खित्त किरियाय निच्चं कारण कत्ता, सवगदं मियर पवेसा. १.)

१३७. परिणामीक कुण द्रव्य? जीव पुद्गल ए बे परिणामीक. च्यार अपरिणामीक ते किहा? धर्म द्रव्य १ अधर्म द्रव्य २ काल द्रव्य ३ आकाश द्रव्य ४ एवं च्यार अपरिणामीक.

१३८. कौण द्रव्य जीव कौण द्रव्य अजीव? ४ च्यार प्राण नें करी जीव पूर्वही जीवै छै. सुख, सत्ता, बोध, चैतन्य ये भी च्यार प्राण * करी सदा कालै जीवै छै. इति जीव, पंच द्रव्य अजीव पुद्गल द्रव्य १ धर्म द्रव्य २ अधर्म द्रव्य ३ काल द्रव्य ४ आकाश द्रव्य ५. २

* इन्द्री प्राण, बल प्राण, आयु प्राण, स्वासोस्वास प्राण, ये च्यार द्रव्य प्राणै करी जीवै छै, जीव्यो हतो, जीवशे. अने [प्र]ाण सुख, सत्ता, बोध, चैतन्य करी जीवै छै, जीव्यो हतो.

१३९. कौण द्रव्य मूर्तिक कोण द्रव्य अमूर्तिक ? पुद्गल द्रव्य मूर्तिक, पंच अमूर्तिक. ३

१४०. कोण द्रव्य सप्रदेशी कौण द्रव्य अ-प्रदेशी ? जीव द्रव्य १ पुद्गल द्रव्य २ धर्म द्रव्य ३ अधर्म द्रव्य ४ आकाश द्रव्य ५ एवं पांच सप्रदेशी. काल द्रव्य अप्रदेशी. ४

१४१. कोण द्रव्य एक कोण द्रव्य अनेक? धर्म १ अधर्म २ आकाश ३ एवं तीन द्रव्य एक, जीव, पुद्गल, कालाणु, ए तीनों अनेक. ५

१४२. कोण द्रव्य क्षेत्री कौण द्रव्य अक्षेत्री ? आकाश द्रव्य क्षेत्री, पंच अक्षेत्री ६.

१४३. कौण द्रव्य क्रियावंत कोण द्रव्य अक्रियावंत? जीव द्रव्य, पुद्गल द्रव्य ए बे क्रियावंत. ४ च्यार द्रव्य अक्रियावंत, ७.

१४४. कौण द्रव्य नित्य कौण द्रव्य अनित्य ? र्म १ अधर्म २ आकाश ३ काल ४ नित्य. जीव

पुद्गल ए बे अनित्य. ८.

१४५. कौण द्रव्य कारण कौण अकारण ? पांच द्रव्य कारण, जीव अकारण. ९.

१४६. कौण द्रव्य कर्त्ता कौण अकर्त्ता ? जीव कर्त्ता पंच अकर्त्ता. १०.

१४७. कौण द्रव्य सर्वगद कौण असर्वगद ? आकाश द्रव्य सर्वगद, पंच असर्वगद. ११.

१४८, गाथा— (ईहरहीयपचेसं यद्यपीए कत्ता मिलही तद्यपी आपणों गुण पर्याय तिष्ठत रहै) १२. एवं द्वादषा अधिकार समास.

सप्रदेशी पांच द्रव्य अप्रदेशी काल, सक्रिय पुद्गल अने जीव छै अने च्यार अक्रिय, एक सचित जीव द्रव्य अने ५ पांच अजीव द्रव्य, काल विना ५ पंच अस्तिकाय, पांच द्रव्य लोक मध्ये अने आकाश द्रव्य लोक अलोक मध्ये छै. पुद्गल जीव ए २ बे गतिवंत बाकी ४ च्यार अगतिवंत, पुद्गल जीव ना पर्याय पलटाइं; बाकी च्यार

द्रव्य ना पर्याय पलटाइ नहीं.

१४९. हिवै वेदनी निर्जरानी चोभंगी नो एकसौ गुणपचासमो प्रश्नः—महा वेदनी अने अल्प निर्जरा नारकी नें १. अने महावेदनी महा निर्जरा साधु नें होय. गज सुकमालवत परे २. अने अल्प वेदना अल्प निर्जरा देवताने अने माहा निर्जरा अल्प वेदना से लेशी कारक ने ये चौभंगी जाणवी.

१५०. हिवै मिथ्यात्व नी चौभंगी नो एकसौ पच्चासमो प्रश्नः— अनादि अनन्त अभव्य नें मिथ्यात्व १. अने अनादि शांत भव्य जीव नें मिथ्यात्व २. सादि सांत समकित पांमी फिरी पाछो मिथ्यात्व जाय नें फिरी समकित पामे तेनें ३. अने सादि अनन्त कोई नें नहीं ४. इति चौभंगी मिथ्यात्व नी.

१५१. हिवै सींहपणें लेइ नें सींहपणें पाले तेहनी चौभंगी जाणवी ते एकसौ इकावनमो प्रश्नः—
ह ता ईम्सिरकं तो सीहताए विहरई जंबूथूल

भद्राय १. सीहताए नाम एगे निस्कंते सीयालताए विहरइ. कच्छ महा कच्छ कंकरि मरीच वत्. अथ सीयालताए निस्कंतो सींहताए विहरइ मेतार्य भव देव श्रेणीक यवकार सुवर्णकारवत ३. सीयालताए पनिस्कंतो सीयलता निस्कंताए सियालताए विहरइ. अंगार मर्द्दकाचार्य उदाई मारक कुल वालू वत् ४.

१५२ हिवै अनुयोग चारनो एकसौ बावनमो प्रश्नः— द्रव्यानुयोग १. धर्म कथानुयोग २. गणितानुयोग. ३. अचरानुयोग ४ इति अनुयोग चतुर्द्धों.

१५३. हिवै षट् दुर्लभबोधि स्थाना नो एकसौ त्रेपनमो प्रश्न कहीजे छैः— ६. हिठाणें हि दुल्लभ बोहि नांणक्रंम. पकरंति अरिहंताणं अवन्नं वयमाणे १. अरिहंत पन्नस्स धम्मस्स अवन्नं वयमाणे २. आरियाणं अवन्नं वयमाणें ३. उवझायाणं अवन्नं वयमांणे ४. चाउवन्नास्स संघस्स अवन्नं वयमांणे ५. स्मदीठी देवाणां अवन्नं वयमाणें ६. इति षट् दुर्लभ बोधि स्थानानि.

१५४. हिवै आठ आत्मानो एकसौ चोपनमो प्रश्नः—अथ ८ आठ आत्मा लिख्यते. एक द्रव्यात्मा. असंख्यात प्रदेश रूप जीव द्रव्य ते द्रव्यात्मा तीन द्रव्य गुण पर्याय सहीत १. बीजो कषाय आत्मा. सौलै कषाय अनंतानुवंधी प्रमुख नव ९ नो कषाय, हास्यादि २. त्रीजो जोग आत्मा. मनो योगादि ते योग आत्मा ३. चौथी उपयोग आत्मा. ज्ञान, दर्शन, अज्ञान ३ ते उपयोग आत्मा ४. पांचमो ज्ञान आत्मा ते ज्ञान जीव नें आश्रै रह्या छै ५. छठो दर्शनात्मा सम्यक्त जीव नें छै ते माटै ६. सातमो चारित्र आत्मा. चारित्र नी सत्ता जीव नें छै ते माटे ७. आठमो वीर्यात्मा. मन, वचन, काय वीर्य छै, ते माटे वीर्यात्मा ए आठ ८. नारकी देवता मांहि, सात आत्मा छै, चारित्र आत्मा नथी. एकेंद्री मध्ये ६ छः आत्मा छै, ज्ञान चारित्र आत्मा नथी, तिर्यंच पंचेंद्री मांहि ८ आत्मा, मनुष्य मांहि ८ आठ आत्मा, सिद्ध मांहि ४ . द्रव्यात्मा १ उपयोगात्मा २. (अणंन गुण-

मई उपयोग.) ज्ञानात्मा ३ दर्शनात्मा ४ ए च्यार आत्मा सिद्ध नें गुण नो भाजन द्रव्य. इति तत्वं.

१५५. हिवै त्रस जीवा अष्ट विधानो एकसौ पचपनमो प्रश्नः—त्रस जीवा अष्ट विधा—अंडजा पंखी आदि १ पोतजा गजादि २ करजरादि गवादि ३ रसजा कीटकादि ४ स्वेदजा जूकादि ५ समुर्च्छिम पतंगआदिक ६ उद्भिज गींगोडियादि ७ उत्पातिका देव नरकादि ८ इत्यष्टधा खाणी. जीव परिणामो दसधा, गति १. इंद्रिय २. कषाय ३. लेश्या ४. योग ५. उपयोग ६. ज्ञान ७. अज्ञान ८. दर्शन ९. चारित्र १०. ए दश भेद जीव ना परिणामा दसधा श्यूं इति पन्नवणा १३ मा पद मध्ये छै.

१५६. हिवै जीव केतला प्रकारै प्रणमै ते एकसौ छपनमो प्रश्न कहै छैः—बंधण १ गई २ संठाण ३ भेय ४ वन्न(वर्ण) ५ रस ६ गंध ७ फास(स्पर्श) ८ अगुरुलघु ९ सद्द १० परिणाम ११ ए दस हुंति अजीवा जीवेण कहवी. (फासि अंत मुहुत्तं पिजेण

नियमा अवद्ध पुद्गल परियट्टो चेव संसारो. १) पुद्गल नां परावर्त्त पुद्गल परावर्त्त. अप कृष्ट किंच न्यूनो अर्द्ध पुद्गल परावर्त्त. अपार्थ पुद्गल परावर्त्त.

अथ अंतर्मुहुर्त्त नो प्रमाण. अंतर्मुहूर्त्त अष्ट समयोर्द्ध घटी द्वयं यावदित्यर्थ. तच्च सम्यक्तोपशामिकं. अत्र चेत्र पुद्गल परावर्त्तै नानाधिकार द्रव्यादिन पुद्गल परावर्त्तैः इत्युपदेस वंदल्यां.

१५७. अथ जाति समरणना केटला भव देखै ते एकसौ सत्तपनमो प्रश्नः——गाथा—पुव्व भवासो पिछ्छि- ई एक दो तिन्नि जाव नव गंवा । उवरि तस्स असिव ओ सभाव जाई सरणस्स ॥ १ ॥ चक्का १ असी २ छत्र ३ दंडा ४ आउदसालाइ हुंति चत्तारी चम ५ मणी ६ कांगणी ७ नही ८ सिरि गहे चक्किणोहुंति ॥२॥ सेणावई ९ गाहावई १० पुरोहीतओ ११ वुथइ १२ य नयरेथीर व्रण राय कुले वेयढे तले गय १४ ॥ ३ ॥)

१५८. अथ धर्म पुण्य नो भेद ते एकसौ अठावनमो प्रश्नः—अथ केतलाइ जीव धर्म पुण्य नें एक मानै छै ते संदेह टालवा नें अर्थे धर्म पुण्य नो भेद लिखिये छै. अण पुण्ये १ पाण पुण्ये २ लेहण पुण्ये ३ सयण पुण्ये ४ वथ पुण्ये ५ मन पुण्ये ६ वयण पुण्य ७ काय पुण्य ८ नमस्कार पुण्य ९ इति नव भेद पुण्य ना कह्या. १२ बार उपयोगमां २ बे अरूपी १० दस रूपी उपयोग, आत्म गुण माटें २ बे अरूपी छै. पांच समकितना नाम छै. ते मध्ये एक अरूपी च्यार रूपी आत्मा गुण माटे. पांच भेद अरूपी छै. सामायकादिक छ आवश्यक छै ते मध्यें सामायक १ चोवीसथो २ पडिकमणं ए त्रण आवश्यक संवर तत्व मध्ये छै. बाकी ३ त्रण निर्जरा तत्व मध्ये छइ. गाथा—सव्व-गउ नियमा एगंमि भवंमि सिझई अवस्सं । विज-यादि विमाणे ह्रियं सखिज्ज भवा ओ ना यव्वी ॥१॥) श्रावक जघन्य पदे केतला लाभे ? क्षेत्र पल्योपम नें असंख्यातमें भागे. आवश्यक निर्युक्तो जंबू द्वीप

मध्ये की टीकावधो अथवा नरा वहवा. तत्रोत्तरं. तद समूर्छछिमप्राण विरह तदा काटिका स्तोका नरा वहवो. अथ श्रुत-सामायक नो लाभ थाइ तिवारे दीपक समकित होइ १. तत्र बीजो समकित सामायिक नो लाभ २. त्रीजो देसविरत सामायिक नो लाभ ३. चौथो सर्व विरति सामायिक नो लाभ ४. छठा गुण स्थान थी साधु त्रिण चोकड़ी नो क्षयोपशमथी ४ एवं अभिप्राय यावत् यस्य पुरुषस्य अहारस्य द्वात्रिं-शत्तमो भाग ते पुरुषापेक्षया केवल मानं आश्रित्य (कुत्सिय हूडीय कूठी शरीरना उ अडंग मुहतीय जावई देहस्स ज ओ पुव्व रयणं तवोससं) कुसिता कुटी२ कुकुटी शरीरमित्यर्थः तस्याः शरीर कुपाया कुकुटाद्या अंगक मिवाड़ कंमूखमुच्यते ॥ गर्भे प्रथमं मुष स्योत्पादात्मुख मध्ये आयाति तावत्कुवलय मूढ त्रयमदा चाष्टो तथाऽयतनानि षट्. अष्टो शंका-दयश्चेति दृग् दोषा पंचविंशति१.

पांच षटीक शालानां नाम घरटी नी खटकशाला१.

चूलानि षटकशाला २ पाणी हारी नी षटकशाला ३. सारवणोनि षट् कशाला ४.उखलानि षट् कायाविराधनो ५. ए पांच स्थान के छः काय विराधना. इति.

१५९. आत्मा नी किंचिदात्मता लिख्यते ते एकसौ गुणसाठमो प्रश्नः—प्रथम आत्म स्वरूप वर्ण्यन्ते असंख्यात प्रदेशी १ अनन्त ज्ञानमयी २ अनन्त दर्शनमयी ३ अनन्त चारित्रमयी ४ अनन्त दानमयी, अनन्त वीर्यमयी, अन्नत लाभमयी, अनन्त भोगमयी, अनन्त उपभोगमयी, अरूपी, अखंड, अगुरु लघू मइ, अक्षय, अजर, अमर, अशरीरी, अत्येन्द्री, अनाहरी, अलेशी, अनुपाधी, अरागी, अद्वेषी, अकोही,अमानी, अमायी, अलोभी, अलेशी,मिथ्यात्व राहित, अविराति राहित, कषाय रहित, यौग रहित, अजोगी, सिद्धस्वरूप, संसार रहित, स्वआत्मसत्तावंत, परसत्ता रहित, पर भावनो अकर्ता, स्वभाव नो कर्ता, परभावनो अभोक्ता, स्वभावनो भोक्ता, ज्ञायक

मध्ये की टीकावधो अथवा नरा वहवा. तत्रोत्तरं. तद समूर्छछिमप्राण विरह तदा काटिका स्तोका नरा वहवो. अथ श्रुत-सामायक नो लाभ थाइ तिवारे दीपक समकित होइ १. तत्र बीजो समकित सामायिक नो लाभ २. त्रीजो देसविरत सामायिक नो लाभ ३. चौथो सर्व विरति सामायिक नो लाभ ४. छठा गुण स्थान थी साधु त्रिण चोकड़ी नो क्षयोपशमथी ४ एवं अभिप्राय यावत् यस्य पुरुषस्य अहारस्य द्वात्रिं-शत्तमो भाग ते पुरुषापेक्षया केवल मानं आश्रित्य (कुत्सिय हूडीय कूठी शरीरना उ अडंग मुहुतीयि जावई देहस्स ज ओ पुव्व रयणं तवोससं) कुसिता कुटीर कुकुटी शरीरमित्यर्थः तस्याः शरीर कुपाया कुकुटाद्या अंगक मिवाड़ कंमूखमुच्यते ॥ गर्भे प्रथमं मुष स्योत्पादात्मुख मध्ये आयाति तावत्कुवलय मूढ त्रयमदा चाष्टो तथाऽयतनानि षट्. अष्टो शंका-दयश्चेति दृग् दोषा पंचविंशति १.

पांच षटीक शालानां नाम घरटी नी खटकशाला १.

चूलानि षटकशाला २ पाणी हारी नी षटकशाला ३. सारवणोनि षट् कशाला ४. उखलानि षट् कायाविराधनो ५. ए पांच स्थान के छः काय विराधना. इति.

१५६. आत्मा नी किंचिदात्मता लिख्यते ते एकसौ गुणसाठमो प्रश्नः—प्रथम आत्म स्वरूप वर्णयन्ते असंख्यात प्रदेशी १ अनन्त ज्ञानमयी २ अनन्त दर्शनमयी ३ अनन्त चारित्रमयी ४ अनन्त दानमयी, अनन्त वीर्यमयी, अन्नत लाभमयी, अनन्त भोगमयी, अनन्त उपभोगमयी, अरूपी, अखंड, अगुरु लघू मइ, अक्षय, अजर, अमर, अशरीरी, अत्येन्द्री, अनाहरी, अलेशी, अनुपाधी, अरागी, अद्वेषी, अकोही, अमानी, अमायी, अलोभी, अलेशी, मिथ्यात्व रहित, अविराति रहित, कषाय रहित, यौग रहित, अजोगी, सिद्धस्वरूप, संसार रहित, स्वआत्मसत्तावंत, परसत्ता रहित, पर भावनो अकर्ता, स्वभाव नो कर्ता, परभावनो अभोक्ता, स्वभावनो भोक्ता, ज्ञा५

वेत्ता, स्वक्षेत्रावगाही, पर क्षेत्र पणै अनवगा
लोकप्रमाण अवगाहनवंत, धर्मास्तिकाय थी भि
अधर्मास्तिकाय थी भिन्न, आकाशास्तिथि भिन्न, पुद्ग
थी भिन्न, पर काल थी भिन्न, स्व द्रव्यवंत, स
क्षेत्रवंत, स्वकालवंत, स्वभाववंत, अवस्थान पणै स
गुण थी अभिन्न, कार्य भेदै भिन्न, स्वरूप सत्तावंत
अवस्थित सत्तावंत, परणामन सत्तावंत, द्रव्यास्तिक
पणें नित्य, पर्यायास्थिक पणै नित्यानित्य, द्रव्यपणै
एक, गुण पर्यायपणै अनेक, अनंता द्रव्यास्ति धर्म,
अनंता पर्यायास्ति धर्म, एहवी स्वसंपदामयी चेतन
लक्षणै लक्षित, स्वसंपदाए पूर्ण छै. पर संगै प्रणम्यो
संसार कर्यो. स्व ज्ञान दर्शन चारित्रै प्रणम्यो सिद्धत्ता
करै. एहवा आत्म द्रव्य नी ओलखाण अनंत नयैं
अनंता निक्षेपै थाइ. ए रीते जे आत्मा नी परतीत
करे, एहवा परतीतवंत नें जैनमार्गी मार्ग मां गणै
छै. एहवो आत्मा जैनमार्गे अनेकांतमयी कह्यो छै. ए
रीते परतीत ते सम्यक् दर्शन, ए रीते ज्ञान ते ज्ञान, ए

मांहि रमवो ते चारित्र.

अस्थित्वं १ वस्तुत्वं २ द्रव्यत्वं ३ प्रमेयत्वं ४ प्रदेशत्वं ५ अगुरुलघुत्वं ६ ए द्रव्यास्तिक ना सामान्य स्वभाव जाणवा.

नित्य स्वभाव १ अनित्य स्वभाव २ एक स्वभाव ३ अनेक स्वभाव ४ सत्य स्वभाव ५ असत्य स्वभाव ६ वक्तव्य स्वभाव ७ अव्यक्तव्य स्वभाव ८ भेद स्वभाव ९ अभेद स्वभाव १० परम स्वभाव ११ ए विशेष स्वभाव ना नाम. स्वप्रदेश स्वभाव १ अप्रदेश स्वभाव २ चेतन स्वभाव ३ अचेतन स्वभाव ४ मूर्त्त स्वभाव ५ अमूर्त्त स्वभाव ६ कर्तृत्व स्वभाव ७ भोक्तृत्व स्वभाव ८ परिणामीक स्वभाव ९.

धर्मास्तिकाय ना गुण च्यार मुख्य—अरूपी १ अचेतन २ अक्रिय ३ गति सहाय ४.

अधर्मास्तिकाय ना गुण च्यार मुख्य—अरूपी १ अचेतन २ अक्रिय ३ स्थिति सहाय ४.

आकास्ति कायना गुण च्यार मुख्य, अरूपी १ अचेतन २ अक्रिय ३ अवकासवंत ४

पुद्गलास्तिकायना च्यार गुण मुख्य— रूपी १ अचेतन २ सक्रिय ३ पूरण गलण ४.

पर्यायास्तिक ना भेद छः—द्रव्य पर्याय, भव्यत्वं, सिद्धत्वं,अभव्यत्वं,कारणत्वं, कार्यत्वं. द्रव्य व्यंजन पर्याय असंख्य प्रदेशत्वं३ गुणपर्याय गुणंतर भेद ज्ञांत्यादि भेद ४ गुण व्यंजन पर्याय, एक गुण ना अनंत पर्याय. ५ स्वभाव पर्याय, षट् गुण हानि वृद्धि ६. विभाव पर्याय नर नारकादि. पर्यायास्तिक सामान्य परिणामीक. अखंड, अलख, असहाई सक्रिय ना अनंत गुण ना पर्याय नो समुदायक नो तेहनें बादर कहिये. द्रव्य भेद कहिये, द्रव्य अभेदी श्या माटे कहिये ? द्रव्य ना बे भाग न थाइ ते माटै अभेद कहिये. भेद द्रव्य श्या माटै कहिये ? गुण गुण ना करनार जूजुवा करे ते माटै भेद कहिये. ज्ञान गुण, दर्शण गुण चारित्र गुण, सुख गुण, दान गुण, लाभ गुण, भोग

गुण, वीर्य गुण, ए आदि देई नें अनंत गुण.

सम कितना पर्याय—आस्था १ श्रद्धा २ परतीत ३ निरधार ४ रुचि ५ अभिलाष ६ बहुमान ७ आर्थि पणो ८ तत्व ईहा ९ गुण अद्‌भूतता १० गुण गुणी आश्चर्यता ११ तद विरह कारकता १२.

ज्ञान पर्याय—अवलोकन १३ भासन १४ परिछेदन १५ विवेचन १६ अमूर्त्ते चेतनत्वं १७ सर्व वेत्ता, अपरपातीत्वं, निरावरणत्वं.

चरण पर्याय—१ एग २ थिरता ३ तत्वरमण ४ निश्चलानुभूति ५ परम क्षमा ६ परम मार्द्दव ७ परम आर्जेव ८ परम मूर्ति ९ अकामता १० अना संशय ११ सुख १२ ए आदि देईनें अनंत पर्याय जाणवा.

हिवे समकित नी १० दस रुचि छ ते कहै छै:—तिहां पहली निसर्ग रुचि १ बीजी उपदेश रुचि २ त्रीजी ज्ञान रुचि ३ चौथी सूत्र रुचि ४ पांचमी बीज रुचि ५ छठी अभिगम रुचि ६ सातमी विस्तार रुचि ७

आठमी क्रिया रुचि ८ नवमी संक्षेप रुचि ९ दशमी धर्म रुचि १० ए दश रुचि ना नाम जाणवा.

अथ समकितना पांच भूषण कहै छैः—पहिलो उपसम भूषण जे विवेकी प्राणी प्राये कषाय करै नहीं अने जो करै तो पिण तुरत मन पाछो वालै १. बीजो आस्था भूषण. जे भगवंत ना वचन ऊपर शुद्ध प्रतीत राखै. प्रभु जेम आगमै आज्ञा कही तिम सधैं २. त्रीजो दया भाव भूषण. जे सर्व जीव आप सरीखा जाणी दया पालवी ३. चौथो संवेग भुषण. जे संसार सुं, धन सुं, शरीर सुं उदासीनता पणो ते संवेग पणो जाणवो ४. पांचमो निर्वेद भूषण. जे इंद्री ना सुख जीव अंनती वार पाम्या भोगव्या पिण ते दुःख कारण छै एक चिदानंद मोक्षमई अतेन्द्री सुख ते आपणा करी जाणे ए निर्वेद जाणवो ५. एतले पांच भूषण समकित ना कह्या.

१६०. अथ त्रिण्य आत्मा नो स्वरूप लिख्यते

ते एक सौ साठमो प्रश्नः——कोई भौगवै छै. कोई इम कहेतां जे परिणामै बांधै छै ते परिणामे भोगवतो नथी करतो नथी अने भोगवतो नथी तें श्युं? जे निश्चय नये आत्मा अबंध छै,

करै छै भोगवै छै ते श्युं? व्यवहार नये आत्मा कर्ता भोक्ता छै.

हिवै ३ त्रण आत्मा नो स्वरूप लिखिये छै. आत्मा त्रण प्रकारे. ते आत्मा नो स्वरूप सम्यक् दृष्टीये धारवो. जिम थिरता थाइ ते लिखे छै. ते त्रण प्रकार ते किहा? एक बहिर आत्मा, १ एक अंतर आत्मा, २ एक परमात्मा. ३

हिवै बहिरात्मा कहिये ते शरीर, कुटुंब, माल, धन, घर, परिवार, नगर, देश, राग, द्वेष, मिथ्यात्व, मैं मार्‍यो, मैं जिवाड्यो, मैं सुखी कर्‍यो, मैं दुखी कर्‍यो, संसे, विमोह, प्रमुख ए सर्व निज स्वभाव जाणै तेहनें बहिरात्मा कहिये, तेहनें बहिर दृष्टि होय. ते प्रथम मिथ्यात्व गुणठाणे होवै १.

हिवै अंतरात्मा नो स्वरूप कहै छै. प्रथम कर्म बांध्या नो कारण जाणै ते लिखिये छै. मिथ्यात्व ५ अविराति १२ कषाय २५ योग १५ ते ५७ सतावन हेतु जीव कर्म बांधै ते वलतां भौगवै. ते भोगवतां मोहनी कर्म नें जोरै दुःख पामै तिवारै एम जाणै जे माहरो स्वभाव नहीं. किसी वस्तु जाई. तथा मरण आवै तिवारे इम जाणै जे माहरा प्रदेश थी कांइ जातो नथी. हूं तो सर्व वस्तु थी भिन्न छूं, किवारे की लाभ पामे ? तिवारे इम जाणै जे वस्तु अशास्वती छै तो ते ऊपर हर्ष श्यो धरवो, तथा कांई जाए, तिवारे जाणैं जे ए वस्तु थी सबंध टल्यो. वेदनादि कष्ट आवै सम भाव राखै. पर भाव पुद्गलादिक आत्मा थी भिन्न जाणवा. छांडवानी खप करै, परमात्मा नी वांछा करै, ध्यान सिझाय विशेषै करैं, भावना खिण २ भावै, संवर आदरै, निज स्वभावै ते ज्ञान तेह नें विषै इम मन रहै ते अंतरात्मा ध्यान करवा परमात्मा नो ध्यान करवा योग्य चौथा गुणठाणा थी बारमा गुण ठाणा

सुधी अंतरात्मा जाणवो. एहवो अंतरात्मा ओलखै तिवारे परमात्मापणो पामै २.

परमात्मा नुं स्वरूप लिखिये छै. साक्षात् पोतानो स्वरूप देखै, कर्मनी उपाधि रहित ते परमात्मा तेरमे चउदमै गुण ठाणैं होवै. तथा सिद्ध जाणवा ए परमात्मा ध्यानयोग्य. अंतरात्मा ध्यावायोग्य. ध्येय परमात्मा, ध्यान ते एकाग्रता. एम त्रण आत्मा नों स्वरूप जाणवो. इति भाव.

१६१. हिवै सद्धहणा, फरसणा, परूपणा कोने होइ ते एक सौ इकसठमो प्रश्नः— सद्धहणा १ फरसणा ते पालवो २ परूपणा ३ गोतम स्वामी प्रमुखनी परें १.

हिवै बीजो भेद कहै छै. सद्दहणा १ फरसणा २ सामान्य साधु उपदेश देवा असमर्थ नें २.

हिवै तीजो भेद लिखिये छै. सद्दहणा १ अनुत्तर वासी देवनें, परूपणा २ फरसणा नहीं ३.

सद्दहणा, परूपणा २ संवेग पचि नें, फरसणा नहीं ४.

फरसणा बाल तपस्वी नें, सद्दहणा १ परूपणा २ नहीं ५.

परूपणा १ असंजती नें, सद्दहणा १ फरसणा २ नहीं ६.

फरसणा १ परूपणा २ अभव्य नें विषे छै, पण स-द्दहणा नहीं ७.

असद्दहणा १ अपरूपणा २ अफरसणा ३ अना-दी मिथ्यात्वी नें होइ ८. इती अष्ट भेद ना अर्थ. आठमो भेद ते निगोदीया प्रमुख एकेंद्री प्रमुख नें होइ. एभाव.

१६२. हिवै प्रभु नें दानाधिकार नों एक सौ बासठमों प्रश्नः— अथ तीर्थंकर ना दान नो अधिकार लिख्यइ. दिन दिन प्रते एक कोड़ि अने आठ लाख सो-नइया दीये. सोनइयो ८ आठ रती नो नें कोइक जायगां सोनइयो ८० अशी रती नो पिण लिख्यो छै सो

विचारजो जाणजो. तीर्थंकर जितरमो होई तितरमां तीर्थंकर ना पितानो नाम मांड्यो होइ. ते एक दिन ना सोनइया ९०००नव हजार मण थाइ. एक गाडो मण चालीसनुं. एहवा गाडा २२५ दोसो पच्चीस थाइ. आप आपणा वाराना गाडा जाणवा. संवच्छरी दान ना सोनइया सर्व इंद्र नें आदेसै यै श्रमण देवता ८ आठ समय मांहे नीपजावी नें तीर्थंकरना भंडार भरे. ते दान देवाना ६ छः अतिशय जाणवा. तीर्थंकरना हाथ नें विषे सौधर्मेंद्रास्थिती एतले दान देतां थाके नहीं. ईसानेंद्र सुवर्ण मय रत्न जडित लाकडी लेइ उभा रहै.इंद्र चौसठ वांजे सामानिक देवता नें वर्जै.तथा मनुष्य नां भाग्य मांहि होय, जेहवी जेहनी प्राप्ति होइ, जे जेहवो पोसाइ ते तेहवो तीर्थंकर ना मन ईसानेंद्र करैं. तथा तेहवो तेहना मुख मांहि थी कढावै २ चमरेंद्र बलेंद्र तीर्थंकर नी मुठी मांहिला सोनहिया अधिका आवै ते गेरवै, ओछा होय तो अमेरे, साहमानी प्राप्ति सारू ३

देवता भरत क्षेत्रना मनुष्य नें तेड़ी आवे ४. वाण व्यंतर देवता ते मनुष्य नें पाछा मुकी आवै ५. ज्योतिकी देवता विद्याधर नें दान लेवा भणी जाण दीयें. एवं तेणै प्रस्थावै तीर्थंकर नो पिता त्रण मोटी साला करावै. एक सालाई भरत क्षेत्र ना मनुष्य नें अन्न पानादिक आपै. बीजी सालाइ वस्त्र आपै. त्रीजी सालायै आभरण आपै. छः घड़ी पछी दान देवा मांडै तिवारै पौणा दो पहर तांइ दीये. इति दानाधिकार.

१६३. साधु सिज्झाय करै छै शुभ योग व्रतादिक नी शुभ क्रिया करै छै, तथा शुद्धोपयोगै शुद्ध स्वभावै (अप्पाणं भावैमाणे विहरई) इम आत्म ध्यान करै छै. ते सर्व कर्म खपावानें अर्थे. ते किहा कर्म खपावै ? खपाववाना तो त्रण्य कर्म छै. उदे कर्म, अने बन्ध कर्म, उदीरणा कर्म तो उदय ना पेटा मध्ये गवेखिये. तथा कर्म ते मध्ये उदय कर्म शेणे खपावै छै ? तथा सत्ता कर्म शेणै सोधे छै इति. बन्ध कर्म किम मिटै ? शुभ योगै पंच महा व्रत संवर रूप क्रियाइ नवा बन्ध पासै

ते माटे, बन्ध कर्म निवारे, ते व्रतादिक शुभ क्रियाई तथा पांच प्रकार नी सिज्झाइ उदय कर्म खपावे छे, निफल करै छै. तथा शुद्धोपयोगै आत्म ध्याने सत्ताई जे कर्म छै ते सोधे खपावे. इम मुनि आत्म गुणै निर्मल करी सिद्धि वरै छै. ए भाव.

१६४. तथा. आश्रवा ते परिश्रवा, जे शुद्धोपयोगै आत्म परिणामै जो आश्रव ना कारण होइ ते संवर रूप थाइ ते श्री आचारांगै सूत्रे चौथे अध्ययने द्वितीयोदेशके समकित ना अध्ययन मध्ये ए गाथा छै. तथा जीवाभिगम सूत्र मध्ये निर्लेप पदे श्रीगौतमे पूछयो छै जे, स्वामी पांच थावर ना जीव हमणां वर्त्तमाने समै जेतला छै ते निर्लेप थाशे गत्यांतरै जाशे ते एकसौ चौसठमो प्रश्नः—तिवारे श्रीवीरे कह्यूं एक वनस्पति काय विना पांच काय ना जीव निर्लेप थाशे. पृथवी, अप, तेउ, वाउ, त्रस काय ना जीव सर्व स्थानांतरे निर्लेप थाशे. पण वनस्पती काय निगोद गोलक ना जीव निर्लेप नथी. तत्र अथि अणंता जीवा

जेहीं न पतो त साइं परीणामो (उवयंति घयंत्रिय पुणोवी तथैव तथैव) एणे न्याये वनस्पति कायना जीव निर्लेप न थाइ ए भाव.

१६५. एकसौ पैसंठमो प्रश्नः— तथा बादर अपकाय बारमा देवलोक सुधी कही छै. तथा बादर तेउ काय त्रीछी अढी ध्विप सुधी कही छै, ऊंची मेरु पर्वत नी चूलीका सुधी कही.

१६६. एकसौ छासठमो प्रश्नः— तथा सातमी छठि नरगै कुंभी मां उपजवुं नथी तिहां आलिया छै. जिम नदी नें भेखडे बिल होई तिम तिहां आलिया छै. तेतले सूला छै ते ऊपरि शरीर वृद्धि थाइ. तिवारे पडे. इम सांभल्यो छै. ए भाव.

१६७. हिवै साधु ना १४ चउद उपगरण ते किहा ते एकसौ सगसठमो प्रश्नः—

गाथा.

पत्तं पत्ता बंधो पाय ठवणं चा पाय केसरिया ।

पडिलाइं रयत्ताणं गुछओ पाय निलोगो ॥ १ ॥
तिन्नेव पछागासय हरणं चेव होई मुहपत्ती ।
एसो दुवालस विहोउवही जिणकप्पियाणंतु ॥ २ ॥
ए एचेव दुवाल समत्तरेगा चोल पट्टोय एसो ।
चउदस रूवोउवही पुणथेर कप्पंमि ॥ ३ ॥

अर्थः—पत्तं कहतां पात्रुं १ पत्ताबंध ते झोली २ पायठवणं ते कांबली नो कटको ३ पाय केसरिया ते चरवलो ४ पडलाई ते भिक्षा जातां ऊपरि कपडो राखै ५ रयत्ताणं ते पात्रा बेठवानु लूगडु ६ गुछओ ते कंवलमय खंडा पात्र ऊपर दीजिये ७ ए सात तो पात्रं ना उपगरण. तथा ३ तीन कपडा राखै बे सूत्र-मय एक उर्णिका तथा ओघो मुंहपत्ती एवं १२ बार जिनकल्पी नें होइ. तथा एक मातुं एक चोलपटो ए १४ चवदा उपगरण थिवरकल्पी नें होय.

१६८. तथा युग प्रधान आचार्य जिहां विचरै तेहना लक्षण काव्यं ते एक सौ अडसठमो प्रश्नः—

एषांहि वस्त्रेन पत्तांति युका नराव्द भंगोनच देश

चिन्ता। गदा णश्यंति पदोदकेन युग प्रधाना जठर भृत्योन्ये ॥ १ ॥

एहवे शरीर गुणें तथा छत्तीस आचार्य गुणे जिहां विचरै तिहां अढी जोयण तांई मरी उपद्रव न होइ. ए भाव.

उक्त. दुरगतो यतत्प्राणी धारणात्धर्म उच्यते। संयमादि दश विधः सर्वज्ञोक्तो विमुक्तये ॥

१६९. एकसौ गुणसित्तरमो प्रश्न— आत्मानं भावयतीति भावना। आत्मानं अधिकृत्य करोतीति अध्यात्मं। मन्यते जगत्तत्वं स मुनि प्रकीर्त्तित। सम्यक्तमेव तन्मौन्यं सम्यक्त मेवच्च ॥ १ ॥ योगबिंदु ग्रंथे हरिचंद सूरेण अध्यात्म भावना चतुर्द्धा कथिता यथा—परहित चिंता मैत्री परदुःख विनाशिनी। तथा कारुणा परसुख तुष्टी मुदिता परदोषापेक्षण मुपेच्चा ॥ १॥ छद्मस्थ जीवना ध्यान कथितं अंत र्मुहूर्त्तमात्रा ॥ चित्ता वच्छाण एगठ च्छुमिच्छओ ॥ मच्छाणं झाणं जोग निरोहो जिणाणंतु ॥ १ ॥ इति ध्यानं.

१७०. हिवै २४ जिन ना माता पिता नी गति कहै छै. उसभ पिया नागेषु सेसाणं सत्त हुंति ईसाणे अठयसणं कुमारें माहिंदे अठ बोधव्वा ॥ १ ॥ अट्ठणं जणणी ओ तिथय राणं हुति । सिद्धिओ अट्ठयसणं कुमारे माहिंदे अट्ठ बोधव्वा ॥ इति २४ चोवीस जिन ना माता तथा पिता गति । इति भाव.

१७१. तथा जिनवाणी सांभलतां च्यार घातीया कर्म ना अंशे क्षयोपशम धर्म पामै छै ते किम ते एकसौ इकोत्तरमो प्रश्नः—जिनवांणी सांभलावै तिवारे जिवारे दर्शनावर्णी कर्म नो क्षयोपशम पामै. तिवारे जिनवाणी कान मांहि आवै, समजवा मांहि आवै, तथा ज्ञानावर्णी कर्म ने क्षयोपशम वाणी कान मांहि आवै तथा अज्ञानावर्णि कर्म नें क्षयोपशम वाणी कान मांही समज्या मांहे आवै तिवारै पछी वाणी ते दर्शन मोहनी कर्म नें क्षयोपशम थकी यथार्थ आत्म स्वरूप ज्ञान मांहि आवै.

१७२. जिन वाणी ध्यान मांहि आवै ते किम ?

धर्मांतराय कर्म नो क्षयोपशम थाय त्यारे एकाग्रता रूप ध्यान मांहि सिद्धि वरे तथा संयमफल पामै थकै तथा ४ च्यार कर्म क्षायिक भावै प्रणमै केवल ज्ञान पामी सिद्धि वरे. ए भाव.

१७३. हिंवे च्यार प्रकारनी बुद्धि नंदी सूत्र मध्ये कही तेहना नाम ना शब्दार्थ लिखिये छै ते एक सौ तिरीयोत्तरमो प्रश्नः—उपतीया १ विणीया २ कमीया ३ परिणामीया ४. ते मध्ये किहांइ दीठूं सांभल्यु होय नहीं. पोता नी मति ज्ञानावरणी ना क्षयोपशम थकी स्वभावै २ उपजै ते उत्पातकी बुद्धी कहिये. अभय कुमार नी परे १. विनय कीधा थकी जे बुद्धी उपजै नागार्जुनादिक नी परे ते विणीय थकी कहिये २. कंमिया ते करसणादिक कीधा थाइ विज्ञान कलाइ ते उपजै, व्यापार नी परे, ते कम्मीया कहिये ३. तथा परिणामिया ते आवता काल नो विचार करै, रोहा नि परे ४. तथा जिम अभय कुमारे आद्र कुमारे नें जिन प्रतिमा मूकी तिणें धर्म पाम्यो इम च्यार बुद्धि

नो भावार्थ जाणवो. इति बुद्धी च्यार४.

१७४. एक सौ चुमोत्तरमो प्रश्नः— तथा जाती समरण ज्ञान ते मति ज्ञान नो भेद छै. विभंग ज्ञान जे देखै ते अवधि दर्शन ना पेटा मांहि छै. इति.

१७५. चन्द्रमा नी चाल नो एकसौ पिच्योत्तरमो प्रश्नः— मेष राशि नो सूर्य होई तिहां कन्या राशि ना सूर्य तांई चन्द्रमा नी चाल उत्तर दिस भणी, तथा तुल राशि थकी मांडी मीन तांई चंद्रमानी चाल दक्षिण दिशा भणी होइ. इति.

१७६. अथ मिथ्यात्व अविरत हेतु नो एकसौ छिहोतरमो प्रश्नः— जेहवो आत्मा नो शुद्धोपयोग वस्तु आचरवानें जिम मिथ्यात्व बलवर्ते छै, तिम एहनी प्रणमन सुख निवारवानें अविरति बलवर्ते छै, जिहां आत्मा ना प्रणमन अविरत नो उदय अविरत रूप आत्मा प्रणमै तिहां एह नें आत्मिक एकाग्रता रूप सूख न पामै, ते सम्यक् दृष्टी नें अविरती हेतु मिटै.

एहनी प्रणमन उपयोगै एकाग्रता रूप प्रणमै तिवारे एक सुख रूप सुखमई संपूर्ण धर्म पामै. इति भाव.

१७७. तीन प्रकारे कर्म नी वक्तव्यता नो एक सौ सित्योतरमो प्रश्नः— तथा अनादि अशुद्धोपयोग रूपे विभावताइं राग द्वेष मोह रूप आत्मा प्रणमै ते भाव कर्म १. तिण आकर्षणें कर्म रूप वर्गणा बंधाय ते द्रव्य कर्म २. ते वर्गणा जिवारे पांच शरीरे प्रणमै तेह नोकर्म कहिये ३. इम तीन प्रकारे कर्म नी वक्तव्यता जाणवी. इति भाव.

१७८. हिवै एक सौ अठ्योतरमो प्रश्नः—तथा सम्यक्दृष्टी जीव मिथ्यात्व नें उदये समकित वमीनें पाछो मिथ्यात्व गुण ठाणै जाय तोही पिण आयु वर्जि नें सात कर्म नी स्थिति पल्योपम नें असंख्यातमें भागें उणी एक कोडा कोडी सागरोपम नो बन्ध करै. उत्कृष्टो बन्ध एतलो करै. देश विरती नें नव पल्योपम उणी एक कोडा कोडी सागरनो बंध उत्कृष्टो

करै, तथा मुनि पणो पामीनें पाछो पडै, मिथ्यात्वे जाय तो पण आयु वर्जिनें साते कर्म नी उत्कृष्टी स्थिति बांधे तो नव हजार सागरे उणी एक कोडाकोडी सागरोपम नो उत्कृष्टो बंध करै, तथा उपशम श्रेणी थी पडीनें मिथ्यात्वे जाय ते पण आयु वार्जि ने सात कर्म नी उत्कृष्टी स्थिति बांधे तो नवहजार सागरोपम उणी एक कोडा कोडी सागरोपम नो उत्कृष्ट स्थिति बंध करै इति भवन भानु केवली चारित्रे उक्तंच. तथा मार्गाभिमुखे जीव किवारे थाय ? जिवारे भव्यतानें उदै अकाम निर्जराइं कर्म खपावतां वे पुद्गल परावर्त्त संसार रहै तिवारे प्रभुमार्ग सन्मुख आस्तिक पणै सन्मुखी भाव थाइ. तिहां थी संसार भव भ्रमण करतो जीव ऊंचो आवे तिवारे जीव मार्ग पतित पणु डोढ परावर्त्त पुद्गल संसार रहै, तिवारे जिनोक्त मार्गे रुचि रुपे वैठो. वली कर्म नें उदै ते भाव थी पड्यो संसार मध्ये परिभ्रमण करतो एक परावर्त्त संसार पुद्गल रहै तिवारे जीव मार्गानुसारी पणुं पामै

तिहां मित्रादि दृष्टी प्रगटै. न्यायसंपन्न विभव इत्यादिक ३५ पात्रीश गुण प्रगटै. तिहां आत्मा जिनोक्त मार्गै चाल्यो तिहां मिथ्यात्व मन्द रूप होय तथा एतला सुधी गुण पामी नें कोई जीव संसार मांहे नदी पाषाणनी परे घंचन घोलना करता अर्द्ध परावर्त्त पुद्गल संसार माठेरा रहै, तिवारे आर्य देश संज्ञी पंचेद्री पणो गुरू उपदेशै तथा सहज स्वभावे कोई निमित्त पामीनें यथा प्रवर्त्त करणें करी आत्मवीर्य थकी अपूर्व करणें मिथ्यात्व राग द्वेष नी जे ग्रंथी तथा उपशम ग्रंथी भेद करतो जे मोहनी कर्म नी सात प्रकृति तेहनें उपशमावतो करतो जीव अनि वृत्ति करणे करी एक समय नो अन्तर करणे करी जीव उपसम समकित पामै. तिवारे जीव मार्ग प्राप्त कहिये. वस्तु धर्म समकित नें पाम्यो. ए अधिकार योगबिंद ग्रंथ में कह्यो छै.

१७९. तथा साधुने जे त्रिण्य जोग छै ते त्रण्य रत्न त्रय गुणे प्रणम्या छै ते किम ? ते एक सौ उगणयासीमो प्रश्नः—मनो योग ते सम्यक् दृष्टी दर्शन गुणै

दृढास्थिकतादिरूपें प्रणम्यो छैं तथा बचन योग ते जिन वाणी मांहि ते ज्ञान गुणे प्रणम्यो छै तथा काय योग्यते चारित्र गुणे. "जयंचरे जयं चिट्ठे जयं मारो जयं सुये इत्यादिक रूपे प्रणम्यों छे त्यारे जाव जीव तांइ सावद्य योग थी निवात्तिनें मुनि संजम योगे प्रणमै छै. इति.

१८०. तथा संसार मांहे जीव केतली प्रकारना छे ते एकसो असीमो प्रश्नः— जीव ३ तीन प्रकार ना छे-भव्य १ अभव्य २ भव्याभव्य ३.

१८१. भव्यनु लक्षण कहे छै ते मध्ये भव्य जीव ३ तीन प्रकारना—एक निकट भव्य १ मध्य भव्य २ दुर भव्य ३. ते मांहे निकट भव्य जीव होय ते कीणनीपरे सद्वा ते सौभाग्यवन्ती स्त्री वत् तिम निकट भव्य जीव होइ तत्काल स्त्री परणीनें षट् मास मांहे गर्भ रहै अने पुत्र नी प्राप्ति थाय, पुत्र रूप फल पामै. केतला जीव ते भवसिद्धि वरे ते निकट

भव्य १. तिम केतलाइ जीव मध्यम भव्य छै जिम ते परणी स्त्री नें बे बरसे पण नजीक पुत्र फल पामै. तेम जीव थोडा माहे भव सिद्धि वरे, मेघ कुमार नी परे २. केतलाइक जीव दुर भव्य छै. ते जिम परणी स्त्री नें घणे बरसै पूत्र फल पामै तिम ते जीव गौशाला नी परे, केतलाइक तथा अनंता पडवाइ नीं परें घणे काले सिद्धि वरशे. इम तीन प्रकार ना भव्य जीव जाणवा.

१८२. हिवै अभव्य नुं लच्चण कहै. जिम वंघा स्त्री घणे काल लग भरतार नो योग मिलै, उपाय अनेक करै, पण पुत्र न पामै. तद्वत् अभव्य नुं जीव व्यवहारे चारित्रनी क्रिया आदरी नवमा ग्रेवेक सुधी जाय पण सिद्धि फल न पामै.

१८३. हिवै त्रिजो भव्या भव्य कीह्यो ते जीव ते द्रव्य लक्षणे दलवाडुं भव्य पणें कर्म नी विशेष निवड़ताइ व्यवहार राशी मध्ये ऊंचा नहीं आवै, धर्म पाम्या नी सामग्री न मिलै. अत्र गाथा—(सामग्रीय भावश्रो व्यव-

हार राशि अप्प विसाओ । भव्वाचिते अणंते जे सिद्ध सुहं न पावंति ॥ १ ॥ कुण दृष्टांते कुण नीपरें ? जिम कोइ वाल विधवा स्त्री नीपरें. तें स्त्री नें पुत्र थावा ने सक्ति रूप छे पण भरतार ना योग नें अभावे पुत्र फल न पाभै. तिम केतलाइक भव्य जीव छै पण सामग्री नें अभावे नहीं पामै. एहवी गाथा पन्नवणा सूत्र नी टीका मध्येछै. यतः—(अथीअणंता जीवा जेहेंन पत्तोत साइ परिणामे । सुजतियथंती यंतीयं पणोवि-तथेव तथेव ॥१॥) इति.

१८४. हिवे अध्यात्मसार ग्रंथे तीन प्रकारना जीव कह्या छै—भवाभिनंदी ते मिथ्या दृष्टी १ बीजो पुद्गलानंदी ते चौथा पांचमा गुण ठाणावाला सम्यक् दृष्टी २. आत्मानंदी ते मुनि ३. इति.

१८५. वली एहीज ग्रंथे तीन प्रकारनों वैराग्य कह्यो छै ते एकसौ पिच्चासीमो प्रश्नः—दुख गर्भित १ मोह गर्भित २ ज्ञान गर्भित ३. वैराग्य एहनो विस्तार

तिहां थी जोइयो ए भाव. इति.

१८६. संसारी प्राणी केतली प्रकारना ते एक सौ छियासीमो प्रश्नः—ते ४ च्यार प्रकारना कह्या छै. ते किहां? एक सघन रात्रि सम १ एक अघन रात्रि सम २ एक सघन दिन सम ३ चौथो अघन दिन सम ४. हिवै सघन रात्रि समान ते भवाभिनंदी ते जीव मिथ्यात्वी, मिथ्यात्व गुण ठाणा वर्त्ती जीव जाणवा. जे मांहि कांई उजवालु नहीं १.तथा बीजा मार्गाभि मुखी, मार्गानुसारी जीव अघन रात्रि समान जीव जाणवा २ त्रीजो जीव सघन दिन समान ते समकित दृष्टि थी मांडिने बारमा सुधि ते जीव सघन दिन समान ३ चौथो अघन दिन समान ते केवली भगवान ४. ए च्यार प्रकार ना जीव जाणवा.

१८७. तथा संसारी जीव नें आठ दृष्टी कही तेहना नाम ते एक सौ सत्यासीमो प्रश्नः— मित्रा १ तारा २ बला ३ दीप्ता ४ थिरा ५ कांता ६ प्रभा ७

परा ८. ए आठ दृष्टि नो विस्तार योगदृष्टि समुच्चय ग्रंथ थकी जाणवो. इति.

१८८. तथा सर्व वस्तु पदार्थ मात्र मांहि च्यार कारण छै ते किहां ? ते एक सौ अठ्यासीमो प्रश्नः— एक उपादान कारण १ निमित्त कारण २ असाधारण कारण ३ उपेत्ता कारण ४ ए च्यार ना अर्थ—उपादान ते स्युं कही इं ? जिम दृष्टांते उपादान कारण ते मृतिका जे मांहि घट उपजवानी शक्ति तेहनो नाम उपादान १ तथा निमित्त कारण घटोत्पतो चक्र चीवर इत्यादि जिणें करी घट नीपजै २. असाधारण कारण ते कुंभ कार जे घट निपजावै ३. अने उपेत्ता कारण ते स्युं कहिये ? वस्तु जिम छै तिम नी तिम रहै पण तेहनी सहाये आपणुं कार्य करीइ जिम घट नीपन्यो तेम नो तेम रहे पण तेहनी साहाजे जल भरण पान रूप काम नीपजे. तथा जिम सूर्य दीपे छै तेनी साहाजे आपणा कार्य करीये ते अपेक्षा कारण ४ ते मध्ये उपादान कारण धुर थी मांडी छेहडा पर्यंत रहै. भाव १ ।

कारण पणैं. इमज इम च्यारे कारण जाणवा.

१८९. वली तीन कारण बीजा कह्या छै समवाय कारण ते घटनुं उपादान मृत्तिका जाणवो. १ असमवाय कारण ते कुंभकार-२ तथा निमित्त कारण ते चक्र चीवरादि इम घटप्रते ३ तीन कारण जोड लीजे.

१९०. तथा सर्व वस्तु द्रव्यार्थ पर्यायार्थ ए बे नय लीधे छै ते मांहि थी सात नय ते किहा ? संग्रह नय १ व्यवहार नय २ नैगम नय ३ ऋजु सूत्र नय ४ शब्द नय ५ समभिरूढ नय ६ एवंभूत नय ७. ए सात नय तेहना उपनय ए विस्तार नय चक्र ग्रन्थ थी जाणवो. इति.

१९१. तथा कषाय उपने पूर्व कोडनो पाल्यो चारित्र क्षय करै ते ऊपर गाथा आचारांगनी दीपका मध्ये यत—सामण मणु चरंतस्स कसायाजस्स उक्कडा हुंति। ममन्ना मियत्त पुफंच निष्फलं तस्स सापणं ॥ १ ॥ जं अजियं चरितं देसूणा एवि पुर्व कोडि। एतंपि कषाय

भित्तो हारेई नरो मुहुत्तेणं ॥ २ ॥ इत्यर्थः

१९२. तथा आंबिल शब्द नो अर्थ आवश्यक टीका मध्ये कह्युं छै. आय कहतां जे (ओसामण काढुओ होई) ते मध्ये थी जिम अन्न काढे ते रीते काढिये ते आहार करवो. अने जे आम्ल जे खाटो रस (षट् विगय) ए बेहुनें वर्जे ते आंबिल कहिये. इति अर्थ.

१९३. तथा नियाणकमा तेह नें व्रत नआवै उदय जे इम कह छै. तत्रोत्तरं. तेमध्येनियाणा नव प्रकारे दसाश्रुत स्कंध मध्ये कह्याछे. तथा जे नियाणु समकित नुं छै, अव्रत नुं छै ए बे मध्ये जे समकित नो घात कारी नियाणो बांधे ते समकित पामवो दुर्लभ करे. तथा अविरति नुं भोग प्रतियुं नियाणो बांधइ ते भोग पूरा थए व्रत उदै आवै. जेम द्रोपदीनें जीवे पूर्व भवे भोग प्रतियुं नियाणो बांध्यु हतुं, ने पांच भर्त्तारी थई भोग पूरा थया पछी व्रत उदय आव्यूं. ते माटे एह नें अविरतिआसरि नियाणो कहिये, पण समकित नो नथी. इत्यर्थ.

१९४. तथा सामायक च्यार प्रकारनां कह्या— श्रुत सामायक १ समकित सामायक २ देश विरति सामायक ३ सर्व विरति सामायक ४. ते मध्ये श्रुत सामायक नों लाभ ते भव्य मिथ्यात्वी नें होइ. अभव्य नें पण द्रव्य थी श्रुत नो लाभ थाइ १. तथा समकित सामायक ते सम्यक्दृष्टी नें होइ २. पांचमै गुण ठाणै देश विरति सामायक नो लाभ होइ ३. सर्व विरति सामायक ते छठे गुण ठाणा थी मुनि नें होइ ४. एतला मध्ये मुख्य समकित सामायक ते संवर रूप छै तेहनो स्वरूप कहिये छै. जिनवाणी प्रतीते ग्रहीनें प्रत्यक्षे स्वरूप नें वेदे, गुण पर्याय नो विलंछन करे, भेद रूप रत्न त्रय नें आराधै, ते व्यवहार समकित कहिये. तथा गुण पर्याय अभेद रूप रत्न त्रयें द्रव्य द्रव्य रूपें निर्विकल्प समाधि पणें प्रणमै तेहनें निश्चय समकित कहिये. ते आगले व्यवहारे वस्तु समकित नें मेलवै. इति.

१९५. ज्ञान क्रियाभ्यां मोक्षः तत् कथं ? द्रव्य

ज्ञान ते शास्त्रादि पठन रूप. भाव ज्ञान ते आत्मस्वरूप नो जाणवो.

१९६. तेम क्रिया बे प्रकारनी—योग क्रिया ते शुभाशुभ बंध रूप. उपयोग क्रिया ते पोतानें स्वरूपे प्रणमे ने निर्जरा रूप. जोग क्रिया ते जाते आश्रव रूप के बंध नें आपे. अने एहनो जे उपयोग छै ते स्वरूप निर्जरा करें. एतले कर्म ग्रहण त्याग रूप साल्टो पाल्टो छै, पण सर्वथा मोक्ष क्रिया मध्ये नथी. सर्वथा मोक्ष ते उपयोगे छै. ते माटे जे क्रिया करे ते आश्रव रूप, माटे मोक्ष नी कतरणी कही छै,पण मोक्ष ते एह नां उपयोग मांहे छै. इत्यर्थ.

१९७. अथ चौथा कर्म ग्रंथ मध्ये तथा अनुयोग द्वार सूत्र मध्ये नव अनंता कह्या छे, ते मध्ये पाहिलो, बीजो. त्रीजो, ए तीन अनंता ना नाम ए मांहि तो कोई एहवी अनंती वस्तु लघु नथी जे आवे, ते माटे ए तीन अनंता सून्य, एहना स्वामी कोई नहीं. तथा

चौथे अनंते अभव्य जीव आव्या ते माटे चौथा भांगा ना ए स्वामी. पांचमें अनंते मध्य भांगे सम्यक्त्व पडवाई जीव कह्या. वली तेहीज पांचमें अनंते सिद्ध कह्या. पण पडवाइ थी अनंत गुणे अधिका. पण ए सर्व पांचमा अनंता ना स्वामी. तिवार पछी छठे अनंते कोई नहीं. सातमै अनंतै पण कोई नहीं. ए बे अनंता थी संसारी जीव पुद्गल परमाणुआ नो काल सर्व आकाश प्रदेश घणा अनंता, ते माटे बे अनंता नो स्वामी कोई नहीं. शून्य भांगा जाणवा. तिवार पछी ए सर्व आठमे अनंते जाणवा. ते मांही विशेष सर्व निगोदिया वनस्पति कायना जीव आठमै अनंते तेथी अनंतानंत गुणै अधिका पुद्गल परमाणु, ते थी काल, ते थी सर्व आकाश प्रदेश, ते थी केवल ज्ञान दर्शन ना पर्याय, इम एकेक थी अनन्ता गुणाये पण सर्व आठमा अनन्ता ना स्वामी एतले भागे, वस्तु नवमो अनन्त पूरो थयो नहीं. ते माटे ए नवअनंता मांहे तीन अनन्त ना स्वामी कह्या. ए गाथा मांहि

दंडक सुत्र ९८ अल्पा बहुत्व नो द्वार छै तेहनी गाथा १९ मी मध्ये ए तीन स्वामी कह्या. इति भावार्थ.

१९८. तथा सिद्धान्त आगम मांहि प्रथम क्षयो-पशम सम्यक्त पामै, उपशम नो तन्त नहीं. ते श्री जिन भद्र गणी क्षमा श्रमण नी कीधी सम्यक्त पचवीसी मध्ये पहिलो क्षयोपशम सम्यक्त पामै, उपशम नो तन्त नहीं. तथा कर्म ग्रन्थ मध्ये पहलो उपशम समकित पामै. एहवो तन्त छै. त्यार पछी क्षयोपशम सम्यक्त पामै, उपशम नो तन्त नहीं, एहवो आचार्य नो मत छै. अथः त्यार पछी काल सीतरी ग्रन्थ मध्ये कालीकाचार्य तीन जुदा कह्या छै. तथा कल्की थाशे ए अधिकार पण कालसितरी ग्रंथ मध्ये छइ. इत्यर्थ.

१९९. अपरं. तत्त्वार्थ मध्ये इम कह्यु छै पृथ्वी, पाणी, अग्नि, वायु, वनस्पति प्रत्येक एतले स्थानकै एकेकी पर्यांसा निश्रायें असंख्याता अपर्यासा होइ, पण सूक्ष्म निगोदिया पर्यासा नी निश्राइ अनन्ता अपर्यासा

न होइ. ते अनन्ता अपर्याप्ता शरीर जुदा, तेहनो पण आयू २५६ दोसो छपन आवली नो होइ. पण अपर्याप्तो मरै इम न होइ, सर्वे चुल्लक भविया छै. ते माटे तथा पर्याप्ता नुं आयू एतलो, पणै तेतला मांहे प्राप्ती पूरी करीनें मरै. एहवो धार्‌यो छै. तत्वं इति.

२००.व्यवहार राशियो जीव फरी सूक्ष्म निगोद मांहे जाइ तो उत्कृष्टो अढ़ी परावर्त्त पुद्‌गल तांइ रहै.ते क्षेत्रपरावर्त्ति लीजिये. पण सूक्ष्म ने बादर बे मांहि थई नें तथा ते वली प्रथ्वी काय मांहे आवी, वली सूक्ष्म निगोद मांहे जाय तो वली बीजा अढी पुद्‌गल परावर्त्त रहै. उत्कृष्टे वली ऊंचो आवी पृथ्वी पाणी मांहीं आवी वली सूक्ष्म निगोद मां जाय तो तिम जे उत्कृष्टो काल निगोद मंध्ये इम तिर्यंच नी गति बांध्या थी जाइ आवै तो उत्कृष्टे असंख्याता पुद्‌गल परावर्त्त रहै. ते असंख्याता केतले मानें—आवलीनें असंख्यात में भागै जेतला समै असंख्याता थाइ तेतला मानै, असंख्यात पुद्‌गल परावर्त्ते क्षेत्र थी जाणवा.

इम पन्नवणा मध्ये तथा कायस्थि स्तोत्र नी टीका मध्ये कह्युं छे. इति पूर्ण.

२०१. तथा दर्शन नी क्षपक श्रेणी ते चौथा थी मांडी, चारित्र नी क्षपक श्रेणी आठमी थी मांडे.

२०२. कर्म नो बंध जघन्य थी एक समै नो, जघन्य स्थिति तें अंत मुहूर्त तांइ भोगवे. उत्कृष्टे ज्ञानावरणी कर्म नी त्रीस कोडा कोडी. इम ए रीते.

२०३. तथा भव्य अभव्य सर्व जीव सूक्ष्म निगोद थी निकल्या छै, मूल भूमिका ते जाणवी.

२०४. तथा मनोयोग तो जघन्य थी एक समय नो उत्कृष्टो अंतरमुहूर्त नो काल.इम वचन योग नो पण काल ए रीते छै इम धारयुं छुं. इति.

२०५. षट् गुणी हानि वृद्धि द्रव्यनें छै तेहनो स्वरूप यथा श्रुत लिखिये छै. द्रव्य नूं लक्षण स्युं ? ते द्रवाइ ते लेणे ? गुण पर्याय करी द्रवाइ तेद्रव्य कहिंये. तथा द्रव्य ते उत्पादादि, व्यय, ध्रुव तांइ साहित छै. ते द्रव्य

परिणामी छै. ते प्रणामन उत्पाद, व्यय रूप छै, ते जिवारे द्रव्य थी प्रणमन रूप पर्याय छै ते जघन्य, मध्यम, उत्कृष्ट स्वरूपै छै. तिहां षट् गुणी हानि वृद्धि नीपजै ते केम ? संख्यात गुणी वृद्धि, इम असंख्यात गुणी वृद्धि, अनंत गुणी वृद्धि. इम अनंत भागे हानि, असंख्यात भाग हानि, संख्यात भाग हानी हिवै असंख्यात भागे संख्यात, ते व्यय रूप प्रणामन नो स्वरूप. इम उत्पाद व्यय रूपें सिद्धि नें विषे पण इम द्रव्ये द्रव्यत्व प्रणामी प्रणामन आसरी षट् गुणी हानि वृद्धि संभवीए छै. पछैं तो श्रीवीतराग देवें जे कह्यूं ते सत्य. इति.

२०६.बंध ना च्यार प्रकार छै तेहना स्वामी बे,कषाय वर्से तिवारे जीव प्रणमै जिवारे स्थितिबंध अने रस बंध करें, अने केवल योग प्रणामनें आत्मा प्रणमै तिवारे प्रदेशबंध अने प्रकृतिबंध ए बे होय.

२०७.हिवै केवली भगवंत जे साता वेदनी योग

बांधे छै ते किम ? तेहनें कांई शुभ संकल्प रूप व्यापार नथी. जे केवली भगवंत नें एक शुकल लेश्या नो उदै छै ते जोग द्वारें प्रणमैं अने योग नी प्रणमन ते उदये उदयैक भावे जाइ प्रणमैं, पुद्गल नें पुद्गल नो विश्राम तिवारे ते लेश्यायें एक समे एक साता वेदनी नो वंध थाय छे पण उत्तम पुद्गल ग्रहै, बीजे समै वेदें, त्रींजे समै निर्जरै. ए रीते धारूं छूं. इति.

२०७. हिवे चौथे गुण स्थानै सम्यक् दर्शन पामै अनंतानुबंधीया राग द्वेष तथा मिथ्यात्व मोहनो क्षय तथा क्षयोपशम थाए ३.

२०८. अवगुण उदै मांहि थी तथा सता मांहि थी जाइ ते किहां गुणै खार, वैर, नें जहर जायं ? सम्यक् दर्शन गुणै खार जाइ, सम्यक् ज्ञान गुणै वैर जाय, मिथ्यात्व मोह गए तथा चारित्र मोह गए जहर जाय. तथा छठै गुण स्थानै मुनि नें उदय मांहि थी विषय मांहि थी विषय, कषाय, उत्सूत्र, परूपणा, ए तीन अवगुण जाइ. तथा केवली नें राग, द्वेष, मोह गए

तीन अवगुण सत्ता मांहि थी गया तिवारे वीतराग थया. इति भाव.

२०९.तथा आणंद श्रावक नी संधि तपा गछै मुनि श्रीमोहन विजैय नि गाथा ३८१ तीनसो इक्यासी नी छे एक परतमे तो इणीतरे छे वे इण परतमे खर-तर गछै मुनी श्रीसार नो लीख्यो छे ते ३८१ मी गाथा छै ते मध्ये अष्ट प्राति हार्य अधिकारे देवता भा मंडलें किम करे छै ? तत्र गाथा– (तेज अरिहंत नो अति घणो ए. खमी न सकै नर नार । ते तेज लेइ सुर करेए पूठे भामंडल सार ॥ १ ॥) परम उदारिक शरीर ना तेज विशेष छै. ते तेज ना पुद्गल ना संहरीनें प्रभु नें पूठै भामंडल करै. इति.

२१०.तथा आणंद श्रावक नें पांचसे हलवा भूमि मोकली छै ते भूमि नूं मान लिखिये छै. तत्र गाथा– (खेत्र खडुहल पांचसै मुझ नें अविरत एतीरे । घर धरती पण मोकली एकसौ निवरत्ति जेतीरे ॥ १ ॥)

ते निरतीनो अर्थ लिखिये छैः— दशभिः हस्तैरेको-विंश विंशत्या वंशैं एको निवर्त्तनं पंचसते निवर्त्तनै ॥ १ ॥ एकं हल ईदृशी हलं भूमिका । पांच शत भूमि घर धर्ती जाणवी. एतत् भूमिका घर रहवानी हैं ढाकी. पांच सै हल भूमिका हल खडवानी छै उघाडी. इति भाव.

२११.तथा कर्म चतुर्थक तप नी विधि.पूर्व*अष्टमं १ एकांतर चतुर्थ ६० प्रांते अष्टमं इति तपो दिन ६६ पारणादिक दिन ६२ उभय दिने मिल नें दिनें १२८. इति कर्म चतुर्थ. (तपयत वसु देव हिंडो सापउ माअज्जिया उत्तेणा जाए सयासोओकमचउथं उयवणा दुणति रत्ताणि सहि चउथाणिाणि ॥ १ ॥) ते पदमा आर्याई, तेणे आयाईनें समीपे कर्म चउथतप कीधो.

---

* प्रथम एक अटम करी पछी एकान्तरे साठ उपवास करीने पछी छेवटु एक अटम करी जेटले त्रण उपवास करी पारणु करीयें ते बारें [illegible] उपवास तने [illegible] मळी चार मांस ने आठ दीवसे ते तप पुर्णथाय छे.

इति शान्तिनाथ ना भवाधिकारे छे. इंदुखेण बींदुखेण भवाधिकारे गाणिका नें भवे तप कीधो इति.

२१२. तथा धर्म चक्रवाल तप नी विधि— अठम १ एकंतर चतुर्थं ३७ प्रांते अष्टमं इति * धर्म चक्र वाल. अथवा प्रथम षष्टं तप एकांतरोपवास ६० इति प्रकार द्वयेन धर्म चक्र वाल तपनी तत्र प्रथम प्रकारे दिन सर्वांग्र८२ द्वितीय प्रकारे दिन सर्वांग्रे १२३.

२१३. तथा शान्तीनाथ चरित्राधिकारे तीर्थंकरनी माता १४ चवदा सुप्न मुख मांहे पैसता देखै यतः—चतुर्दश महा स्वप्नात् सुख सुप्ता तदाच सा मुखे प्रविशतो अपस्यत्. तव तस्या कारिधारिणा इति उत्तरा॰ भावविजै टीका मध्ये श्री शान्तिनाथ चरित्राधि कारे कह्युंछै.

२१४. आवश्यक चूर्णौवृत पंचा सक्क वृत्तौ योग शास्त्र व्रत्तौ नव पद प्रकरण वृत्तौ श्रावक दिन कृत

---

* प्रथम एक अठम करी पछीसात्रीश एकान्तरे उपवास करवा अने छेहडेपण एक अठम करवु एम ४३ उपवास अने ३९ पारणामली ८२ दिवसे तप पूरण थाय.

वृत्ती श्राद्ध विधि प्रमुखे प्रथम सामायकं पश्चात् इर्यापथी-
की श्रावक नें दिग् वृत्त होय पण साधु नें नहीं, मेरु
रुचिक जात्रा माटें.इत्यर्थ.

२१५. तथा उद्वेगता १, अथिरता २, असाता ३,
आकुलता ४, च्यार प्रकारना दुःख किहां कर्म थी उपजे
इति प्रश्नः—उद्वेगता ते अज्ञान मिथ्यात्वी ना घर थी
उपजे १. असाता ते वेदनी कर्म ना उदय थी निपजे २.
अवरति ना घर नी घणी आकुलता चारित्र मोहनी कर्म
ना उदे थी उपजे ३. अथिरता ते वीर्यंतराय ना घर
थी उपजे ४. इति.

२१६. तथा दातार दान आपे तेहना ४ च्यार
भेद छै. अपात्र १ पात्र २ कुपात्त ३ सुपात्र ४. ते मध्ये
अपात्र स्वानादि पशु नें आपे तथा बंदीवान नें आपवो
ते अपात्रदान, तेहना फल इह लोक यश प्रतिष्टारूप
लवलेश फल १. तथा वैरागी कापडी इत्यादि अन्य
दर्शनी भिक्षुक नें आपे ते कुपात्र दान, कुत्सित पात्र

कहिये. तेहना फल परभवे राज्यादिक सुख पामी ने पापानुं बंधी पुन्ये संसार घणो बधारै, कुगति दल मेलवै २. तथा पात्र ते सम्यक् दृष्टी देशविरति साधर्मी नें पोषवो ते पात्र दान, तेहथी पुन्यानुबन्धी पुन्याइ उपार्जि नें भव तुच्छ करै, संसार घटाडी नें वहिलो सिद्धि वरें ३. तथा सुपात्र दान साधु चारित्रीया तथा गणधर तीर्थंकर नें अन्नादिक ना दान दे तो महा पुन्या नुं बन्धी पुन्याई उपार्जि नें थोडा भव मांहि सिद्धि वरें, सुबाहु ऋषि तथा धना शालभद्रादिक नी परें वहिला सिद्धि वरें. ४ ए पात्र कुपात्र अपात्र सुपात्र दान ना भेद जाणवा. ए भाव.

२१७ तथा छः कायना नाम गोत्र जाणवा रूप लिखिये छे. इंदी थावरकाए १ बंभी थावरकाए २ सीपी थावरकाए ३ समुई थावरकाए ४ आवसी थावरकाए ५ जंगम थावरकाए ६. तथा गाथा— (इंदी बंभी सीपी समुई आवस्सी पांच काए। जर रत्त सेय हरिया बहु वन्ना हुंती पंचमीया ॥१॥) तत्र इंदीथावर कायनुं ४

पृथिवी काय गोत्र, पीत वर्ण, पुढविना जीव, इंद्र देवता १. बंभी थावरकाय नो अपकाय गोत्र, रक्त लाल वर्ण, ब्रम्ह देवता, अपकाय ना जीव २. सीपी थावरकाए नाम, तेहनो गोत्र तेऊ काय, श्वेत वर्ण, सिल्प देवता, तेऊकायना जीव ३. समुईया थावरकायए नाम, तेह नो गोत्र वायु काय, हरित वर्ण, समुद्र देवता, वायुकायना जीव ४. आवस्स थावरकाए नाम, वनस्पति-काय गोत्र, नाना वर्ण, पाताल देवता, वनस्पतिनाजीव ५. तथा जंगम ते त्रस काय कहिये. ए छः काय ना नाम गोत्र जाणवा. जेम सात नर्क ना नाम गोत्र छे तेम ए पण जाणवा. ए भाव.

२१८-हिवे दस प्रकारे सत्य कह्युं छे तेह नी गाथा— जणवय समय ठवणा नामरूवे पडुच्च सच्चेय व्यवहार भाव योगे दसमेउ वम सच्चय ॥१॥) ए गाथा ठांणांगे छे.

२१९. हिवे पंचेंद्री ना २५२ दोसो बावन भेदे जीव नें कर्म बन्ध होइ एतला विकारहोइ ते लिखिये

छैः- पहिलो कर्णेंद्री ना भेद १२बार ते किम होइ? सचित शब्द सूडा, मयूर, कोकिला प्रमुख ते१. अचित शब्द मृदंग, ताल प्रमुख २. मिश्र शब्द पुरुष तथा स्त्री ते मांहि वस्त्रादिक वांश्रि भेरी प्रमुख ते३. ते शुभ अशुभ भेद छःते छः भेद रागै अने द्वेषै एवं १२ भेद श्रोतेंद्री ना विषयविकार जाणवा ४.

२ हिवै चक्षु इंद्री तेहना ६० साठ विकार जाणवा ते किम ? वर्ण पांच ते बिहुं प्रकारै शुभ अशुभ, शुभ ते रत्नादिक, अशुभ वर्ण कैशादि एम १० दस भेद. ए सचित रत्नादि अने अचित गुली प्रमुख मिश्र स्त्री पुरुष प्रमुख भेदैं त्रिगुण करतां३०तीस भेद थाइ. ते रागै अने द्वेषै इम बमणा करतां ६० साठ थाइ४.

३ घ्राणेंद्री तेहना१२ बार भेद. गन्ध बेहु प्रकारे——सुरभिगन्ध,दुरभिगन्ध, सचित पुष्पादि शुभ अशुभ लक्षणादि. अचित कस्तूरी प्रमुख शुभ, अचित विष्टादिक प्रमुख अशुभ, मिश्र पदमनी स्त्री

प्रमुख, अशुभ संखणी स्त्री प्रमुख. इमद् छः भेद ते राग अने द्वेष करी १२ बार भेद थाइ.

४. जिव्हा इंद्रीना ७२ बोहतर भेद इम जाणवा. रस ५ ते शुभ अने अशुभ करतां १२ बार भेद नें ते सचित्त, अचित्त, मिश्र करतां ३६ छत्तीस भेद थाइ. ते राग नें द्वेष करतां ७२ भेद थाइ.

५. स्पर्शन इंद्रीना ९६ छन्नु भेद ते किम ? स्पर्श आठ—हलुवो स्पर्श अर्क तुल्य १. गुरु स्पर्श वज्रादिक २. मृदु स्पर्श हंस रूप स्पर्श प्रमुख ३ खर स्पर्श करवत धारा गोजिव्हा प्रमुख ४, शीत स्पर्श हेम प्रमुख ५. उष्ण स्पर्श अग्नि प्रमुख ६, स्निग्ध स्पर्श घृतादि ७, लूखो स्पर्श राखादि ८. तेहना तीन प्रकार सचित्त, अचित्त, मिश्र. सचित्त पुष्पादि, अचित्त आभरण प्रमुख, मिश्र स्त्री पुरुष. इम आठ ने त्रीगुणा करता २४ चौवीस भेद. ते शुभ नें अशुभ करतां ४८ अडतालीस थाइ. ते राग अने द्वेष करतां ९६ छन्नु भेद. सर्व

संख्या २५२ भेद जाणवा. इम श्रोत्रेंद्रीना १२ विकार, चक्षु इंद्रीना ६०, नासिकाना १२, जिव्हा ना ७२, स्पर्श इंद्रीना ९६, इम सर्व मिली २५२. एतलें पांचेंद्रीना विषय २३, अने विकार ते २५२ भेदे जाणवा. इति विषय विकार संपूर्ण.

२२०. शब्दादि इंद्री नो विषय कहै छै. भाष्यकताह—(बार सहितो सुतस्सेसाणं नव हीं जोइणे हिंतो। गिणत्तो पत्तमथं ए तो परतो नगिणंति ॥१॥) चक्षु नो एक लाख योजन विषय कह्यो छै. तथ कानना बार जोयण इत्यादिक कह्यूं छै. जोयण आत्मांगुल प्रमाणे च्यार गाऊ नो जाणवो. तथा सूर्य नो बिंब तो आत्मांगुल प्रमाणै घणा लाख योयण थाई. ते माटे एतलो चक्षु नो विषय नथी तो सूर्य नो बिंब किम देखै छै? ततोत्तरं—सूर्य नो विमान तो देवकाय एक योजण ना एक सढी या अडतालिस भागनो छै. तेहना आपणा गाऊ १३०० तेरासो

नें आगले मोटा विमान छै. ते सम्पूर्ण ते वडो मानवी नी दृष्टे नथी आवतु. पण तेह ना विमान ना तलिया नो तेज नो आभास मान झलक कांति दीसे छे पण सपूर्ण विमान जेवडो छे तेहवो दृष्टे न आवे, ते माटे आत्मांगुल प्रमाण नो लाख योयन विषय कहिये. इम शब्द नो विषय पिण स्हडो गाज्ये, तेहनें श्रोत्रेंद्री नो भलो क्षयोपशम होय ते सांभले, इम नव योजन आव्या वायु नें योगे खाटा खारा पुद्गल नु जिव्हा इंद्री से ग्रहण थाई इम नासिकाये वायू योगे आव्या नव जोयण सुरभी दुरभी जे ग्रहण थाई. इम स्पर्श इन्द्रीयें नव जोजन ना वायू योगे आग्रहण थाद पण ते सर्व जोयण आत्मांगुल प्रमाण गाऊ ४ जाणवा. तत्र गाथा— (पुठं सुणेइ सदं रूद्द पुण पासई । अपुठंतु गंध रसंच वर्थ फासं पुठं वियागरंति ॥) तथा चक्षु इंद्री नो आकार मसूरनी दाल जेहवो छे, श्रोतेंद्री नो आकार आगथीया वृक्ष ना फूल जेहवो, तथा नासिका नो आकार तिलनां फूल

सारीखो, तथा रसेंद्री नो आकार छरपलो तथा कमल ना पत्र सरीखो, फरसेंद्री नो आकार अनेक प्रकारें छै. इम साधु ने पंचेंद्रीय ते आकार रूपै छै. पण विकार रूप नथी. ते माटे पंचेंद्री ना विषय विकार दमै ते मुनीनें पण वीतराग रूप कहिये. इति.

२२१. पुनरपि पंचेंद्रां ना द्रव्य भाव रूपै कहिये छै. श्रोत्रेंद्री बेहु प्रकारे-द्रव्य अनें भाव. तिहां द्रव्य इंद्री बेहु प्रकारे—सूक्ष्म नें बादर. बादर ते बाहिरै दीसै, सूक्ष्म ते कर्ण मांहि विषय ग्रहण व्यापारें, जघन्य थी अंगुलनो असंख्यातमो भाग, उत्कृष्ठै १२ जोयण नो विषय. इम सर्व इंद्री नें विषय जघन्य थी अंगुल नों असंख्यातमो उत्कृष्टो विषय जिम पुर्वे कह्युं छै तिम जाणवो.

२२२. हिवै भावेंद्री ते जीवनें दर्शनावरणी कर्म क्षयोपसमै शब्द रूप रस गन्ध स्पर्शे लेवानी शक्ति उपजै ते उपयोगै भावेंद्री कहिये. अने आकारे द्रव्य इंद्री

ट्रिय इति पन्नवणा सूत्र मध्ये इंद्रीपद मध्ये छे तिहां विस्तार जाणवो. इति.

२२३. तथा सिद्ध थयानो पण विचार श्रीपन्नवणा सूत्र मध्ये कह्यो छे. मनुष्यथकी सीझे तेहने आठ इंद्री. मनुष्यथकी मनुष्य थइ सीझे तेहने १६ सोलेंद्री, तिर्यंच थकी तथा पृथ्वी थकी मनुष्य थइ सीझे तेहने १७ इंद्री, तथा देवता थकी पृथिवी थकी मनुष्य थई सीझे तेहने ७ इंद्री. पृथिवी पाणी वनस्पति मांहि थी मनुष्य थइ सीझे तो ५ इंद्री. इम सर्व विचार पन्नवणा मध्ये कह्यो छे. पण एहनो अर्थ आमनाय गुरु गीतार्थ पासे थी लियो. इति.

२२४. अथ आत्मांगुल १ उत्सेधांगुल २ प्रमाणांगुल ३ तीन नो मान गाथा थकी जाणवो (उस्सेहंगुल मेगं हवइ-पमाण गुलं सहस्स गुणं । तंचेव दुगणीयं खलु वित्थारंगुलं भणीयं ॥ १ ॥ आयंगुलेणं वथ्थु उस्सेहं पमाणंतु मिणसुदहं । नग पुढवी विमाणाइं मिणसु पमाणं गुले-

णंतु ॥ २ ॥) इति आव० निर्युक्तौ उक्तं इति.

२२५.तथा मति ज्ञान ना २ बे भेद,—श्रुत निश्रित १ अश्रुत निश्रित २. ते मध्ये श्रुत निश्रित ना ४ च्यार भेद—उवग्रह १ इहा २ अवाय ३ धारणाय ४. उग्रह ना २ बे भेद—व्यंजना अवग्रह १ अर्थावग्रह २. व्यंजना वग्रह ना ४ भेद——परसें १ रसें २ घाणें ३ श्रोत्रें ४. अर्था वग्रह ना ६ भेद——पांचें इंद्री. अने छठो मन. इम छचोक चोबीस. अने व्यंजनावग्रह ना ४, इम इहा अवाय धारण करतां एवं २८. इम एकेक ना १२ भेद थाइ. बहु १ अबहु २ बहु विध ३ अबहु विधादिक १२ भेद, तिहां अनेक जीव वाजित्र शब्द ना शब्द सांभलैछै, ते मध्ये क्षयोपसमिक विचित्रताई करी कोई जीव घणा शब्द ग्रहै ते बहु १. कोइक थोड़ा ग्रहै ते अबहु २. कोई एक शब्द ना तार मांडे इत्यादिक घणा विशेष जाणै ते बहु विध ३. कोईक थोड़ा विशेष जाणै ते अबहु विध ४. कोईक तुरत ग्रहे ते क्षिप्र ५. कोईक ससते ग्रहै ते चिर कहियें ६. कोइक धुमादिक

न्हिंगे करी आगादिक जाणे नेमलिंग ७. तथा ते लिंग विना जाणे ते अलिंग ८. संदेहालो जाणे ते संदिग्ध कहिये ९. संदेह रहित ते असंदिग्ध १०. कोईक वेला कह्युं ते बीजी वेला अण कहे जाणे ते ध्रुव ११. कोईक वारवार जणावे ते अध्रुव १२. इम अवग्रहादिक २८ भेद ते १२ वार गुणा करतां ३३६ भेद थाइ. एतला श्रुत निश्रित नां भेद. तथा अश्रुत निश्रित ना ४ भेद—उत्पातकी बुद्धी १ विनयकी बुद्धि २ कर्मीया ते कार्मण बुद्धि ३ परिणामीया परिणामिक बुद्धि ४ एवं च्यार. इम श्रुत निश्रित अश्रुत निश्रित सर्व मिली मति ज्ञान ना३४० भेद कर्म ग्रन्थ नि टीका मध्ये कह्या छे. इत्यर्थ.

२२५. तथा पन्नवणासूत्र ना छट्ठा वक्रांति पद मध्ये एम् छे जे योनिपी देवता मांहि समुर्छिम मनुष्य असन्नीयो तथा तिर्यंच असन्नीयो समुर्छिम असंख्याता वर्ष नां आयुष नां युगलिया पंखी तथा अंतरद्वीप ना युगलिया मनुष्य एतला मांहे थी आवतो ने योनिपी

देवता पणै न उपजै. इत्यर्थ.

२२७. हिवै पांच लब्धि नो भावार्थ लिखिये छै. प्रथम काल लब्धि१ इंद्री लब्धि २ उपदेश लब्धि३ उपशम लब्धि ४ प्रयोगता लब्धि ५. ए पांच लब्धि पामै तिवारे जीव आत्मबोध समकित धर्म पामै. ते मंध्ये३ तीन लब्धि पहली पाम्या पछी छेहली एकठी एक समै प्रगटै. ते मध्ये काल लब्धि ते यथाप्रवृत्ति करण थये आवै. सात कर्म नी थिति सात कोडा कोडि सागर नी थितै आणै,एतले ज्ञानावर्णी कर्म नी थिति ३० कोडा कोडी उत्कृष्टे हती ते अकाम निर्जराई औछी करै तो२९कोडाकोडी घटाडी नवि अणबंध तो एक कोडा कोडि मांहि आणी मूकै. इम७ सात कर्म नी जेह नी जे स्थिति उत्कृष्टी छै * ते मांहि थी सर्व घटावै तो एक

* ज्ञाना वार्णि १ दर्शना वार्णि २ वेदनि ३ अन्तराय ४ ये च्यार कर्म नी उतकृष्टिस्थिती ३० त्रीश कोड़ाकोड़ी नी, अने नाम कर्म १ गौत्र कर्म २ ये वे कर्म नी उतकृष्टिस्थिती २० वीस कोड़ाकोड़ी नी छै, अने मोहनी कर्म नी उतकृष्टस्थिती ७० सितर कोड़ाकोड़ी नी छै, ते ७ सात कर्म नी उतकृष्टस्थिती मांहे थी सर्व खपावै, बाकी एके एक कोड़ाकोड़ी नी राखे.

कोडा कोडी रहे. इम आयु वर्जिनें सात कर्म नी स्थिति सात कोडा कोडी सागर मांहे आणे त्यारे, काल लब्धि जीव पाम्यो, पण इंद्री लब्धि जे पंचेंद्री पणो संज्ञी पणो न पाम्यो. काल लब्धी थि एकेंद्री विगलेंद्री पणो पाम्यो ते काम न आवे. इम भव नी परम्पराइ थिवारे अकाम निर्जराइं ऊंचो आवे, पंचेंद्री संज्ञी पणो पामे. तिवारे इंद्री लब्धि पाम्यो, पण काल लब्धि न पाम्यो. इम भवनी परम्पराइ कोई जीव नें काल लब्धि न पामे. ते जिवारे जीव नें भव थिति पर्टे, सातें कर्मनी थिति एक कोडा कोडी मांहे आणे एहवा उत्कृष्ट यथाप्रवर्त्त करण चरमावर्त्तन आवे जो जीव पाछो नहीं पडे, संसार वधारे से नही, एहवा जीव ने काल लब्धि पाम्यो इंद्री लब्धि पामी नें उप-देश लब्धि पामी तीजी त्यारे गंठी भेद करे. ते समे तिहां उपशानता लब्धि पामे तिवारे, उपशम भावे वर्त्तो अपूर्व करण बीजो पामे. तिवारे दुर्भेद जे गंठी भेद नें भेदे तिहां चोथी लब्धि पाम्यो. तिवार

पछी अनिवृत्तिकरण अंतर करणे वर्त्ततो जीव प्रयोगता लब्धि पामै. तिहां वीतराग धर्म रुचि प्रतीतात्मक धर्मे शुद्ध श्रद्धानें आत्म स्वरूपनो दर्शण, ज्ञान, स्वरूपाचरण रूपैं समकित पामै. इम संमी लब्धि सम्यक् दर्शन पामै. इति नियमसार ग्रन्थे कह्यू छै तिहां थी ए लब्धि ना भेद किंचित लिख्या छै. इति.

२२८.हिवै उद्धार पल्योपम,अनें एक अद्धा पल्योपम, एक क्षेत्र पल्योपम एतीन नो स्वरूप लिख्यते. ए तीन ना सुक्ष्म अने बादर ए बे भेद करतां छः भेद थया. तेह नां मान अनंता सूक्ष्म परमाणु आनो एक व्यवहारिक परमाणु तेणे आठै त्रसरेणु,८ ऊर्धरेणु, ८ रथरेणु, ८ उत्तर कुरू युगलीया ना वालाग्रे. ८ महा हिमवन्त क्षेत्र युगलिया, ८ हिमवंत क्षेत्र युगलीया, ८ महा विदेह नर वालाग्र, ८ भरत नर वालाग्र,८. लीख ८, जूय ८, जवमध्य ८, अंगुले. इम प्रत्येकैं आठ गुणा करे तिवारे उच्छेद आंगुल. तेणैं चोबीस आंगुले हाथ. चऊ हाथे धनुष. तथा बे हजार

काल इम एणें सूक्ष्म अद्धा पल्योपमे करीने देवता नारकी तिर्यंच, मनुष्य आयु मान, कर्म स्थितीमान, काय स्थिती मान, काल मानादिक लेवो ४. तथा ते बालाग्र खंड भस्था पल्य मांहि थी कल्प वालाग्रे स्पर्शे जे आकाश प्रदेश ते मांहि थी एकेके आकाश प्रदेश समय २ काढतां जिवारे सर्व वालाग्र स्पर्श प्रदेश निर्लेप होइ तिवारे बादर क्षेत्र पल्य थाइ ५. अने जिवारे ते पल्य ना आकाश प्रदेश कल्पा सर्व स्पर्शी थाते समै२ एकेक काढतां जिवारे निर्लेप थाइ तिवारे सूक्ष्म क्षेत्र पल्योपम थाइ ६.एणे करि दृष्टिवाद मध्ये एकेंद्री अथवा त्रसादिक जीव नो प्रमाण कीजीए असंख्याता उत्सर्पणी प्रमाणें.इम तीन२ सूक्ष्म पल्योपम शास्त्र नें विषे उपयोगी होय.३ तीन वादर कह्या ते सूक्ष्म नो सुक्ष्माव बोधार्थे. इहां प्राई घणो अद्धापल्यौपम प्रयोजन छै. इम कोडाकोडी सागरो पमे एक काल चक्र तेणे अनंते काल चक्रे पुद्गल परावर्त्त होइ, ते आठ प्रकार नो छै तिहां थी जोयो. अस्य गाथा– (उद्धार अधारि

जाई ? बसौ तेतीसमो प्रश्नः—तत्रोत्तरं. दस १० दंडके जाय ते किहां ? पांच ५ थावर मांहे, त्रण ३ विगलेंद्री मांहे, एवं आठ पंचेंद्री मनुष्य तथा पंचेंद्री तिर्यंच मांहि जाय पण युगलियो न थाय. तथा ए दस दंडक मांहि तेउ,वाउ ए२बे दंडक वर्जी नें बीजा आठ दंडक ना आव्या समुर्च्छिम मनुष्य थाइ इति.

२३४.तथा देवता नारकी नें छमास थाकतो होई त्यारें परभव नो आयु बांधै. तथा निरुपक्रमी आयुवालो पृथवी कायओते त्रीजे भागै एतले बे भाग पहिला मूकीने त्रीजे भागै रहै तिहां पर भवनो आयु बांधै.जीव नें पर भव नो आयु बांधता अंतर्मुहूर्त्त थाय तेतला मांहे तीन आकर्ष करे. जिम गाय पाणी पीती विसामै २ पीये तेम जीव पण आयु कर्मना पुद्गल नें लेई आकर्षी बांधै. इति.

२३५. हिवै आकुटे, प्रमादे, दर्पे,कल्प, कर्म बंधाइ तेह शब्दार्थ कहै छै.आकुटिकया अनाभो, तथा उपेत्य सावद्यकरणोत्साहोत्मिका १. दर्पोधावनरे पनव

गानादिक हास्यजन किंवा नाट्यादिकंदर्प रूपो वा २. प्रमादे गामी क्रिया प्रति लेखना प्रमार्थ ना घनुप-युक्त ३. करण कारणें दर्शनादि चतुर्विंशति रूपेलती शिरालम्ब कृत योगिनोपयुक्त्या अयततनथी अधा कर्मादा ज्ञान नुरूपा ४. इति.

२३६. हिवे पांच किया मांहि जीव अल्पा वहुत्व किस तरह इति प्रश्नः—पांच क्रिया मांहि सर्व थी थोड़ा जीव मिथ्यात्व क्रियावाला. तेह थी अपचक्खाण क्रियावाला असंख्यात गुणा अधिका समकित मांहे गण्या ते माटे, तेह थी परिग्रहनीक्रियावाला असंख्याता गुणा देशविरति मांहि गण्या ते माटे, तेह थी आरंभ की क्रिया वाला तेह थी घणा संख्याता अधिका छे [illegible] कृत्य वाला मुनि भेले ते माटे, तेथी माया-वत्ति क्रिया ना धणी संख्यात गुणा अधिका ते सघला [illegible] मुनि घणा. ए भाव पन्नवणासूत्र मध्ये छे. इति.

२३७. हिवे लेश्या ने देवता आश्री अल्पा बहुत्व कहे

छै. सर्व थी थोड़ा देवता शुक्ल लेश्या, तेथी पद्म लेश्या असंख्यात गुणा अधिका, तेथी कृष्ण लेश्या असंख्याता अधिका, तेथी नील लेश्या ना असंख्याता गुणा अधिका, तेथी कपोत लेश्या ना असंख्यात गुणा, सर्व थी अधिका तेजो लेश्या ना ज्योतिषी देवता असंख्याता माटे. ए विशेष जाणवो. इति.

२३८. मोप्रश्नः—तथा सोपक्रमी आउखावालो जीव आयु पूरूं भोगवी मृत्यु पाम्यो, तेहनें अकालें चेवजीवियाओ विवरोविया थयो ते किम्? यथा दृष्टान्ते कोईक चोरनें राजाइं हण्यों तिवारे ते जीवें सर्व आयु कर्म ना दल हता ते आत्म प्रदेशे भोगवी आयु कर्म बांध्यो हतुं, एतले पूरो भोगवी चाल्यो. तथा काल आसरी अकालें मूओ जे माटे सुखे समाधें विपाक वेदना वेदी ने जीव चालतो ते थोड़ा काल मध्ये प्रदेश वेदन वेदी ने चाल्यो ते माटे अकाले मुओ कहिये एटले प्रदेश वेदन आसरी आयु कर्म बंध्यु हतुं तें संपूर्ण भोगव्युं. अने विपाक वेदना आसरी थोड़ा

काल मांहे मृओ ते माटे अकाले मरण कहिये. इति.

२८१. अथ कल्यादिक गाथा लिख्यते—जो भणाई नत्थि धम्मो न सामाईयं चेव वयाई, सो समण संघ बज्झो कायव्वो समण संघेण ॥ १ ॥ अट्ठारस पुरसेसुं वीसं इत्थिसु दसनपुंसेसु । जिण पडी कुट तिथयो एए पव्वा ये उन कप्पंति ॥ २ ॥ बाल वुढे नपुंसय कि लीबेय जड्डेय वाहीएसेणं गयचमारिय उमत्तेय अदंसणे ॥ ३ ॥ दास दुष्ठेयमूढेय अणिते जुगणईय अविबन्ध एयाभिग्ग सेहे नी पडीयाइयंसी ॥ ४ ॥

२९०. एतला ने दीक्षा देवी न कल्पे. आहार भय परिग्गह मेहुन्नकोहमाण मायाए । लोभेओघेलोगे दस सन्नाउंनि सव्वेसि ॥ १ ॥ सुह दुह मोह संन्न विति गिच्छा चउदसनेगुणे यव्वा सोके तह धंम सन्ना मिलियाउंनि सणु सनु ॥ २ ॥ रुपाण जलाहारो मोहो सीया भएणं संकोई नियतंतु पुडिवेपुई लस्यो कहि परिग्गहेणं ॥ ३ ॥ इच्छि परिरंभणेणं कुरुवक

तरूणो फलंति नहुअन्नो।तह कोहनह साकन्दो हुंकारो मुयइ कोहेणं ॥ ४ ॥ मांणें रू इरोवंति छाय बल्लि पल्लाइंमायाए । लोहे विल्ली पलासाखवंति मूले हाणुं चरि ॥ ५ ॥ रयणीए संकोओ कमलाणं होय लोक सन्नाएउ हेवई उत्तमंगंचडंति रूषे सुवल्लिओ ॥ ६ ॥ इति दस संज्ञानां उदाहरणं इति.

२४१. हिवै १८भाव दिस्या तथा १८द्रव्य दिसा ना स्वरूप लिखिये छै. तत्र गाथा—(तिरिया मणुया काया तह अगावीयाय चुक्कगाए । चउरो देवायन रईया अठारस भाव रासीओ ॥ १ ॥) अस्यार्थः— च्यार तिर्यंच नी ते केही ? बेंद्री, तेंद्री, चोरेंद्री, पंचेंद्री ए च्यार. तथा च्यार मनुष्य नी ते केही ? समुर्च्छिम मनुष्य १ कर्मभूमिजा २ अकर्मभूमिजा ३ अन्तरद्वीप ना ४ ए च्यार. हिवै वनस्पति ना ४ भेद ते किहा ? अग्रबीज वनस्पति १ मूल बीज वनस्पति २ पर्व बीज वनस्पति ३ स्कन्ध बीज वनस्पति ४. हिवै ४ काय ते केही ? ते पृथ्वीकाय १ अप्प काय २ तेउ काय ३ वाउ

पर्याप्ता च शरीरं भविष्यति किं प्राग भिहितेज शरीर नाम्नानें तदास्तिस्याध्य भेदा। तथा जयसोमबाला बोध नें विषें लिख्यूं छै.

२४४.हिवै प्रर्याप्ति नाम कहै छै. जे कर्म ना उदय थी आरंभी पर्याप्ति करयां विना न मरे ते पर्याप्त नाम कर्म. तेणैं एकेंद्री नें ४.विगलेंद्री तथा असनीय पंचेंद्री नें भाष्या होइ ते भणी पांच. ५. संनीयां पंचेद्री नें मन होइ ते भणीछै ६. पर्याप्ति उत्पत्ति प्रथम समय थी आरंभी पर्याप्ति पूरी करयां विना न मरे, पूरी करी नें मरे पण अधूरीयें न मरे ते लब्धि पर्याप्तो कहिये. तथा करण कहतां शरीर इंद्री पर्याप्ति पूरी नथी थई तिहां लगी तेहने करण अपर्याप्तो कहिये. अथवा जे जे परयाप्ती पूरी थई नथी ते तेहनी अपेक्षा ये करण अपर्याप्तो कहिये. पूरी करी तेहनी अपेक्षाये परयाप्तो काहिये. अने कर्म ना उदय थी आरंभी पर्याप्त पूरी करया विना मरै ते लब्धि अपर्याप्त नाम कर्म.तिहां पर्याप्ति कहतां पुद्गल ना उपचयथी थयो पुद्गल परिणाम ना हैतु.

तदप गमानं तरं चोत्पादात् छन्न नि तिष्ठति नि छन्न स्थ ।

२४७ हिवै मुनि नें छठा गुण ठाणा थी सातमा ने पहिले समये केतली विसूधता होइ ते बैसो सैंतालीस मों प्रश्नः-आत्माना असंख्याता अध्यवसाय ना थानक कह्यां ते किहां ? ते कषाये किधा लोकाकास ना प्रदेश प्रमाणै एक आत्मा ना असंख्याता प्रदेश छै तेमाटे अप्रमत्त मुनि नें छठा गुणठाणा थी चढतो सातमानें प्रथम समये जेतली विशुद्धता छै तेथी बीजै समये अनन्त गुणी विशुद्धता छै ते किंम ? जे आत्मा नें अप्रमत्तता नी निर्मलताइ करीनें कर्म नी वर्गणा अनंती ओछी करै छै तेतली आत्म ज्ञाननिर्मलता थाइ तेणी अपेक्षाइं अनन्तगुणी विशुद्धता छै. इम समय समय कहिये. इति भावार्थ.

२४८ हिवै आहारक आहारकमिश्र जीव किम करै. इती बेसौ अडतालीसमो प्रश्नः— जीवारैं पुर्व

थानिके सर्वे जीव अणाहारी होय, आहार ग्रहण उदारिक वैक्रिय नी मिश्रता मिलै तिहां होइ इत्यर्थः

२५१. तथा अंतर्मुहूर्तना आयु वालो तिर्यंच पंचेन्द्री असनीओ मरीने युगलीओ पंचेन्द्री तिर्यंच न थाइ. अंतर्मुहूर्त उपरांत नो होइ ते उपजे. पण अंतर्मुहूर्त २५६ आवल नुं नहीं, एतले मोटो अंतर्मुहूर्त जाणवो. इत्यर्थः—

२५२. तथा परमात्म प्रकाश ग्रंथै आत्मा ना तीन प्रकार कह्या छै. बहिरात्मा ते मिथ्या दृष्टी जीव १. अंतरात्मा ते सम्यग दृष्टी चौथा गुण ठाणा थी बारमा सुधी २. परमात्मा ते तेरमा चउदमा वाला केवली भगवंत जाणवा ३.

२५३. तथा तीन प्रकार ना पुद्गल प्रणमै छै-विश्रसा परिणामै १. प्रयोगसा परिणामै २. मिश्रसा परिणामै ३. विश्रसा ते स्वभावे कोई निमित्त पामी तदाकार थाई, इंद्र धनुषादि अभ्रादि वत् १. प्रयोगसा ते

जीवा न पावंति॥१॥अखंडिय चरित्तो वय ग्रहणा उजी यगिदथो इति तस्ससगासे दंसण वय गहणं सोहिगहणं ॥ २ ॥ कच्छ्य जीवो वालिओ कच्छाय कंमाइहुंति वालियाइं । जीव समय कमंस्सस पुव्वनिबेधाइ ॥३॥ कालसाहवो नियई ३ पुच्छकयं ४ पुरस्सकारणं॥५॥ एगंतिमिथतं ते चेव श्रोसमासञ्रो हुंति मत्तं ॥ ४ ॥ नवहिं जीव बहण करणं करावण अणुमोइयजोगें हि।कालति संमत्त एही गुणिए पाणी बह दुस्सय ते यालो ॥ ५ ॥

२५६.अस्यार्थः–साधु ने पहिलाव्रत नां नव कोटि पचक्खाण छै पण तेहना भांगा२४३थाइ ते किम? मन वचन कायाइ करवो, करावबो, अनुमोदवो इम एक काय जोगे ९ थाइ, इम वचन योगे ९ थाइ, मन योगे ९ थाइ. इम २७ करवाना, २७ करावबा ना, २७ अनुमोदवानें त्रिषैं निषेधें इम ८१ थाइ. त्रेणें काले त्रिणें गुणीइं त्रिगुणा करतां २४३ भेदे साधु नें पच्चक्खाण होइ, जाव जीव लगे. इत्यर्थ,

मांहे न आवै ते माटै बादर सूक्ष्म कहिये. ३. चोरिं-दिया कहतां नयन विना बाकी च्यार इंद्रीये ग्रहीए ते सूक्ष्म बादर पुद्गल कहिये. श्या माटै ? जे गन्ध, रस, फरस, शब्द ना पुद्गल आवता न देखिये ते माटै सूक्ष्म, अने गंधे रसे फरसे शब्द जाणिये तै माटे ए ज्ञातिना पुद्गल नैं सूक्ष्म बादर कहिये ४. कम-पाउगा कहतां पांचमा पुद्गल ते कर्म नी वर्गणाना ते दृष्टे न आवै ते माटै चोफासिया सूक्ष्म पुद्गल कहिये ५. छठा सूक्ष्म सूक्ष्म ते कम्मातीया कहतां कर्मातीत एक छूटो परमाणु पुद्गल ते सूक्ष्म सूक्ष्म कहिये ६. ए रीतें छः प्रकार ना पुद्गल संसार मध्ये व्यापी रह्या छै जिम छ कायना जीव व्यापी रह्या छै तिम ए जाणवा. इति.

२५८. ज्ञाना वर्णादिक कर्म नो बन्ध उदय उदी-रणा सत्ता केतला गुण ठाणा ताइं होय तेहनो विवरो लिखिये छै. ज्ञानावर्णी कर्म नो बन्ध गुण ठाण १० मा ताईं. दर्शनावर्णी नो बन्ध दसमां ताईं. वेदनीनो बन्ध

गुणठाणा १३ मां तांई. गोत्र कर्म उदीरणा गुण ठाणा १३मां तांई. अंतराय कर्म उदीरणा गुण ठाणा १२ मां तांई. इति.

२६१. अथ हिवै ज्ञानावर्णी कर्म सत्ता गुणठाणा १२मां तांई. दर्शनावर्णि कर्म सत्ता गुण ठाणा १२ मां तांई. वेदनी कर्म सत्ता गुण ठाणा १४ तांई. मोहनी कर्म सत्ता गुण ठाणा ११ मां तांई. आयु कर्म सत्ता गुण ठाणा १४ मां तांई. नाम कर्म सत्ता गुण ठाणा १४ मां तांई. गोत्र कर्म सत्ता गुण ठाणा १४ मां तांइ. अंतराय कर्म सत्ता १२ मां गुण ठाणा तांई होइ.

ए बंध, उदय, उदीरणा, सत्ता नुं स्वरूप कह्युं ए सर्व भाव केवल ज्ञानी एक जीव स्वरूपें द्रव्य गुण पर्याय छै तेहवा अनन्ता जीव देखै. एकेक जीवनें अनन्ता कर्म जे रीत छै ते देखें. एकेक जीव ना अनंता भाव देखै छै. भाव ते परिणाम इम केवली

केवली केवल समुदघात अढि द्वीप मांहथी करै तिम ए पिण. श्याम माटे? जे दंडाकार अढी द्वीप बाहिरे न थाई. इति.

२६३. तथा केवली पण केवल समुदघात करे तिवारे पोतना जे८ आठ रूचक प्रदेश छै ते मेरू ना मध्य जे रूचक प्रदेश छै तिहां थाई पछै ते रूचिक थकी संपूर्ण चौदे राज्यात्मक लोक पूरे. एरीते धारयू छै. लोक प्रकाश ग्रंथे कह्यो छै. ए भाव.

२६४. अथ निगोद नो विचार लिखे छै. असंख्यात प्रदेशी लोक ते प्रमाणे गोला पण असंख्याता छै. गोला ते श्युं ? असंख्याति निगोदें एक गोलो. इति प्रश्न. ते ऊपरे गाथा— (कया ते लोए असंख जोयण प्रमाणे एइ जोयणां गुला संख्या । पईत्तं असंख अंसापई असम असंखया गोला ॥ १ ॥ गोलो असंख निगोओ सोणंतजीओ जिय पईयं । एसा असंख पई एसं कमाण वंगाणाणंता ॥२॥ पई वगणं अणंता अणुअप्पई अणु अणंत पजाया । एवं लोग सरूवं भावि जतहत्त

मांहि चुमालीस सय नें साढा छैतालीस ४४४६॥ आवली थाइ. ते एक सासोसास माहे निगोदियो जीव१७ सतरै वार मरै, अठार मी वार उपजै. एतले समय सतरे भव उपरान्त साढी चोराणुं ९४॥ आंवल वधे. एतले साढी सतरे भव मांहि साढी तेतीस आवली झाझेरी ओछिइ मरै. तथा घडी दोय काची तेहना श्वासोसास सातरीससयनें तिहोत्तर ३७७३ थाइ. ते बे घडी मध्ये निगोदिओ जीव ६५ हजार नें ५३६ एतली वार मरे. एणै लेखै एक दिवस ना सासोसास एकलाख तेराहजार एक सौ नें नेउ११३१९०एतला श्वास निरोगी युवान पुरुषना थाइ, तेहवा एक दिवस मांहि १९ लाख६६ हजार नें ८० अशी एतली वार मरे, इम एक मास ना श्वासोसास गुणतां केतला थाइ ? तेतीसलाख पिचाणु हजार नें सातसौ३३९५७००एतला होंई. तेहवा एक मास मांहि ५कोड नें८९लाख ८२ हजार अने४०० एतला भव निगोदिओ एक मास मांहि करै. एणे लेखै वरस एक ना श्वासोसास४कोड७ लाख४८हजार४०९

तेहना निकल्या ते मांहेज समाइ. तथा कंद मूलना ते बादर निगोदिया व्यवहार राशी मांहि आव्या छै, ते अनंता कंदादिक मांहि छै. तथा जेतला जीव सूक्ष्म निगोद गोलक मांहि थी निकल्या छै ते व्यवहार राशी मांहे आव्या. ते कालादिक लब्धि पामी सिधी वरै. तेतला अव्यवहार निगोद मांहि थी नीकली ऊंचो व्यवहार मांहि आवै, पण व्यवहार राशी ओछी न थाइ. कदापि मुक्ति जावा ना विरह काल होइ, तेतला काल ताई सूक्ष्म अव्यवहार राशिओ निगोद नो जीव कोई व्यवहार राशीमाहेनआवे एहवो उपमिति ग्रंथे कह्यूंछै. तथा व्यवहार राशी या बादर निगोद मांहें जे अनंता छै ते फरी कर्म नी बहुलताइ सूक्ष्म निगोद गोलक मांही जायें ते ७० कोडा कोडी सागरोपम ताई तिहां रही वली पाछा कंदादि के साधारण मांहि आवै. इम संबंधे सूक्ष्म निगोद ना बादर निगोद मांहि आवै, वली बादर ना सूक्ष्म मांहि जाई. इम बे थानिके आवा गमन करतां जीव उत्कृष्टो रहै तो अढी परावर्त पुद्गल

सिद्धि वरे तेतला सूक्ष्म निगोद मांहि थी निकले, व्यवहार राशी में आवै. एक समै एक, बे, त्रण,उत्कृष्टै एक समै अढी ध्वीप मांहें १०८ सिद्धि वरे, तेतला सूक्ष्म निगोद मांहे थी नीकली व्यवहार राशि पणौ पामें. तथा व्यवहार राशी निगोद ना गोला मांहे जाय तो एक समै एक १ बे २ त्रणे ३ इम अनंता सुधी जाय ते व्यवहार राशिया निकलै तो अनंता सुधी एक समै निकलै पण अव्यवहारिया ते एक समै उत्कृष्टै १०८ निकलै ते मांहि भव्य अभव्य बे होइ. ते सूक्ष्म निगोद ना अनंता निकल्या बादर निगोद मांहे समाये, बीजा मांहे नहीं. तथा एक सुक्ष्म निगोद मांहे अनन्ता जीव केतला छै ? तिण्य काल ना जेतला समय अनन्ता छै तेथी अनंता जीव एक निगोद मांहि छै.तिणै करी जिवारै पूछै तिवारै जिनेश्वर कह्यूं छै(एकस्स निगोदसउ सओ अनंत भागोये सिद्धि गयो) एतले सूक्ष्म निगोद थी बादर निगोद मांहे निरंतर आवै छै. ते आवैं तो एक समै १०८

अत्यंतबल संपदा होइ, पृथ्वि पर्वतादिक उपाडै, अचिंतित पराक्रमी होइ ४. पांचमी माहिमा सिद्धि ते मोटो लाख योजन नो शरीर करै ५. छठी अणिमा सिद्धि ते नाहनो कुंथुआ जेवडुं रूप करीनें भींत तथा पर्वत मध्ये निकले अने पोते विघन न पामै ६. सातमी यत्र कामा वसायिलं सिद्धि ते जिहां उपयोगदे तिहां जाणै, मति श्रुत ज्ञान अवधिज्ञान नें योगै ७. आठमी प्राप्ति सिद्धि ते सकल मोटी वस्तु प्रत्यक्ष पणै देखै, रूपी वस्तु देखै, अवधि ज्ञान दर्शन नें योगै ८. ए अष्ठ महा सिद्धि मुनिराज नें होइ तेहना शब्दार्थ जाणवा.

२६९. हिवै ब्रह्मदत्त चक्रवर्त्ती नें ७०० वर्ष नो आयु हतो ते भोगवी नें नरके गयो. तिहां ३३ सागर नो आयु भोगवै छै. तेतलो काल विषय ना सुख भोगव्या ते ऊपर केतलो दुख पाम्यों तेहनी विगत वर्ष १०० ना दिवस ३६००० थाय. तिवारे ७०० वर्ष ना दिवस २५२००० थाय. तेहना मुहूर्त्त ७५६००००, ते एक मुहूर्त्त ना ३७७३ स्वासोस्वास थाइ. ते

अत्यंतबल संपदा होइ, पृथ्वि पर्वतादिक उपाडै, अचिंतित पराक्रमी होइ ४. पांचमी महिमा सिद्धि ते मोटो लाख योजन नो शरीर करै ५. छठी अणिमा सिद्धि ते नाहनो कुंथुआ जेवडुं रूप करीनें भींत तथा पर्वत मध्ये निकले अने पोते विघन न पामै६. सातमी यत्र कामा वसायित्वं सिद्धि ते जिहां उपयोगदे तिहां जाणै, मति श्रुत ज्ञान अवधिज्ञान नें योगै ७. आठमी प्राप्ति सिद्धि ते सकल मोटी वस्तु प्रत्यक्ष पणे देखै, रूपी वस्तु देखै, अवधि ज्ञान दर्शन नें योगै ८. ए अष्ठ महा सिद्धि मुनिराज नें होइ तेहना शब्दार्थ जाणवा.

२६९.हिवै ब्रह्मदत्त चक्रवर्त्ती नें७००वर्ष नो आयु हतो ते भोगवी नें नरके गयो. तिहां ३३ सागर नो आयु भोगवै छै. तेतलो काल विषय ना सुख भोगव्या ते ऊपर केतलो दुख पाम्यों तेहनी विगत वर्ष १०० ना दिवस ३६००० थाय. तिवारे ७०० वर्ष ना दिवस २५२००० थाय. तेहना मुहूर्त्त ७५६००००, ते एक मुहूर्त्त ना ३७७३ स्वासोस्वास थाइ. ते

७५६०००० ते गुणा करतां २८५२३८८००००
एतले ७०० वर्ष ना एतला स्वासोस्वास थाई. तथा सागरोपम ३३ ना पल्योपम त्रण सै त्रीस ३३० कोडा-कोडी थाई. तेहना आंक३३०००००००००००००००० एतला पल्योपम होइ. तिवारे एक श्वासोस्वास ताइं संसार मध्ये विषयना सुख भोगव्या ते ऊपरे ११५६९८५इग्यारे लाख छप्पन हजार नवसै पिच्चासी एतला पल्योपम थाइ. सातमीं नरके दुख भोगवै छै. एतले (क्षिणमात्र सुखं बहु काल दुखं) एपद सूत्रे कह्यूं छे तेहनो भावार्थ जाणवो. इति भाव.

२७०.संसार मध्ये विषय कषाये दुख दाइ कह्या ते विषय मिटै पंच महा व्रत पालै, कषायादि मिटै गुण ठाणें चढे, स्वरूपाचरण चारित्र नीपजे. इत्यर्थः

२७१. अथ युग प्रधानना १४गुण नी गाथा—पाडि रूवो १ तेयस्सी २ जुगपहाणां गमो ३ महुरवक्को ४। गंभीरो ५ धिईमंतो ६ उवएस परोय ७ आरिओ ८

॥ १ ॥ अपरिस्सावी ८ सोमा ९ संगहसीलो १० अभिगृहमई ११। अविकथणो १२ अचवलो १३ पसन्न हियओ १४ गुरू होई ॥ २ ॥) अप्पारिसा २ एवं चतुर्दश गुणा भवंति.

२७२. तथा ओघ निर्युक्तो भद्रबाहु स्वामी कृतः (अंवसंगंतु कउ जिणो वईठं गुरु वए सेणं । तिन्नि थूई पडिलेहा कालस्सविहिई मातथ ॥ १ ॥) गाथा २७ मी छै. तिहां—थूई त्रिण करवी कही छै.

२७३.हिवै मिथ्या दृष्टि जीव नें शुभाचार होइ पण शुभोपयोग न होइ. अने सम्यक् दृष्टी जीव नें शुद्धोपयोग होय तेहनें शुभोपयोग आचरण रूप होइ पण आदरण न होइ. अने मिथ्यादृष्टी जीव नें शुभ आचार रूप होइ पण अशुद्धोपयोग ना घर नो अशुभोपयोग होइ, पण शुभोपयोगे उपचारे कहिये. इति भाव.

२७४आठे कर्म नी वर्गणा नें कारमाण शरीर कहै छै

ते इम नहीं. कार्मण शरीर ते नाम कर्म नी प्रकृति. ते नाम कर्म नी वर्गणा रूपे कार्मण शरीर बी जाणवो की बीजी सात कर्म नी वर्गणा तेहनें विषै छै. इम आधाराधेय भावै छै. जिम कणनी गांठडी पण वस्तु भिन्न तिम. वीजा कर्म नी वर्गणा जुदी ते किम जाणिये ? जिम केवली भगवंत नें ज्ञाना वर्णादि च्यार कर्म नी वर्गणा मूल थी गइ पण तोही कार्मण शरीर छै. त्यारे ते अनुमानै अन्य कर्म नी वर्गणा भिन्न, कार्मण शरीर ते भिन्न. इम कार्मण शरीर नो स्वरूप जाणवो. पछै तो जिम तीर्थंकर देवै कह्यो छै ते सत्य सर्दहियो. इति.

२७५.प्रस्तावक गाथोक्तं– (तव संयमेण मुखो दांणेण हुंति उत्तमा भोगा । देव वणेणरद्धं अनसन मरणेण इंदंतं चकितं ॥ पंचोतरि विमाण वासितं लोगेता देव दत्तं।अभव्व जीवादि न पावंती॥२॥ संगम काल्य सूरि कपिला अंगार पालया । दोविए एसत अभव्वा उदायनि व मार ओचेव ॥३॥ तुच्छ भतं पाणं

तुच्छाय निंदाय त्तच्छमारंभो । तुछा जहा कसाया ताहतुं तुच्छ संसारे ॥४॥ इह भरहे के विजिया मिथ्या दिठी भद्दया भव्वा । ते मरी उण नवमे वरसे हो हुंती केवलिणों.॥ ५ ॥) इति प्रस्ताविक गाथा ज्ञेयाः

२७६.चमरेंद्र नें ५ अगृमहिषि छै ते एकेकीअग्र महिषिनै नें आठ आठ सहस्र देवीनो परिवार इम ४० सहस्र देवी सु भोग भोगवितो विचरै. इत्यर्थः

२७७. बौद्धं१ नैयायिकं२ सांख्यं३ जैनं४ वैशेषिकं। तथा । जैमीनियंच ६ नामानि दर्शनात्म शून्य हो ॥ इति षट् दर्शन नामानि ॥

२७८. हिवै ६३ शिला का पुरुष तेहना जीव५९ छै तेहना विगत—जीव ३ चक्रवर्ती पदवी ना ओछा थया. एक वासुदेव थया ए४ जीव घट्या. माँहें(बाकी)जीव ५९ थया. तथा ५९ जीवनी माता६० पिता ५१ कह्या छै तेहनी विगत –२४ जिननी माता, ९ चक्रवृती नी माता, ९ वासुदेवनी माता, ९ बलदेवनी माता,

६प्रति वासुदेवनी माता, एवं ६० माता जाणवी. हिवै पिता ५१ ते तेहनी विगत. २४ जिन ना पिता, ९ चक्र ना पिता, ९ वासुदेव ना पिता, ९ प्रति वासुदेव ना पिता, एवं ५१ पिता जाणवा. एणी रीते पदवी ६३, जीव ५९, माता ६०, पिता ५१, ए रीते ए अर्थ.

२७९. अथ ऋषभ देव स्वामी केतला वरस नो काल गृहस्थाश्रम में वस्या तथा सर्व आयु केतला वर्ष जीव्या इति प्रश्नः— ऋषभदेव बीस लाख पूर्व कुमरपणें रह्या तेहना वरष केतला थया-१४ लाख कोडा कोडी इग्यार हजार कोडा कोडी वलि बेसे कोडा कोडी १४११२००००००००००००००००० एतला वर्ष कुमार पणे रह्या. तिवार पछी ६३ लाख पूर्व राज्य अवस्था भोगवी तेहना वर्ष केतला ४४ चवालीस लाख कोडा कोडी ४५ हजार कोडा कोडी बेसै कोडा कोडी अरसी कोडा कोडी तेहना आंक ४४५२८००००००००००००००००. तिवार पछी एक लाख पूर्व

केवल पणौ रह्या तेहना केतला वर्ष—७० सित्तर हजार कोडा कोडी पांचसै कोडा कोडी ते ऊपर ६० साठ कोडा कोडी, तेहना आंक ७०५६००००००००००-०००००० एतला वर्ष थया. इम सर्वे ८४ लाख पूर्व नो वरस सरवाले ५९ लाख कोडा कोडी२७ हजार कोडा कोडी तें ऊपरि वली४० कोडा कोडी एतला वर्ष जीव्या. एतला वर्ष श्रीऋषभदेव सर्वायु जीव्या. एकडा ऊपरि १४ मींड्या आवै तिवारे कोडा कोडी, एकडा ऊपरि इकवीस मीड्यां आवै तिवारै कोडा कोडी, तथा एकडा ऊपरि २९ मींड्या आवै तिवारै कोडा कोडी थाइं. इत्यर्थः ८४ लाख पूर्वनो.

२८०. अथ बंध नो स्वरूप कहिये छै. अेकले योगे प्रदेश बंध प्रकृति बंध नीपजे ते कर्म वरगणा दलनो संचय थाय, तथा योग नें लेश्या बे एकठा मिलै तिवारे प्रकृति नें प्रदेश बंध नीपजै. तथा ध्याने कषाय ए बे मिलैं तिहां थिति बन्ध रसबंध नीपजे. तथा जिहां कषाय ध्यान आवैं तिवारें च्यारै भेला थाय. इत्यर्थ

२८१. अथ भार मानः— (षट सर्षपे यवस्तैको गुंजैका चयवैस्त्रिभि । गुंजा त्रयेण वल्लस्यात् गद्याण स्तैच षोडसै ॥ १ ॥) अस्यार्थः— छए सरसे एक जव थाइ. तथा ३ यवें गुंजा थाय, गुंजा त्रणे एक वाल थाय. सोलै वाले गादियाणो थाइ. इति. (पलेचदस गद्याणेंस्तेषां सार्द्ध सतमैणी मणी दसाभिरेकाच घटिका कथिते बुधे ॥) अस्यार्थः— दस गादियाना एक पल्ल थाइ. ते डोढसो पले एक मणी थाइ. ते दसे मणी एक घड़ी थाय. (घडीभि दसाभि : ताभिरेको भार: प्रकीर्त्तित : । चत्वार फूकित्म भारा अष्टोच पत्त पुर्फीता । वल्लयो भार षटकंच एवं अष्टादश स्मृता ॥ ३ ॥) अस्यार्थः— दसे घडीये एक भार थाय. इति लोक प्रकाश ग्रन्थ मध्ये कह्यु छै. ३ कोडि ८१ लाख १२ हजार ९ नव सै ७७ एतला मणें एक भार थाइ. तथा एकेकी जात नु एकेकु पांन लीजे ते एकठो कीजे इम ४ भार वनस्पति केवल फूल नी छै, तथा आठ भार वनस्पति फल फूल पान नी छै, तथा ६ भार वनस्पति [illegible]

ए रीतें अढार भार वनस्पाति नि संख्या जाणवी. इत्यर्थः

२८२. अथ (केनग्रन्थ परित्यत्त बाह्य भ्यंतर परिग्रह चतुर्विंशाति के क्षेत्रे वास्तू धन धान्य द्विपदं चतुपदं यानं शय्या शयनं, भांडं कुप्पं चेतिबहि र्दसः ॥ १ ॥ मिथ्यात्व वेदे हास्यादि षट कषाय चतुष्टयं राग द्वैषौच संगास्यू रंगा चतुर्दशः ॥ २ ॥)

२८३. हिवै रोग केतलें प्रकारें ते कहै छै. (ज्वरो भगंदरो कुष्ट क्षयश्चैव चतुर्थका । महारोगाढ्य मी प्रोक्ता भार्या स्यैषा प्रकीर्त्तिता ॥ १ ॥) ए४ मोटा रोग. ज्वर१, भगंदर २, कोष्ट ३, धातुक्षय ४. ए४ रोग मोटा कह्या. ते रोग नी स्त्री कहिये छै. ताव नी स्त्री तरस१, भगंदर नी स्त्री हेडकी२, कोढ नी स्त्री भूख३, धातु क्षय नी स्त्री निंद्रा ४. एकेक रोग ना २५ छोरुं, अष्ट महा रोग छै. इम १०८ रोग डाहे वैद्ये निरता जाणी प्रतिकार करवो. इति अर्थः—

सामं प्रेमकरं वाक्यं दानं वित्त समर्पणं ।
भेदा पुंस समा कृष्टि दंडसी प्राण संहृति ॥ १ ॥

२८४. अथ एकसौधर्मइंद्रना आउषा मांहि केतली इंद्राणी चवै इति प्रश्नः— (कोडा कोडी दुविसं पंचासी लखा हुंति कोडीओ । इगुत्तारे सहस कोडी चत्तारि सयाय तह कोडीअ ॥ १ ॥ अठावीसं कोडी सत्तावन्न हवंति लखाइं सहसा । चउदस दुसया छासी इंदे गजं मिथि ॥ २ ॥ इय संखादेवीयो चवंति ईगइंदजंमंमी ॥ ३ ॥) इंद्र जिवारें विषय सुख भोगवै तिवारें एक लाख नें २८ सहस रूप विकुर्वे, आठ अग्र महिषी. एकेकी सोलें सहस रूप विकुर्वे. २२ कोडा कोडी ८५ लाख कोडी ७१ सहस कोडी ४ सय कोडी २८ कोडी ५७ लाख १४ हजार २ सय ८६ ऊपरि आठ गुणी, एतली देवांगना एके इंद्रना आउषा मांहि चवै इति. अर्थः .

२८५ एकेंद्रीय मंध्ये दाया उड्ढविअहेय तिरिय लोएय । विगलेंदिय जीवा पुणतिरिए लोए सुमुणे यव्वं ॥१॥ पुढवी आउ वणस्स ई बारस कप्पे सु सत्त पुढवीसु । पुढवीजा सिद्धि सिला तेउनरविसातिग्गिय लोए ॥ २ ।

सूरि लोए वाविमप्से मथा यतथ जलवराजीवा गेविझे ।
नहुवा विवा विश्रभावे न जलंथी ॥ ३ ॥

२८६.दसा श्रुतस्कंधे तथा पाखी वृत्तौ नव नियाणां। कह्या ते किहा? राज्यादि थावा नी इच्छा १, अमात्य * थावा नी इच्छा २, स्त्री थावानी इच्छा ३, देवता ना भोग नी इच्छा ४, आपणि देवी भोगनी इच्छा ६, भोग न पांमु एहवो नियाणो करै ७, श्रावक थवा नी इच्छा ८, दरिद्री थावा नी इच्छा एतले श्युं दरिद्री थयो ते कर्म रहित थवानी इच्छा९. ए ९ए नियाणा साधु साधवी न करै. ए बे नियाणा ना उदय आव्या पछी आवते भवे ए फल पामै. प्रथम छः नियणां नां धणी नें दुर्लभ बोधि होइ, प्राय धर्म सर्देहै नहीं, सातमा नो धणी धर्म सांभलै पण समकित पामै पण देशविरत पणो उदय नावै. आठमा नीयाणां नो धणी देश- विरतपणु पामै पण सर्व विरतिपणो न पामै. नोमा

* रिधिवंतथवानीईछा

नियाणा नो धणी सर्व विरति पणो पामै पण मोक्ष न होइ. इति नव नियाणा अधिकार जाणवा.

२८७. पुरुष वेद काय थितै रहै तो सागरोपम ९००झाझेरा रहै. स्त्री वेद रहै तो पाल्योपम ११० पृथक्त पूर्व कोडि ९ रहै. नपुंसक वेद रहै तो अनंती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी शुद्धि रहै. पंचेंद्री नो पंचेंद्री पणै रहै तो सागरोपम १००० झाझेरा. तथा जीव त्रस काय मांहि आवी त्रसपणै रहै तो' सागरो पम २००० झाझेरा रहै.

२८८. पांच ज्ञान त्रण्य अज्ञान काल थकी जघन्य तथा उत्कृष्टै केतलो काल रहै इति प्रश्नः— मति ज्ञानं अने श्रुत ज्ञान नो काल जघन्य थी अन्तर्मुहुर्त्त उत्कृष्टो काल सागरोपम ६६ झाझेरा रहै. अवधि ज्ञान नो काल जघन्य थी एक समै उत्कृष्टै ६६ सागरोपम झाझेरा. अवधि ज्ञान एक समै ते किम? विभंग ज्ञानी समकित पडीवजे तिवारें विभंग फीटी

अवधि ज्ञान थई आवै. त्यारे एक समै रही वली पडै. विभंग ज्ञान नो विभंग ज्ञाने ज आवै. इम अवधि ज्ञान जघन्य थी एक समय होइ. मन पर्यव ज्ञान जघन्य थी एक समै उत्कृष्टै देसै उणा पूर्व कोडी. एक समै ते किम? जिवारे अप्रमत्त गुण ठाणै वर्तती मनपर्यव ज्ञान उपजीने जाइ तिहां एक समै जाणवो. केवल ज्ञान ना धणीं ने सादि अनंता काल जाणवा.

हिवै मति अज्ञान अने श्रुत अज्ञान ना भांगा काल आसरी ३ जाणवा— एक अनादि नें अनंत ए अभव्य नें १. अनादि ने सांत ए भव्य नें २. सादि अनें सांत ते समकित थी पडी पछै चढै तेहने होइ ३. सादि अने सांत छै तेहने जघन्य थी अंतर्मुहूर्त अने उत्कृष्टो ते अर्द्ध पुद्गल परावर्त जाणवो.

हिवै विभंग ज्ञान नो काल लिखिये छैः— जघन्य तो एक समय अने उत्कृष्टै सागरोपम ३३ ॥ झेरो. मनुष्य नो आयु पुर्व कोड नो पाली सातमी

नरकै उत्कृष्टै आउषै जाइ. एतले एक पूर्व कोडी नें ३३ सागरोपम थाइ.

२८९. हिवे आठै ज्ञान नो आंतरो कहै छैः— मति अज्ञान नो आंतरो जघन्य थी अंतर्मुहूर्त्त नो होइ, उत्कृष्टै अर्द्ध पुद्गल परावर्त माठेरो होइ. इम एणे प्रमाणे श्रुत ज्ञान, अवधि ज्ञान, मन पर्यव ज्ञान नो पण आंतरो जाणवो. केवल ज्ञान नो आंतरो नथी.

हिवै मति अज्ञान, श्रुत अज्ञान नो आंतरो जघन्य तो अंतर्मुहूर्त उत्कृष्टौ सागरोपम ६६ झाझेरो होइ.

हिवै विभंग ज्ञान नो अंतर कहै छैः— जघन्य तो अंतर्मुहूर्त्त, उत्कृष्टै तो वनस्पति नो काल. ए भाव. इति.

२९०. हिवे १७ प्रकार ना मरण श्री उत्तराध्ययन टीका मध्ये कह्या छै ते लिखिये छैः—प्रथम आवीची मरण ते समये २ आयु कर्म नां दल खेरवै छै १. उही

मरण ते समस्त संपूर्ण आयु भोगवी नें मरै २. अंतिय मरण ते नरकादि गति नो छेहलो मरण वली ते (फरि) नरके न मरै ३. वलीय मरण ते व्रत परिणाम भोगे जे व्रतीनो मरण तै होइ ते ४. वसट्ट मरणं च ते इंद्रि नें परवश पणे मरै, दीप शिखा देखी पतंग नी परे ५. अंभोसल्ल मरण लज्जादिक थी शल्य राखी मरै, लक्ष्मणवत् ६. तदभव मरण ते चर्म शरीरी थइ मरे ७. बाल मरण ते अविरति मिथ्यात्वी ना मरण ते ८. पंडिय मरण ते व्रती समकितीना मरण ९. मिश्रंसंते मिश्रमरण ते देशविरतिश्रावक ने मरण १०. छउमथ मरण छद्मस्थ चारित्रीया ना मरण ११. केवल मरण ते केवलज्ञानी नुं मरण १२. विहास मरण ते कारण पड़े गले फांसी तथा शस्त्रै तथा विषै योगै मरै १३. गृधीय पीठ मरण ते गृध पंखिया ये कारण पडे शरीर खवरावी मरै १४. भत्त परिणाम मरण ते चतुर्विध अहार ना त्याग थी प्रति क्रमणा सहित मरै १५. इंगणी मरण ते नियमि भूमिका नें विषैं च्यार अहार

नो त्यागकरै वेयावच न करावै १६. पाउव मणंच ते निश्चल निः प्रतिक्रम वृक्षनी डाली पडी होय तेहनी परे शरीर वोसरावै १७. इति. ए सत्रा प्रकारे मरण जाणवा. इति.

२९१. भूमिका केतली अचित होइ ते प्रश्नः—राजमार्गनी भूमिका आंगुल ५ अचित, सेरी नी भूमिका अंगुल ७ अचित, घरनी भूमिका आंगुल १० अचित, मल मूत्र भूमिका १५ आंगुल अचित, गोमहिषी छाली प्रमुख वेसै तिहां भूमिका आंगुल २१ अचित, चुला हैठे भूमिका आंगुल ३२ अचित, नीमाडा नी भूमिका ७२ आंगुल अचित, ईट वा अंधः भूमिका आंगुल १०१ अचित, इति.

२९२. सूगडांग वृत्ति मध्ये आंवलनी छाल मध्ये असंख्यात जीव कह्या छे.

२९३. पन्नवणा ना पहिला पद मांहिं. तथा नवकरवाली ना १०८ गुण कह्या ते किहा? इति

मरण ते समस्त संपूर्ण आयु भोगवी नें मरै २. अंतिय मरण ते नरकादि गति नो छेहलो मरण वली ते (फरि) नरके न मरै ३. बलीय मरण ते व्रत परिणाम भोगे जे व्रतीनो मरण तै होइ ते ४. वसट्ट मरणं च ते इंद्रि नें परवश पणे मरै, दीप शिखा देखी पतंग नी परे ५. अंभोसल्ल मरण लज्जादिक थी शल्य राखी मरै, लक्ष्मणावत् ६. तदभव मरण ते चर्म शरीरी थइ मरे ७. बाल मरण ते अविरति मिथ्यात्वी ना मरण ते ८. पंडिय मरण ते व्रती समकितीना मरण ९. मिश्रंसंते मिश्रमरण ते देशविरतिश्रावक ने मरण १०. छउमथ मरण छद्मस्थ चारित्रीया ना मरण ११. केवल मरण ते केवलज्ञानी नुं मरण १२. विहास मरण ते कारण पड़े गले फांसी तथा शस्त्रै तथा विषै योगै मरै १३. गृधीय पीठ मरण ते गृध पंखिया ये कारण पडे शरीर खवरावी मरै १४. भत्त परिणाम मरण ते चतुर्विध अहार ना त्याग थी प्रति क्रमणा सहित मरै १५. इंगणी मरण ते नियमि भूमिका नें विषैं च्यार अहार

नो त्यागकरै वेयावच न करावे १६. पाउव मगंच ते निश्चल निः प्रातिक्रम वृत्तनी डाली पडी होय तेहनी परे शरीर वोसरावे १७. इति. ए सत्रा प्रकारे मरण जाणवा. इति.

२९१.भूमिका केतली अचित होइ ते प्रश्नः—राजमार्गनी भूमिका आंगुल ५ अचित, सेरी नी भूमिका अंगुल ७ अचित, घरनी भूमिका आंगुल १० अचित, मल मूत्र भूमिका १५ आंगुल अचित, गोमहिषी छाली प्रमुख बेसै तिहां भूमिका आंगुल २१ अचित, चूला हैठे भूमिका आंगुल ३२ आचित, नीमाडा नी भूमिका ७२ आंगुल अचित, ईट वा अंधः भूमिका आंगुल १०१ अचित, इति.

२९२. सूगडांग वृत्ति मध्ये आंवलनी छाल मध्ये असंख्यात जीव कह्या छै.

२९३. पन्नवणा ना पहिला पद मांहि. तथा नवकरवाली ना १०८ गुण कह्या ते किहा? इति

प्रश्नः— १२ गुण आरिहंत ना—८ महा प्रातिहार्य, ज्ञानअतिशय १, वचनअतिशय २, पूजा अतिशय ३ अपायापगमा अतिशय ४. एवं १२. आठ कर्म ना क्षय थी सिद्ध ना८ *गुण, आचर्य ना३६† गुण, पंचेंद्रिय संवरणो इत्यादि गाथा २ बे थी जाणज्यो. उपाध्याय ना २५ गुण— इग्यारै अंग भणै भणावै, इम १२ उपांग एवं२३, चरण सत्तरी २४, करण सत्तरी आराधे एवं २५. साधू ना २७. गुण ते किह्या ? पांच व्रत पालै, छठो रात्री भोजन, छः काय रखवालै एवं १२, पांचेंद्री नो निग्रह एवं १७, लोभ निग्रह संवर १८, क्रोध निग्रह क्षमा गुण १९ एवं १९. भाव विशुद्ध २०, पडिलेहणा विशुद्धि २१, संग्रह योग युक्तता २२,

---

* अनंत ज्ञान १ अनंत दर्शन २ अनंत चारित्र३ अनंत वीर्य४ अव्याबाध ५ अमूर्ति ६ अनवगाह ७ अगुरुलघु ८ ए सिद्ध ना गुण जाणवा.

† ५ इंद्री ना संवरण (निग्रह) ९ प्रकार ना ब्रह्मचर्य व्रत, ४ कषाय, ५ महाव्रत, ५ आचार, ५ सुमती, ३ गुपति. ए आचार्य ना ३६ गुण जाणवा.

मन वचन काय नु कुशल पणों ३, एवं २५, सीतादि का पीडानो सहवो २६, मरणांत उपसर्ग सहवो एवं २७. एवं सर्व मिली १०८ गुण पंच परमेष्टी ना, तेहने नवकरवाली कहिये. ए अर्थ. इति.

२९४. २९५. अथ साधु नें १०० सोये वसा (विश्वा) पंच महा व्रत पालै छे ते किम? इति प्रश्नः— पहिलो प्रणातिपात श्रावक नी अणु व्रत तिहां दया जावजीव सवा वसा नी होइ. पांच थावर ते सूक्ष्म नें बादर एवं दस ते पर्याप्ता नें अपर्याप्ता एवं २०. इम एणी रीतें साधु नें सोये वसाई महाव्रत पालें. श्रावक नें पांच अनुव्रत मिली ६।सवा छे वसा नो पालै. इत्यर्थ. *

* आ प्रश्नमां ग्रन्थकर्त्ता ए जे भेदाभेद कीधा छे अने केतलीक जगो आंकडा मूक्या छे तेमांही थी केटलाक समजवा मां आवता नथी ते माटे आ प्रश्न जेम लखेली प्रत मां हतो तेमज छापी दीधूं छे श्री सम्यक्त्व मूल बारव्रत नी टीप मां आ बाबत लिख्युं छे ते आ मुजब छेः—

साधुने वीश विश्वानी दयाछे,अने गृहस्थने सवा विश्वानी दया छे ते केवी रीते तेनो विवरो लखीए छैए.

॥ गाथा ॥ जीवा सुहुमाथूला । संकप्पारभाभवेदुविहा। सावराह निरवराहा । साविरकाचेयनिरावेरका ॥ १ ॥ अर्थ—

तथा वली पांचे अनुव्रत श्रावक नें होइ तेहनों विवरो लिखियें छैः— स्थूल बेइंद्रियादिक त्रस जीव निर्पराधें उपेत करणी संकल्पी न हणें, ए

जगतमां जीवना बे भेद कह्या छे एक थावर, बीजा त्रस. तेमां थावरना वली सूक्ष्म, बादर ए बे भेद छे तेमां पण सूक्ष्मनी हिंसा नथी. कारण अति सूक्ष्म जीवना शरीने बाह्य शस्त्रनो घाव लागतो नथी, तेमने स्वकाय एटले पोतानी जातीना जीवोथी घात पात छे. पण बादर नथी एमाटे अहींयां सूक्ष्म शब्दथी पण जाणवुं के थावर जीव, पृथ्वी, पाणी, अग्नि, वायु, वनस्पतिरूप बादर ए पांचे थावर तेमने सूक्ष्म कहीए. अने थूल एटले बेंद्रि, तेंद्रि, चौरेंद्रि, पंचेंद्रिरूप जाणवा ए जीवना मूल भेद बे छै तेमां सर्व जीव आव्या. तेओ सर्वनी त्रिकरण शुद्ध रक्षा करे छे तेमाटे वीश विश्वानी दया मुनि नें छे.

पण श्रावकथी तो पांच थावरनी दया पली शकाय नही. सचित्त अहारादि कारणथी अवश्य हिंसा थाय छे. माटे दश विश्वा गया अने दश रह्या. एटले एक त्रस जीवनी दया राखवाना दश रह्या तेना पण वली बे भेद छे एक संकल्प. बीजो आरंभ. तेमां आरंभ करीने जे त्रस जीवनी हिंसा थइ जाय ते छोडी न जाय तेमाटे बे हिंसामां एक संकल्प हिंसानो त्याग अने आरंभ हिंसा-नी तो जयणा छे, एम गणतां फरी दशमांथी अडधा गया एटले पांच विश्वा रह्या, एटले संकल्प करी त्रस जीव नहणुं एमां पण जीवना बे भेद छे एक सापराधी जीव अने बीजा निर-अपराधी जीव छे. तेमां जे निरपराधी जीवछे तेमने न हणुं. अने

प्राणातिपात अणुव्रत नी दया वशा १ नी होइ ते पुर्वे लिख्यो छे तेथी जोज्यो तथा बीजा अणुव्रत वीषे आपणे काजे स्व साधु नें समस्त जीव रचा

सापराध जीवने हणवानी तो जयणा छे जेथी करी सापराधीनी दया, श्रावकथी सदा सर्व रीतेथी पले नहीं.

जेम के घरमां चोर पेठा छे तेओ आपणी चीज लइ जाय छे ते मारथा कुट्यॉ विना छोडे नहीं वली बीजू दृष्टांत एक आपणी स्त्री साथे कोइ अन्य पुरुषनें अनाचार सेवतां देखिये तो तेने तस्वी दीधा विना ते छूटे नहीं ए प्रमाणे सापराधी कहीए. बीजुं पण क्यारेक राजानी आज्ञाथी युद्धमां गया थका संग्राम करवो पडे, त्यारें त्यां आगलथी शस्त्रादिक चलाविये नहीं सामो शत्रु प्रथम शस्त्रनो मारो करे, त्यारे पछी आपणे करीए ए माटे सापराधी नो संकल्प पण न छूटे. त्यारें बाकी रहेला पांच वशामांथी पण अडधा गया, बाकी अढी वशा रह्या एटले संकल्पीने "निर-पराधी जीवने न मारु" एटलुंज फकत रह्युं. एमां पण वली बे भेद छे एक सापेक्ष, अने बीजो निरपेक्ष, तेमां सापेक्ष निरपराधी जीवनी दया, श्रावकथी पले नहीं तेनुं कारण शुं? ते कहेछे श्रावक पोतें घोडा, घोडी, बेल, बलद, रथमां, गाडीमां, के इत्यादि बीजा वाहनो पर बेसे छे. त्यारें घोडा प्रमुख बलद विगेरे ने चाबका के आर लगावे छे, पण विचारतो नथी के, घोडाए के बलदे शो अपराध कर्यो छे ? एमनी पीठ ऊपर तो चढी बेठो छे. ए जीवना शरीर सामर्थ्यनी तो कांइ खबर छे नहीं जे आ जीव, बलवान् छे के दुर्बल छे पोतें ऊपर चढी बेठो, ने वली तेने गाल प्रमुख दइने

वसा २०(अनें श्रावक नें)सूक्ष्म ते बादर वसा १०काढ्या, आत्मा नें पर अत्तट्ठा परट्ठा चेव १. सापराधनिरपराधेंकरी वसा २॥ अपराधै हणैं पण निरपराधे नही १। सापेक्ष नी दया निरपेक्षै वसो १रहै तथा अत्र गाथा—(तथाथावरायजीव।संभकप्पारंभओभवे । दुविहा सावराहानिरवराहासावेरकाचेव निरवेरका॥१॥) जीव बे प्रकारै—– सूक्ष्म. बादर, ते मध्ये सूक्ष्म ना १० भेद तथा१० बादरना. सूक्ष्म ना १० भेद ते पांच थावर

मारे छे ! पण एतो निरपराधी छे वली आपणा अंगमां तथा-आपणां पुत्र, पुत्री, गोती, आदिकना मस्तकमां अथवा कानमां कीडा पड्या छे, अथवा आपणाज मोढामां के दाढमां के, दांतमां, के जडबामां कीडा पड्या, तेवारें तेमने मारवाना उपायें करीने कीडानी जग्याएं औषध लगाडवुं पडे, पण ए जीवोएं शो अपराध कर्यो छे ? एतो पोतानी योनि उत्पत्ति स्थान पामीने कर्मने आधीन आवीने अहीं उपजे छे, पण क्यारें कशी दुष्टताथी उपजता नथी. ते कारणमाटे जीवनी पण हिंसा, कारणे करीने श्रावक तजी जाय नही. वली बाग बगीचामां गया थका फूल, फल, पांदडां, गुच्छा प्रमुखने तोडवा सारु चोट देवी, अथवा फल, फूल, तोडी लेवां; ते माटे अढी वशामांथी अडधो गयो त्यारें सवा वशानी दया रही. एटला सवा वशानी दया शुद्ध श्रावक ने छे

पर्यासा नें ५ अपर्यासा एवं १० नी दया श्रावक नें न होइ.

हिवै १० बादर ते किहा ? बेंद्री, तेंद्री, चोरेंद्री पंचेंद्री ४ ए पर्यासा नें अपर्यासा एवं भेद ८. पंचेंद्री संनीओ असनीओ एवं १० भेद बादर ना थया ते मध्ये श्रावकनें संकल्पी न मारूं आरंभै जयणा एवं ५ भेद रह्या ते मध्ये अपराधे हण्यों, निरअपराधे नहीं, एतलें २॥ वसा रह्या. ते मध्ये सापेक्षया अने निरपेक्षा निर्दय पणों न हण्यो एवं १। वसा नी दया श्रावक नें त्रस जीव नी रही. इति प्राणाति पातिनी जीव दया १। वसा नी.इति.

२ हिवै मृषावाद अणु वृत समस्त मृषावाद नियम साधु नें २० वसा. सूक्ष्म नें बादर करतां १०, उपयोगै अणा उपयोगै २०, अत्तट्ठा परट्ठा आत्मपर एवं ५, स्वजन परजन करतां २॥, धर्म अपर अधर्म परमार्थे १।. अत्र गाथा—(सुहुमबादर मिलियं अप्पाण परिभेयगं भवे दुविहं सयणं परगं च तथा

धमं थं केवल परमथं ॥ १ ॥) पांच मोटका जूठ ते सूक्ष्म नें बादर एवं १०, ते उपयोगे अणा उपयोगे एवं २० वसानुं मृषावाद साधु न बोलै, पण श्रावक नें १। वसानुं मृषावाद श्रावक थी पलै. इति अर्थ.

३ अथ अदत्ता दान अणु व्रत समस्त अदत्त विरमण साधु नें २० वसा. सूक्ष्म बादर भेदे थइ नें वसा १०, सराज निग्रह निराज निग्रह थी ५, आत्म निमित्त पर निमित्त थी २॥, वाचुं तथा अण वाचुं वसा १।. अत्र गाथा—(सुहुम थूल मदिन्नदाणं निवराय दंडकारियं । राय ग्रह कारियं पुण दुविहं कहियं गुरु जिणेहं १ ॥ नाविराहय निग्रह करं अप्पाणं पर भेयगं । भवेदुव्विहं दिन्नन्यादिन्न च परं भासियव्वं निउण बुद्धिहिं ॥ २ ॥) अदत्त पांच— थूल जीव अदत्त १, जिन अदत्त २. गुरु अदत्त ३, स्वामी अदत्त ४, सागारी अदत्त ५. ते सूक्ष्म नें बादर एवं दस, उपयोगै तथा अणा उपयोगै एवं २० गुणाई. इति.

४ हिवै मैथुन अणुव्रत चतुर्थ. साधु नें समस्त मैथुन विरमण २० वसा. मन वचन काया ३ एवं १०. स्वदारा परस्त्री करतां एवं पांच. वेश्या तथा अपर स्त्री २॥, कुमारी तथा पर स्त्री करतां १।. तत्र गाथा— (मण वय काय मेहुण मविनिया पडरिइ इत्थीओ वेश्या परइथि ओ कुमारी परइ स्थी नियमोय ॥ १ ॥) स्वदारा१ परस्त्री २ वेश्या३ दासी ४ कुमारी ५ एवं ते मन वचन कायाइं करी एवं १०. ते सुपनें तथा जाग्रत पणै एवं २० वसा नो सीयल साधु पालै. तिहां श्रावक नें वसा १। नु होइ. इति.

५ अथ परिग्रह अणुव्रत पांचमो ५. साधु नें समस्त विरमण वसा२०. अभ्यंतर नें वाह्य करतां १०, अतह्रानें परद्दा ए बे भेदै ५, स्त्री पीहर आत्म निष्ठानुं २॥, स्त्री आत्मदत्त एवं वसा १।; तत्र गाथा— (अभ्यंतरबाहिरपरिगाहोपरसकीयमाचेव इथीपीहरअप्पोइथीनियदत्तनिओयाति ॥१॥)धन धान्य

१, खेत वथु २, रूपो सोनो ३, कुवई ते वासणं ४, द्विपद चोपद ५, एवं पांच ते बाह्य नें अभ्यंतरे १०. इति इच्छा मूर्च्छा रूपें २०, ते मध्ये श्रावकने वसा १। परिग्रह पलें. इति पूर्ण.

अथ गाथा—— (तसाथावरायजीवासंकप्पारं-भओभवेदुविहा । सावराहानिरवराहा सावेरका चेव निरवेरका ॥ १ ॥ इति प्राणातिपात विरमणं. सुहुम बादर मलीयं अप्पाणं पर भेयंग । भवे दुविहं सयणं परगं च । तहा धमथ केवल परमथ ॥ २ ॥ इति. मृषावाद विरमण व्रत २. सुहुम थूलम दिन्न-दाणं निवराय दंड कारियं । राय ग्रहा कारियं पुण दुविहं कहियं गुरु जणेहि ॥ ३ ॥ नविराय निग्रह कर अप्पाणं परभेयगं भवे दुविहं । दिन्नमदिन्नं व परं भासियव्वं निउण बुद्धिहि ॥ ४ ॥ इति अदत्ता दान विरमण व्रतं. अथमण वय काय मेहुण मविनियय अविरइ । इच्छिओ वेस्या पर इच्छिओ कुमारी पर इच्छी नियमोय इति मैथुन विरमण ॥ ५ ॥ अभ्यंतर बाहिर

परिग्रहो फरसकीयगाचेव । इच्छी पिहर अप्पो इच्छि नियदत्त निओय ॥ ६ ॥)

स्वजनकाजेधर्मकाजे मुकी परकाजे बोलवा नियम. ए मृषावाद अणुव्रत समस्त म्रषावाद नियम २०, सूक्ष्म बादर भेदे १०, आत्म काजे पर काजे ५, स्वजन पर काजे २॥,धर्म पर काजे १।. एवं द्वितीयं.

अथ तृतीयं अणुव्रत राजनिग्रह कारीउंपराउं अण दीधुं लेवा नियम, समस्त अदत्ता दान पचखांण २०, सूक्ष्म बादर भेदे १०, सराज निग्रह निराज निग्रह ५, आत्म राज निग्रह पर राज निग्रह २॥, पियारी दीधी पियारी अण दीधी एवं १।, राज निग्रह पडै तेहनो पचखाण. ते सराज निग्रह मांहे बे भेद— एक आत्म राज निग्रह, एक पर राज निग्रह. आपणां घर मांहि नी चोरी ते आत्मराज निग्रह, पारकी चोरी करिये ते पर राज निग्रह कहिये. हिवै ते आत्म राज निग्रह ते मोकलो, परराज निग्रह नो पचखांण. हिवै परराज निग्रह ना बे भेद ते किहां ? एक पियारी दीधी

एक पियारी अण धीधी. पार की दी वस्तु आणीआपै एतले कोई नी दृष्टी वंची एतले न लेवे सवा वसो त्रीजी व्रत नो जाणवो.

अथ चतुर्थ स्वदारा संतोष, परदारा विवर्जना रूप ए मांहि सर्व फलामणी छै. समस्त मैथुन विरमण वसा २०.मन वचन काया १०, स्वदारा परस्त्री ५, वेस्या अपरस्त्री मांहि बे भेद ते किहा? वेस्या नें अपरस्त्री ते मध्ये वेस्या नो नही पलै, अपर स्त्री नो पलसै. एवं २॥. अपर स्त्री मांहि बे भेद छै ते किहा? कुमारी अने परणी, अपर स्त्री ते कुमारी नहीं पलें, परणी परस्त्री नो पलसै. कुमारी श्या माटे मोकली ? जे विवाह मल्यो छै, परण्या नथी ते उपरे स्त्री नो अभिलाष धरे ते माटे, एतले सवा वसो रह्यो.आणंद श्रावक स्यसपादा विशेषाधिक.

अथ पांचमें आपणो परिग्रह स्त्रियादिक नो करी आपणें कार्ये आएयो होइ ए परिग्रह अणुव्रत. तिहां

समस्त परिग्रह विरमण वसा२०.अभ्यंतर नें वाह्य परि-
ग्रह विश्वा१०. पर आत्मा एवं५. स्त्री पीहर आत्म एवं
२॥. स्त्री आत्मा दत्त आत्मा १. अभ्यन्तर परिग्रह
क्रोध मानादिक नो नहीं पलै. अने वाह्य परिग्रह
दस प्रकार नो ते पलशे. एवं १० वाह्य परिग्रह
मांहे बे भेद ते किहा? एक आत्म परिगृह अने पर
परिग्रह. ते मध्ये आत्म परिगृह नो नहीं पलै, पर
परिग्रह नो पलशै. एवं ५, वलि पर परिगृह मांहि
बे भेद ते किहा? आत्मनियोग अने स्त्री पीहर. आत्म
नियोग ते स्यूं कहिये? जे वाणोतरादिक नो जे गर्थ ते
आत्म नियोग ते पलशे. अने स्त्री ना पीहर नो परिगृह
ते आत्म नियोग नो नही पलै. एवं २॥. स्त्री ना पीहर
नो परिगृह तेहना बे भेद ते किहा? एक स्त्री दत्त अने
एक स्त्री अदत्त एवं १। वसो थयो. इति पंचा अणु
व्रतानि.

इम श्रावक नें पांच अणुव्रत सवा वसानो होई,
तेहनो विवरण कह्युं छै. इत्यर्थः इति पंचाणु व्रत संपूर्ण,

२९६. अथ संसारे किंसारं. इति प्रश्न. अथ संसारं विसारं. धर्म अधर्म नाम सम्यग् दर्शन धर्म सारं, तस्य सारं नाणं सम्यग् ज्ञानं, तस्य सारं चरणं सम्यग् चारित्र. तस्य सारं निर्वाणं मोक्ष. इति अर्थ.

२९७. अथ प्रस्ताविक गाथा—(चत्वारिय वाराओ चउदस पूव्वी करेई आहारं । संसारं मिवसंतो एक भवे दुन्निवराओ ॥ १ ॥ समयो जहन्नमंतर उक्को सेणं जावछम्मास्सा । आहार शरीराणां उक्कोसेणं तु नव सहस्सा ॥ २ ॥ खई उषसूउव समीयं२ वेयगमुविसामी. यंच । सासाणा पंच विहं संमतं परूवियं जिणवरं देहिं ॥ ३ ॥ इति ॥ सुक्कमोय होई कालो ततो सुहुमतरं हवइ खितं । अंगुल सेढी मित्ते उसप्पिणीओ असंषिद्या ॥ ४ ॥)

२९८. तथा अनादि मिथ्यात्व नी वासना पतित ते अभव्य नें होइ, यथा प्रवृत्ति करण करें गंठी सुधि आवे पण पाछो पडे. तथाविषय लालसा पतित

दुर्भव्य नें होइ. यथाप्रवृत्ति करणे करी गांठ सुधि आवै पण पाछो पडै.अने निकट भव्य ते कर्म वर्गणा पतित कोईक कर्म ना उदय थी यथा प्रवृत्ति करण थकी पाछो पड़ै. एतलें वासना लालसा मिटी. ते मध्ये अभव्य नें मन्दता ते तीव्रता नें पमाडे. निकट भव्य नी मंदता ते क्षयोपशम भाव नें पमाडे. ए अर्थ. इति.

२९९.यथा प्रवृत्ति करण ते यथा जे जेहवा कर्म ना उदय आवै द्रव्य कर्म रूपें ते तिम वेदी नें निरजरइ, ते माहे नवा राग द्वेष न उपार्जे. इम अकाम निर्जराइ मंद ताइं करी तो गंठी सुधी. गांठ ते घणा राग द्वेष परिणाम भाविक कर्म नी गांठ आत्मा ना पुद्गल सुं ममत्वता एकी भूत, ते गांठ ते अपुर्व करण परिणाम विशेष भेदवा प्रारंभै, तेह नें अंते भेदी नें अनिवृत्तिकरण पामै. ए सर्व क्रिया अंतर्मुहूर्त्त नी. तिवार पछी मिथ्यात्व नो जावणो, उपशम समकित नो थावो, ते अंतर करण एक समय नो. इति ४ करण नो भावार्थ.

३००.तथा समकित पामै उपयोग शुद्ध समस्यो,ते

समरे जीव समस्यो, जीव समरै योग समरै, योग समरे परिणाम समस्यां,परिणाम समरै अध्यवसाय समस्यां, तिहां जीवितव्य समरै.शुद्धोपयोगे रूप शुद्ध श्रद्धान समकितते योग समरै, व्रत पचक्खाणे प्रणाम समरै,अप्रमत्त ताइंअध्यवसाय समरें, शुक्ल ध्यान रूप क्षपक श्रेणी इत्यादिक. इम परिपाटी ग्रन्थांतरे घणी है. इम विगडे पण, उपराठी रीते लीजे * इति अर्थ.

३०१.तथा परमाणु प्रदेश मध्ये श्यो विशेष छै ते कहै छैः– स्वभाविक तै परमाणु, विभावी ते प्रदेश, जे परमाणु बन्ध ने वलगो छै तिहां सुधी प्रदेश कहाये. छूटो पड्यो ते परमाणु पण बरोबरी दोइ उणो ते दस पूर्ण ते खंध. इति भाव.

३०२. पर्याप्त अने प्राण मध्ये श्यो विशेष ? तत्रोत्तरं–उपजती वेला अन्तर्मुहूर्त्त मांहि जीव करै ते पर्याप्ता, पछै जीवै तिहां सुधी रहे ते प्राण कहीये.

---

* पाठान्तरे 'लिख्यो छै.'

इति अर्थ.

३०३. सेत्रुंजे श्रीऋषभ देव पूर्व नवाणु वार आव्या एतले ६९कोडा कोडी ८५लाख कोड़ा कोडी ४४ हजार कोडी एतली वार ऋषभ देव सेत्रुंजे आव्या तिवारे पूर्व नवाणुं वार थाय, इम गुणतां केतले वरसे प्रभुजी सेत्रुंजे आव्या एहवूं ज्ञान विजे सूरिइम कह्युं छै. इति अर्थ.

३०४. अथ पांच शरीर नो शब्दार्थ पन्नवणा नी टीका मध्ये छै. उदारं प्रधानं शरीर मौदारिकं तीर्थ कर गण धर मच्चिकृत्यः तथा ऊदारिशा तिर्थेक्रयोजन सहश्र मानत्वात्। उदारिक वैक्रिय द्विधा सव धारणीयं उत्तर वैक्रियं यदेकं भूत्वा अनेकं भवति। अनेकं भूत्वा एकी भवति। शेष शरीर पेक्षया वृहत्प्रमाणं वैक्रियं २ आहा- रकं उक्तंच कथंमि समुप्पने सुय केवलिणाविसाद्दि- लद्धीए। जं एच्छ अहारिचिई भरणियं आकारं तंतु अत्यंत शुभ वैक्रियात इत्याहारकं ३ अथ तेजसं

† पाठान्तरे 'कोडी'

रसओम सिद्ध रसाइं । आहारयाकं जणगंच ते युगलादि निमित्तं ते यगं होइ नायव्वं भुक्ता आहार परि परणमन कारण ४ कर्मणो जातं कार्मजं कर्मपरिणामंच आत्म प्रदेशे सह क्षीर नीर वत् कार्मणो विकारं कार्मण मिति यदुक्तं यत : (कम्म विगारो कम्मण मट्ठि विह विचिकम्मानिप्पन्नं । सव्वेसि सरीराणां कारण भूतं मुणे यव्वं ॥) इति श्रीपांच शरीर व्याख्या परिसम्पूर्णम् ॥

॥ इति श्रीरत्नसार ग्रन्थ ॥

॥ सम्पूर्णम् ॥

रत्नसार ग्रन्थ में २५ वां प्रश्न ध्यान प्रतिबंधक नाम का आया है उस का अर्थ इस मुजब है:—

शुद्ध आत्मादि नव तत्वों के विषें विपरीत बुद्धि को उत्पादक वो मोह मिथ्यात्व है. विकाररहित आत्म ज्ञान तिसे विलक्षण वीतराग चारित्र में मुंभावे ऐसो मोह एतावत् चारित्र मोह वो द्वेष कहते हैं. प्रश्न—चारित्र मोह शब्द करके राग द्वेष कैसे कहिये? इस का उत्तर—कषायों में क्रोध मान ये दोय द्वेषांग हैं, माया और लोभ ये दोय राग के अंग हैं. नव नो कषाय में तीन वेद हास्य राति दोय ये पांच राग के अंग हैं. अराति और शोक ये दो और भय जुगुप्सा ये दो मिल च्यार द्वेष के अंग जानना. यहां शिष्य कहता है— राग द्वेषादिक क्या कर्म—जनित है कि आत्म—जनित है ? ऐसे प्रश्न का पीछा उत्तर— नय की वांछा के वश करके वांछित एक देश शुद्ध निश्चय करके कर्म—जनित कहते हैं

तैसेही अशुद्ध निश्चय करके जीव-जनित हैं. ऐसो वोही अशुद्ध निश्चय शुद्ध निश्चय की अपेक्षा करके व्यवहार है. अब हम ने जाना परन्तु हे गुरु साक्षात् शुद्ध निश्चय करके ये राग द्वेष किसके हैं या म्हे पूछा हां. तहां गुरु उत्तर देते हैं कि साक्षात् शुद्ध निश्चय करके स्त्री पुरुष संयोग रहित पुत्र की नाईं,भला हलद संयोग बिना, रंग विशेष की नाईं,इन राग द्वेष की उत्पत्तिज नहीं, कैसे हम उत्तर देवें.

पद.

॥ राग धनाश्री ॥

परम गुरु जैन कहो क्यों होवे। गुरु उपदेश बिना जन मूढा, दर्शन जैन बिगोवे॥ परम गुरु जैन कहो क्यों होवे॥ टेक ॥१॥ कहत कृपानिधि समजल झीले, कर्म मयल जो धोवें। बहुल पाप मल अंग न धारे, शुद्ध रूप निज जोवें॥ परम० ॥ २ ॥ स्यादवाद पूरन जो जाने, नय गर्भित जस वाचा। गुन पर्याय द्रव्य जो बूझे, सोई जैन है सांचा॥ परम० ॥ ३ ॥ क्रिया मूढ

मति जो अज्ञानी, चालत चाल अपूठी। जन दशा उन मेंही नाहीं, कहे सो सबही झूठी ॥ परम० ॥ ४ ॥ पर परणति अपनी कर मानै, किरिया गर्वे घेहलो । उन कूं जैन कहो क्यों कहिये, सो मूरख में पहलो ॥ परम० ॥५॥ ज्ञान भाव ज्ञान सब मांही, शिव साधन सर्दहिओ। नाम भेष से काम न सीझे, भाव उदासे रहिए ॥ परम० ॥ ६ ॥ ज्ञान सकल नय साधन साधो, क्रिया ज्ञान की दासी । क्रिया करत धरतु है ममता, याहि गले में फांसी ॥ परम० ॥ ७ ॥ क्रिया बिना ज्ञान नहिं कबहुं, क्रिया ज्ञान बिनु नाहीं। क्रिया ज्ञान दोउ मिलत रहतु है, ज्यों जलरस जल मांहीं ॥ परमप्रभु० ॥८॥ क्रिया मगनता बाहिर दीसत, ज्ञान शक्ति जस भाँजे । सद् गुरु सीख सुनै नहिं कबहूं, सो जन जन तें लाजे ॥ परम० ॥९॥ तत्व बुद्धि जिन की परणति है, सकल सूत्र की कूंची । जग जस वाद वदे उन ही को, जैन दशा जस ऊंची ॥परम०॥१०॥

॥ राग सारंग ॥

कंत बिना कहो कौन गति नारी ॥ टेक ॥ सुम

सखी जाइ वेगी मनावो, कहै चेतन सुन प्यारी॥कंत०॥१॥
धन कन कंचन महल मालिए, पिउ बिन सबाहि उजारी।
निद्रा जोग लहूं सुख नाहीं, पिउ वियोग तुन जारी॥
कंत०॥ २ ॥ तोरे प्रीत पराई दुरजन, अछते दोष
पुकारी। घरभंजन को कहन न कीजे, कीजे काज
विचारी॥ कंत०॥३॥ विभ्रम मोह महा मद बिजुरी,
माया रैन अंधेरी। गर्जित अरति लवे रति दादुर, काम
की भइ असवारी॥ कंत०॥४॥ पिउ मिलवे को मुझ
मन तलफै, मैं पिउ खिदमतगारी। भुरकी देइ गये
पिउ मुझ कूं, न लहे पीर पियारी॥ कंत०॥५॥
संदेश सुनि आए पिउ उत्तम, भई बहुत मनुहारी।
चिदानंद घन सुजस बिनोदें, रमे रंग अनुसारी॥कंत०॥६॥

॥ राग धनाश्री ॥

परम प्रभु सब जन शब्दें ध्यावे। जब लग
अंतर भरम न भांजे, तब लग कोउ न पावै॥ परम
प्रभु०॥१॥ टेक॥ सकल अंस देखै जग जोगी, जो खिनु
समता आवे। ममता अंधन देखे याको, चित चहुं

ओरै ध्यावे ॥ परम प्रभु० ॥२॥ सहज शक्ति अरु भक्ति सुगुरु की, जो चित जोग जगावे । गुन पर्याय द्रव्य सुं अपने तो लय कोऊ लगावे ॥ परम प्रभु० ॥ ३ ॥ पढत पुरान वेद अरु गीता, मूरख अर्थ न भावे । इत उत फिरत ग्रहत रस नाहीं, ज्यों पशु चर्वित चावे ॥ परम प्रभु० ॥४॥ पुद्गल से न्यारो प्रभु मेरो, पुद्गल आप छिपावे । उन से अंतर नहीं हमारे, अब कहां भागो जावे ॥ परम प्रभु० ॥५॥ अकल अलख अज अजर निरंजन, सो प्रभु सहज सुहावे । अंतरजामी पूरन प्रगट्यो, सेवक जस गुन गावे ॥ परमप्रभु० ॥६॥

॥ राग धनाश्री ॥

चेतन ज्ञान की दृष्टि निहालो । चेतन० ॥टेक॥ मोहदृष्टि देखे सो बावरो, होत महा मतवालो । चेतन० ।१। मोहदृष्टि अति चपल करत है, भव वन वानर चालो ॥ योग वियोग दावानल लागत, पावत नाहिं विचालो ॥ चेतन० ॥२॥ मोह दृष्टि कायर नर डरपै, करे अकारन टालो । रण मैदान लडै नहिं अरि सुं, सूर लडै ज्युं पालो ॥ चेतन० ॥३॥ मोह दृष्टि जन जन के परवश

दीन अनाथ दुखालो । मांगे भीख फिरे घर घर सुं, कहै मुझ को कोउ पालो ॥ चेतन० ॥४॥ मोह दृष्टि मद मदिरा माती, ताको होत उछालो । पर अवगुण राचे सो अह निस, काग असुचि ज्यों कालो ॥ चेतन० ॥५॥ ज्ञान दृष्टि मां दोष न एते, करै ज्ञान अजुआले। चिदानंद घन सुजस बचन रस, सज्जन हृदय पखालो ॥ चेतन० ॥ ६ ॥

॥ राग कानडो ॥

मारग चलत चलत गात, आनंद घन प्यारे । रहत आनंद भरपूर ॥ मा० ॥ ताको सरूप भूप, तिहु लोक तें न्यारो । बरषत मुख पर नूर ॥ मा० ॥ १ ॥ सुमति सखी के संग, नित नित दोरत । कबहुन होत ही दूर। जस विजय कहे सुनोही आनन्द घन, हम तुम मिले हुजूर ॥ मा० ॥ २ ॥

अंतर्मुहूर्त्त आठ समय उप्रांत बे घड़ी माहि जाणवो, ते सम्यक्त उपशम नो काल छे. इहां क्षेत्र पुद्गल परावर्त्त कर अधिकार नथी. द्रव्यादिक करके पुद्गल परावर्त्त जाणवो. ए उपदेश कंदली में छे.

१५७ वें प्रश्न में 'पुव्व भवासो' इत्यादि गाथा आई है उस का अर्थः—

जाति समरण नो धणी एक दो तीन जावत नव भव पूर्व भव ना देखे उपरि ते नो विषय नथी एज स्वभाव जाति समरणनो.

चक्र १ खड्ग २ छत्र ३ दंड ४ ए च्यार चक्रवर्त्तने आयुध शाला मे होय, चर्म १ मणि २ कांगणी ३ नवनिधि भंडारे चक्रवर्त्तनें होय, १. सेनापति १ गहा पति २ पुरोहित ३ अने वार्द्धिक रत्न ४ ए च्यार पोताने नगरे उपजे. स्त्री रत्न राजाने कुले उपजे. वेताढ्य तले हास्ति रत्न अश्वरत्न ए बे उपजे.

१५८वें प्रश्न में 'सट्ठ गउ' इत्यादि गाथा आई उस का अर्थः—

सर्वार्थ सिद्ध विमाने गयो निश्चे एक भवे सीझे, विजयादि च्यार मे गयो ख्याते भवे सीझे.

इसी प्रश्न में 'कीटिका वहवो' इत्यादि आया है उस का अर्थः—

कीडियो घणी छे अथवा नर बहु छे.

इसी प्रश्न में 'यदा समुर्च्छिम' इत्यादिक गाथा आई है उस का अर्थः—

जिवारे समुर्च्छिम मनुष्य नो विरह काल होय ते वखतें कीडियो घणी अने समुर्च्छिम नो विरह न होय तिवारे नर घणा.

इसी प्रश्न में 'यस्य पुरुषस्य' इत्यादि संस्कृत आई है वह अशुद्ध मालूम होती है तो पण अभिप्राय ऐसा मालूम होता है:—

कुकुडी अंड प्रमाणे बत्तीस कवल आहार कह्यो ते किम् ए प्रश्न. उत्तर—कुटी नाम शरीर नो छे

१२१वें प्रश्न में 'दंसण मोहे' इत्यादि गाथा आई है उस का अर्थः—

दर्शन मोहनी थी सम्यक्त परिसह उपजे. ज्ञानावरणी थी प्रज्ञा परिसह और अज्ञान परिसह उपजे. अंतराय थी अलाभ परिसह उपजे, चारित्र मोहनी थी आक्रोश१ अरती२ स्त्री परिसह३ निसिया प०४ अचेल प०५ याचना प० ६ सत्कार प० ७ ए सात उपजे. वेदनी थी क्षुधा १ तृषा २ शीत ३ उष्ण ४ दंश प०५ चरिया प० ६ सिया ७ जल्ल ८ बध प० ९ रोग १० तृण फास ११ ए इग्यारे परिसह उपजे.

१५१वें प्रश्न में 'सीहत्ताए' इत्यादिक गाथा आई है उस का अर्थः—

सींह पणे निकल्यो सींह पणे विचरे जैसे जंबू थुल भद्र, सींह पणे निकल्यो सियाल पठे विचरे कच्छादिक नी परे. सियाल पठे निकल्यो सींह पणे विचरे मातार्यादिक पठे. सियाल पठे निकल्यो सियाल पठे विचरे.

१५६ वें प्रश्न में 'बंधण१ गई२' इत्यादि गाथा आई है उस का अर्थः—

बंधन, गति, संठाण, भेय, वर्ण, रस, गंध, स्पर्श, अगुरु लघु अने शब्द ए दश परिणांम अजीव छे.

इसी प्रश्न में 'जीवेण केहवी फासि' इत्यादि गाथा आई है उस का अर्थः—

जीव किवारे इपण न फरस्यो अंतर्मुहूर्त पण सम्यक्त जं माटे सम्यक्त फरस्यां पछि निश्च अर्द्ध पुद्गल मां न्यून संसार भमवो बाकी रहे छै. इति गाथार्थः

इसी प्रश्न में 'पुद्गलनां परावर्त्त' इत्यादिक संस्कृत आई है उस का अर्थः—

पुद्गल नो पलटवो ते पुद्गल परावर्त्त कहिये. ते पुद्गल परावर्त्त मांहि थी कांइक ओछो अर्द्ध पुद्गल परावर्त्त. एतावता अर्द्ध विशेष गयो पुद्गल परावर्त्त ते अपार्द्ध पुदगल परावर्त्त कहिये.

इसी प्रश्न में 'अंतर्मुहूर्त्त अष्ट समयोर्द्ध इत्यादिक स्कृत आई है उस का अर्थः—

७६वें प्रश्न में 'यथोक्तं समुद्र वत्' आया है उस का अर्थः—

जेम कह्यूं छे समुद्र नी पठे कटोरो भरयो ते समुद्र जेहवां, ए हीन नें अधिक ओपमा. अने कटोरा नी पठे समुद्र भरयो छे, ए अधिक नें हीन ओपमा.

७९वें प्रश्न में 'एकस्याल्प' इत्यादि आर्या आई है उस का अर्थः—

एक नें अल्प हिंसा छे ते अपि कालांतरे बहु फल. एटले अल्प हिंसा पण बहु कष्ट आपे. अने बीजानें महा हिंसा ते परिपाक काले थोडुं फल देनारी थाय. ए आर्या छंद नो अर्थ.

९३वें प्रश्न में 'सत्तारिसय' इत्यादि गाथा आई है उस का अर्थः—

एक सो सित्तर तीर्थंकर उत्कृष्ट काले जाणवा. वीस विहरमान जिन समय क्षेत्र में अथवा भरतेरवत ना दश अथ वीस जनमे एक समे विहरमान दश जनमे भरतेरवतना.

९६वें प्रश्न में 'अद्धे तेरस' इत्यादि गाथा आई है उस का अर्थ:—

साढि बार कोड उत्कृष्ट सोनाइया नी वृष्टि होय जिहां तीर्थंकर पारणो करे तिहां अने जघन्य साढी बारे लाख सोनइया नी वृष्टि होय ए वसुधारा प्रमाण छे.

१०३रे प्रश्न में 'द्वादशश्चैव'इत्यादिक काव्य है उस का अर्थः—य गाथा अशुद्ध मालुम होतीहै तो पण भावार्थ लिखते हैं:—

सो कोड बारे कोड असी लाख कोड एतावता असी लाख नें एक सो बारे कोड उपर अठावन हजार कोड संख्या अंग ना पद नी श्लोक संख्याकही तेने नमुं छुं.

इसी प्रश्न में 'अट्ठेव' इत्यादि गाथा आई है उस का भावार्थः—

एकावन कोड आठ लाख चोरासी हजार छसो साढा इकवीस एटले एक पद नो ग्रन्थ छे.

श्रीरत्नसार में जो गाथाएं आई हैं उन का भावार्थ.

---

१६ वें प्रश्न में 'सव्वदुक्खाण' इत्यादि गाथा आई है उस का अर्थः— सर्व दुक्खों का अंत करे.

२३वें प्रश्न में 'धम्मो धम्म फलंहि' इत्यादि गाथा आई है उस का अर्थः—

धर्म है सो धर्म फलहि है. द्वेष और नहिं हर्ष होय वो संवेग कहिये. संसार उपर देह उपर विषयादिकों उपर तृष्णा मिटे त्याग होय एटले संसार देह शरीर और भोग विषयों नें विषे विरति भाव होय तेनें वैराग कहिये.

२५ वें प्रश्न का अर्थ ग्रन्थ समाप्त हुआ उस के आगे प्रथम पृष्ठ में छपा है.

२७ वें प्रश्न में 'धम्मो वत्थु सहावो' इत्यादि गाथा आई है उस का अर्थः—

धर्म छै ते वस्तु नो स्वभाव छे, और क्षमादि भाव धर्म ते दश प्रकार क्षमादि जाणवो, और रत्नत्रय ज्ञानादि ते धर्म है, और जीवो नी रक्षा करवी ते पिण धर्म छे.

६६वें प्रश्न में 'पुइयाइ सुवच्चसहियं' इत्यादि गाथा आई है उस का अर्थः—

भला व्रत सहित पूजादिक में पुण्य जिनराज तीर्थंकरे दीठो परूप्यो, अने मोह कोह रहित परिणाम ते आत्मानो धर्म केवलीइं दीठो.

७२वें प्रश्न में 'लक्ष्य लक्षणे ज्ञायते' है उस का अर्थः—

लक्ष जे आत्मा ते लक्षण करी जाणिइं.

७५वें प्रश्न में 'जयं चरे' इत्यादि गाथा आई है उस का अर्थः—

जयणांई चाले, जयणांई उभो रहे, जयणांई बेसे, जयणांई सुई, जयणांई भोजन करे, जयणांई बोलतो थको पाप कर्म न बांधे.

अने खोटी कुटी ए शरीर तेनो अंड ते सुख केम के ए शरीर नें मुख प्रथम थाय माटे ए अंड छे. शरीर नें एतावता शरीर नो मुख तेमां जेटलूं सुखे मावे, खावा में सुखे खवाय ते माटे कुकुटी अंड प्रमाण कवल बत्रीस नो पूरो अहार छे एम जाणवुं.

१६४वें प्रश्न में 'अच्छि अणंता जीवा' इत्यादि गाथा आई है उस का अर्थः—

छे अनंता जीव एह जे हुइं त्रसादि पणो पण न पाम्यो उपजी रह्या छै अने चवि रह्या छे ते निगोद मांहिज वारंवार. ए गाथार्थः

१६८वें प्रश्न में 'येषांहि वस्त्रे' इत्यादि संस्कृत काव्य है उस का अर्थः—

जेहुना वस्त्र मां जुं न पडे १ जिहां विचरे ते देश नो भंग न थाय २ देश मां चिंता न उपजे ३ पग नो धोवण पीवे तेनो रोग नाश थाय ४ ये च्यार अतिशय. अने बीजा जे युग प्रधान नाम धरानारा पेटभरा छे.

ईसी प्रश्न में 'दुर्गतौ पतत्' इत्यादि श्लोक है उस का अर्थः—

दुर्गति में पडतां प्राणी नें जे धारण करे तेथी धर्म कहिये. ते धर्म संजमादि दश प्रकारनो छे केवलीइं कह्यूं विमुक्ति नें अर्थः—

१६९वें प्रश्न में 'आत्मानं भावयतीति' इत्यादि संस्कृत है उस का अर्थः—

आत्मा नें ज्ञानादिके करी भावे ते भावना कहिये. आत्मा नें अधिकरीनें करे ते अध्यात्म कहिये. माने जगत्तत्त्व नें वो मुनि कहिये तेहज मुनि कह्यो, सत्य बोलवो तेहज मौन, मौन तेहज मौन सम्यक्त छे.

इसी प्रश्न में 'परहित चिंता' इत्यादि आर्या आई है उस का अर्थः—

पर ना हित नी चिंता ते मित्री भावना १. परना दुःख नी विनाशकरनारी ते करुणा २. परनें सुखी देख तुष्ट थाय ते मुदिता ३. पर ना दोष देख मध्यस्थ रहे ते उपेक्षा भावना ४. ए आर्या नो अर्थ.

ईसी प्रश्न में 'अंतमुहुत्तमित्ता' इत्यादि गाथा आई है उस का अर्थः—

अंतर्मुहूर्त्त चित्तनो रहिवो एक वस्तु नें विषे ते छद्मस्त नो ध्यान छे. अने जोग नो रोकवो ते जिन नो ध्यान छे.

१७० वें प्रश्न में 'उसम पिया' इत्याथि गाथा आई है उस का अर्थः——

ऋषभ ना पिता नागकुमार मे, अजितादि सात ना ईशाण देव लोक में गया, अने आठ नवमांथी आठ तीर्थंकर ना पिता सनत्कुमार देवलोके गया, अने सतरमां थी आठ ना पिता माहिंद देव लोक मे गया १. आठ पेला तीर्थंकर थी ले तीर्थंकर नी मातो सिद्धि गति में गई. तेथी आठ नी माता सनत्कुमार देवलोके गई. तेथी आठ माहिंद देव लोके गई.

१८३वें प्रश्न में 'सामग्रीअ' इत्यादि गाथा आई है उस का अर्थः—

जे भव्याभव्य जीव ते सामग्री नें न पामतो ते

नही पामवा थी व्यवहार राशि में नहीं प्रवेश थया थी एहवा भव्य अनंता हे पण मुक्ति नां सुख न पावे.

इसी प्रश्न में ' अच्छि अणंता' इत्यादि गाथा है उस का अर्थः—

छे अनंता जीव जेउ नाहिं पाम्या त्रासादि परिणाम माटे उपजी रह्या छे चवि रह्या छे वारं वार तिहाना तिहां निगोदमां.

१९१वें प्रश्न में 'जं अज्जियं' इत्यादि गाथा आई है उस का अर्थः—

जे उपार्ज्जन कस्यो चारित्र देश उण पूर्व कोडि सके ते कषाय मात्र एतावता लिगारे कसाय करे वे नर जो हे सो मुहूर्त्त एक में सर्व हारि जाय एतावता कमायो चारित्र सर्व गमावे.

२१०वें प्रश्न में 'दशाभि' इत्यादि संस्कृत आई है उस का अर्थः—

दश हस्ते करी एक वंस, वीस वंसे करी एक निवर्त्तन, पांच से निवर्त्तन रो एक हल.

२१३ वें प्रश्न में 'चतुर्दश महा' इत्यादि श्लोक आया है उस का अर्थः—

चउद महा स्वपनो ने सुखे सुती तेवि रिते राणी मुख में पेठता देखती हुई, केवा छे सुपना भला आकार ना धरनार एहवा तेहुने देखती हुई.

२१८ वें प्रश्न में 'जणवय संमय' इत्यादि गाथा आई है उस का अर्थः—

जन पद सत्य ते देश भाषा १ संमत सत्य ते पंडितो ने बहुते मान्यो २ थापना सत्य ते जिन प्रतिमा ने जिन कहे ३ नाम सत्य ते निर्द्धन नें धनपाल ४ रूप सत्य ते स्वरूप ५ प्रतित सत्य ते वस्तु ६ व्यवहार सत्य ७ भाव सत्य ८ जोग सत्य ९ ओपमा सत्य १०

२२० वें प्रश्न में 'पुठं सुणेइ' इत्यादि गाथा आई है उस का अर्थः—

स्पर्श थयो ते शब्द सुणे, अने वली रूप ते अफरस्यो देखे, गंध रस बद्ध फरस्यो जाणे, फरस पण फरस्यो जाणे एम कहे छे.

२२४ वें प्रश्न में 'उसेहंगुल मेगं' इत्यादि गाथा दो आई है उन का अर्थः—

उत्सेधांगुल एक ने हजार गुणो करे प्रमाणांगुल थाय, तेज बमणों करे तो वीरनो अंगुल थाय १ आत्मांगुले करी घरादि मापो, उत्सेधांगुल प्रमाणथी देही नो मापो, अने पर्वत १ पृथ्वी २ विमानादिक मापा प्रमाणांगुल थी मापणा.

२३० वें प्रश्न में 'नाहं दोसीं' इत्यादि गाथा तीन आई है उन का अर्थः—

नथी हुं बीजा नो द्वेषी, न माहरे बीजो कोई, हां माहरो श्युं छे ए आत्मभावनाए करी राग द्वेष विलय जाय. १. ज्ञान नी विशुद्धि छे ते आत्मा एकांत नथी शुद्ध थयो तो श्युं? जे माटे नाण ते आत्मा, आत्म तोहिज ज्ञान होय छे. २. जे मांटे भगवतीजी मां कह्यो छे आत्मा ते सामायक, आत्मा ते हिज सामायक नो अर्थ, ते माटेज ए सूत्र कहे छे आत्मा परिणाम. ३.

इसी प्रश्न में 'येषां नचेतो' इत्यादि संस्कृत

काव्य आया है उस का अर्थः—

जेहु ना चित्त स्त्रियो में लाग्या नहिं, जे साहित्य सुधा समुद्र में मग्न न थया, हा इति खेद करि कहे छे माहरो प्रयास ते केम जाणशे? जेम अंध जे ते वेश्या ना विलास न जाणे तेम.

२३५ वें प्रश्न में 'आकुटिया' इत्यादि संस्कृत आई है उस का अर्थः—

आकुटि कर्म बांधे ते केम के अनाभोगपणे करी एतावता पाप ना फल ने न मानतो सावद्य करवानो उत्साह जेहवे ते आकुट्टी कर्म.१. दर्प करी दोड़े कूदे हाजो करे नाटकादिकंदर्प करे ते दर्प. २. अने प्रमाद ते रात्र दिन में पडिलेहणा प्रमार्जनादिक में उपयोग न राखे ते प्रमाद कर्म.३. कल्प ते कारण दर्शन प्रमुख चउवीश पड़े छते गीतार्थ नें कृत योगी नें उपयोग छते अजेणाइं करी वर्त्तते छते आधा कर्मादि दान रूप ते कल्प कर्म.४.

२३९ वें प्रश्न में 'जोभणाई' इत्यादि च्यार गाथां

रात्रि नें विषे कमल नो संकोच थाय छे ते लोक संज्ञा छे, रूंख नां उत्तम अंगे चढे वेलो ते पण. ६.

२४५वें प्रश्न में तीन गाथा 'बन्ध अविरई' इत्यादि आई हैं उन का अर्थः—

कर्म बन्ध अविरति हेतु जाणतो छतो रागद्वेष जाणतो छतो विरतीने इच्छतो थको पण विरति करवाने असमर्थ. १.

ए प्राणी असंजत सरखो निंदतो थको पाप कर्म ने जीव अजीव नो जाण एने सम्यग् दृष्टी अबल छे अने मोह ते बलवन्त छे. २.

सम्यग् दृष्टी कर सहीतहे ग्रहण करे अल्प शक्ति माटे विर एक व्रतादि १२ व्रत अनुमति मात्र वो देश यति.३.

२४६ वें प्रश्न में 'छाद्मते' इत्यादि संस्कृत है उस का अर्थः—

ढांके केवल ज्ञान अने केवल दर्शन आत्मा नो इणे

करीने ते छद्म कहिये. ज्ञानावरण, दर्शनावरण मोह-नीय अंतराय कर्म उदय छतां तेमां केवल ज्ञान को उपजवो नथी. माटे छद्म छे ते छद्म वेगलो जाय तिवारे नजीकज केवल ज्ञान उपजे ते छद्म ने विषरहे ते छद्मस्तछे.

२५५ वें प्रश्न में 'काले सुपत्त' इत्यादि गाथा आई हैं उन का अर्थः—

काले सुपात्र दान १ अने सम्यक्त निर्मल बोधि लाभ २ समाधि मरण ३ एतला वाना अभव्य जीव छे ते न पामे. १.

व्रत ग्रहण किया जिण दिवस थी अखंड चारित्र जिणरो एहवो वली गीतार्थ तेहने पासे सम्यक्त व्रत ग्रहण करवा तथा आलोयण लेवी कही छे. २.

किहांई जीव बलवान छे किहांइ कर्म बलवान छे अने जीव ने कर्म ने अनादि नो संबंध बंध्यो छे. ३.

काल १ स्वभाव २ नियती निश्चय होणहार. ३ पूर्व्व कृत ते पुण्य ४ पुर सकार ते उद्यम ५ ए पांच

कारण जाणवा पिण एकांते एकने मानवा थी मिथात्व जाणवो. सर्व मिले सम्यक्त छे दृष्टन्त—आंधलोइ दीठा हाथी नी परे.४. ए च्यार गाथा नो अर्थ छे.

२७१वें प्रश्न में 'पडिरूवो' इत्यादि दो गाथा आई हैं उन का अर्थः—

प्रतिरूप एटले रूपवन्त१ तेजस्वी ते तेजवन्त२ जुगप्रधान ते उत्कृष्ट आगमना पारगामी एटले सर्व शास्त्र ना जाण३ महुर वक्को नाम मधुर वचन बोलने वाला४ गंभीर पेटावाला५ धिईमन्त नाम धीर्यवन्त६ उपदेश देवा मां तत्पर अने रूडो आचार पालनार ७ एहवो आचार्य. १.

अपरिस्सावी ते सांभलेलो भूले नहीं ८ सोमो नाम सौम्य देखे तेने साता उपजे ६ संग्रहशील एतावता उपगरणादि संग्रहे१० अभिग्रह मति त्यागादि में प्रवर्त्ते ११ अविकथन विकथा न करे मन में राखे१२ अचपल चले नहीं १३ प्रसन्न हृदय वाला १४. २.

२७२वें प्रश्न में 'आवसगंतु' इत्यादि गाथा

आई है उस का अर्थः—

आवश्य करिनें जिनराज उपदेश ते हमारा गुरु उपदेश करीनें तीन थुइ एग सिलोगादि करीनें पाडिलेहणा करवी कालग्रहण करवाणी विधि इहां ए छे.

२७५ वें प्रश्न में 'तव संयमेण' इत्यादि पांच गाथा आई हैं उन का अर्थः—

तप और संजम करीनें तो कर्म नो मोक्ष थाय छे १ अने दान देवे करीनें उत्तम भोग मले छे २ देव पूजाई करी राज मले छे ३ अणसण मरण मरवे देवपणो पामे. १.

इंद्रपणो १ चक्रवर्त्तिपणो २ पंचानुत्तर विमाण वासिपणो ३ लोकंतिक देवपणो ४ ए अभव्य जीव ते न पामे. २.

संगमो देव १ काल वसूरियो कसाई २ कपिला श्रेणिक नी दासी ३ अंगारमर्दकाचार्य ४ पालक पापी ५ दूजो क्रिसनजी को पुत्र पालक ६ सातमो उदाइ नारो ७ ए सात अभव्य प्रसिद्ध. ३.

और तुच्छ निद्रा होय, वली तुच्छ आरंभ होय, जेमज कषाय तुच्छ होय तो तेहने तुच्छ संसार जाणवो. ४.

आ भरत क्षेत्र मां केइ जीव मिथ्यादृष्टी छे, भद्र छे, भव्य छे तिक मरीने नवमें वरसे होवेगा केवली. ५.

२७७वें प्रश्न में श्लोक है उस का अर्थः—

दर्शन छ ना ए नाम छे—बौद्ध शून्यवादी १ नैयायिक षोड़श पदार्थ वादी २ सांख्य तीन प्रकृति वादी ३ जैन स्याद् वादी ४ वैशेषिक षट् पदार्थवादी ५ जैमिनि मीमांसक वादी ६.

२८२वें प्रश्न में 'केन ग्रन्थीइत्यादि' संस्कृत पाठ आया है उस का अर्थः—

किसने गांठ छोडाने बाह्य अभ्यंतर परिग्रह चोवीस छे तेहनी विगत खेत १ घर २ धन ३ धान ४ दासादि द्विपद ५ चोपद ६ यान ७ शय्या ८ शयन ९ भांडा १० कुपद घर विखरी ए दश प्रकारे परिग्रह . बाह्य ग्रंथी छे.१. मिथ्यात्व १ तीन वेद ४ हास्य, रति,अरति,भय,शोच,दुगंछ ए छ ६ नो कषाय मिलि १०,

कषाया च्यार १४ राग द्वेष सहित ए चउद प्रकारे अभ्यंतर गांठ परिग्रह मिलनें २४ हुवा. २.

२८३वें प्रश्न में 'सामं प्रेमंकरं' इत्यादि श्लोक आया है उस का अर्थः—

प्रेम करवानो वचन ते साम नामा नीति २ धन आपवो तेथी झगड़ो मिटे ते दान नामा नीति २ पुरुषो नें तरफी करवी ते भेदनामा नीति ३ प्राणोने हणवा ते दंड नीति ४ ए च्यार प्रकार नी राजनीति जाणवी.

२८५वें प्रश्न में 'एकेंदी' इत्यादि ३ गाथा आई है उन का अर्थः—

एकेंद्री में वायु छे ते ऊर्द्ध अध तिर्छा तीनोंई लोक में छे अने वली विगलिंद्री जीव तिर्छा लोक मेंज जाणवा. १.

पृथ्वी काय, अपकाय, वनस्पति काय बारे देव लोक अने सात नरक में जाणवी. तथा पृथ्वी काय जावत् सिद्ध शिला अने ते फगत तिरछा लोक मनुष्य चेत्र मेंज छे. २.

और तुच्छ निद्रा होय, वली तुच्छ आरंभ होय, जेमज कषाय तुच्छ होय तो तेहने तुच्छ संसार जाणवो. ४.

आ भरत क्षेत्र मां केइ जीव मिथ्यादृष्टी छे, भद्र छे, भव्य छे तिके मरीने नवमें वरसे होवेगा केवली. ५.

२७७वें प्रश्न में श्लोक है उस का अर्थः—

दर्शन छ ना ए नाम छे—बौद्ध शून्यवादी १ नैयायिक षोडश पदार्थ वादी २ सांख्य तीन प्रकृति वादी ३ जैन स्याद् वादी ४ वैशेषिक षट् पदार्थवादी ५ जैमिनि मीमांसक वादी ६.

२८२वें प्रश्न में 'केन ग्रन्थीइत्यादि' संस्कृत पाठ आया है उस का अर्थः—

किसने गांठ छोडाने बाह्य अभ्यंतर परिग्रह चोवीस छे तेहनी विगत खेत १ घर २ धन ३ धान ४ दासादि द्विपद ५ चोपद ६ यान ७ शय्या ८ शयन ९ भांडा १० कुपद घर विखरी ए दश प्रकारे परिग्रह ते बाह्य ग्रंथी छे.१. मिथ्यात्व १ तीन वेद ४ हास्य, रति, अरति, भय, शोच, दुगंछ ए छ ६ नो कषाय मिलि १०,

कषाया च्यार १४ राग द्वेष सहित ए चउद प्रकारे अभ्यंतर गांठ परिग्रह मिलनें २४ हुवा.२.

२८३वें प्रश्न में ' सामं प्रेमंकरं ' इत्यादि श्लोक आया है उस का अर्थ:—

प्रेम-करवानो वचन ते साम नामा नीति २ धन आपवो तेथी झगडो मिटे ते दान नामा नीति२ पुरुषो नें तरफी करवी ते भेदनामा नीति३ प्राणोने हणवा ते दंड नीति४ ए च्यार प्रकार नी राजनीति जाणवी.

२८५वें प्रश्न में ' एकेंद्री ' इत्यादि ३ गाथा आई हैं उन का अर्थ:—

एकेंद्री में वायु छे ते ऊर्द्ध अध तिर्छा तीनोई लोक में छे अने वली विगलिंद्री जीव तिर्छा लोक मंजे जाणवा. १.

पृथ्वी काय, अपकाय, वनस्पति काय बारे देव लोक अनें सात नरक में जाणवी. तथा पृथ्वी काय जावत् सिद्ध शिला अने ते फगत तिरछा लोक मनुष्य क्षेत्र मंज छे. २.

सुर लोक में बावडी में मच्छ जलचर जीव छे ग्रिवेयक में बावी नथी ते माटे बावडी विना जलपण नथी जलचर किहां थी होय. ३.

२९४-२९५वें प्रश्न में मैथुन अणुव्रत में "मण वय' इत्यादि गाथा आई उस का अर्थः—

मन मैथुन १ वचन मैथुन २ काय मथुन ३ स्व स्त्री ४ परस्त्री ५ वेश्या ६ विधवा ७ रूपस्त्री ८ रूप सहगत स्त्री ९ कुमारी १० ए दश मैथुन जागता और सुपने में २० हुवा. ते मां श्रावकरे काय स्त्री १ विधवा २ वेश्या ३ कन्या ४ परस्त्री ५ का ज त्याग थाय ते पण एक करण छुटा माटे २॥ ते पण जगते १। रहे.

२९६वें प्रश्न में 'संसारेकिंसारं' विषय का खुलासाः—

संसार मां श्युंसार छे ते कहे छे बे सार—धर्म १ बीजो अधर्म स्त्री भोगादि २. ते मां पण धर्मजसार छे केम के तेथी सुख मिले छे ते धर्म में सम्यग् दर्शन

सार छे धर्म नो मूल माटे तेनो सार ज्ञान छे ते जाणवा माटे, तेनो सार चारित्र छे निराश्रव माटे, तेनो सार निर्वाण छे सर्व क्लेश मिटवा माटे.

२९७ वें प्रश्न में 'चत्तारिय' इत्यादिक ४ गाथा आई हैं उन का अर्थः—

संसार में चउद पूर्वी च्यार वार आहारिक शरीर करे अने एक भवे बे वार करे. १.

आहारिक शरीरी आहारिक शरीर करवा को अन्तर पडे तो जघन्य एक समय पछे करे माटे एक समय नो अन्तर पडे उत्कृष्टो अन्तर जाव छ मास नो पडे अने आहारिक शरीरी एक समे लाधे तो उत्कृष्ट नव हजार. २.

क्षायक १ क्षयोपशमिक २ वेयग ३ उपशामिक ४ सास्वादन ५ ये पांच प्रकार नो सम्यक्त परूप्यो छे जिनवरेन्द्र तीर्थंकरे. ३.

सूक्ष्म काल है तेथी पण अधिक सूक्ष्म क्षेत्र है अंगुल मात्र श्रेणी में आकाश प्रदेश निकालते असं-

ख्याति उसर्प्पिणी जाय. ४.

३०४वें प्रश्न में 'उदार प्रधानं' इत्यादि ५ गाथा आई हैं उन का अर्थः—

उदार नाम भलो शरवो उदारिक कहिये अर्थ तीर्थंकर गणधर ने अधिकार करीनें छै तथा उदारिक कांईक अधिको लाख जोजनो माटे उदारिक. १.

वैक्रिय बे प्रकारनो—एक भवधारणीय बीजो उत्तर वैक्रिय. तथा एक थइ अनेक थाय, अनेक थइ एक थाय, बीजा शरीरनी अपेचा मोटो ते वैक्रिय शरीर छे. २.

कथा में जो कोई वखते शंका उपजे चउद पूर्व-धारीने आहारिकविशिष्ट लब्धि होय ते लब्धी करीने जे यहां आहारिक शरीर करे तेने आहारिक शरीर कह्यो छे ते आहारिक नो आकार वली अत्यंत वैक्रिय थी शुभ छे. ३.

तेजस ते आहार लेइ परिणमाववा नो कारण ते तेजस शरीर कहिये. ४.

कर्म थी थयो जे कार्मज कर्मो नो विकार ते कार्मण आठकर्म करी निष्पन्न सर्व शरीरोनो कारण-भूत ते कार्मण कहिये. ५.

॥ इति गाथार्थ समाप्तम् ॥

शुद्धिपत्र.

पृष्ठ-	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१	८	आगमोदगारणी	आगमोद्गा-रणी
,,	९	सघं	संघ
,,	,,	कर्णोमृत	कर्णामृत
३	३	निःश्नेही	निःस्नेही
४	२	उेदूगता	उद्वेगता
,,	१२	षट	षट्
७	नोट २	नर्क	नरक
,,	,, ३	दरस्नावरणी	दर्शनावरणी
,,	,, ,,	गौत्र	गोत्र
९	२	इंद्री	इंद्रिय
,,	१६	परूपणा	प्ररूपणा
,,	१७	,,	,,
१०	१२	ध्यानै	ध्यानें

॥ शुद्धिपत्र ॥

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१०	१३	प्रमादाचरणै	प्रमादाचारणें
,,	१४	शास्त्र	शास्त्र
१२	१	सिभ्कई	सिज्झइ
,,	२	बुझई	बुज्झइ
,,	,,	मुच्चई	मुच्चइ
,,	,,	परि निव्वाई	परि निव्वाइ
,,	८	,,	,,
,,	१०	थाइ	थाइं
१३	१	हिव	हिवै
,,	२	सत्रमो	सतरमो
,,	५	अनाचारण	अनाचार
,,	१०	पोषा	पोसह
,,	,,	विधें	विधिइं
,,	११	परं परायै	परंपरायें
,,	१२	मार्गै	मार्गे
,,	,,	जेह थी	जेह थी वस्तु गतें

पृष्ठ.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१३	१५	तिणौं	तिणें
१४	३	(सुलंभवोधिओथई वहिलो सिद्धिवरै)	सुलभवोधि ओथई वहिलो सिद्धिवरै
,,	५	वेहलो	वहेलो
,,	६	वेहलोही	वहेलोही
,,	१०	परणीति	परिणत
,,	११-१२	पुद्गलीक पुद्गलाश्रित	पौद्गलिक
,,	१५	अविनाशी	विनाशी
,,	,,	आत्म प्रवृत्ति	आत्म अशुद्ध प्रवृति
१५	५	अपाअप्पमिरउं	अप्पाअप्पम्मिरउ
,,	१६	प्रवर्त्तान	प्रवर्त्तन
१७	१	पछैं	पछे
,,	५	निर्जरै	निर्जरे
,,	६	ना बांघणा	नवा घणा
१८	१०	विपरीताभी	विपरीताभि

॥ शुद्धिपत्र ॥

पृष्ठ.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
		निव्रेशन	निवेशन
१८	१२	द्वेषो भण्यंते	द्वेषौ भण्येते
,,	,,	द्वेषो कप्पं	द्वेषौ कप्पं
,,	१६	भावैतव्यं	भवितव्यं
१९	९	कश्येति	कस्येति
,,	१४	प्रसंज्ञा	प्रच संज्ञा
२०	४	रत्तणं	रक्खणं
,,	७	श्रेक	एक
,,	,,	षंति	खंति
२४	१	तत्वातत्व वीनी	तत्वातत्व ए बे नी
२५	४	परा	परावर्त्त
,,	६	थी खपावे	थी वा खपावे
२६	२	प्रणामै	परणामै
२७	१४	विलेछन	विलछन
,,	१५	सु	सूं
३१	१६	संडन	साडन

पृष्ठ.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
४३	५	सुव्रसहियं	सुवयसहियं
,,	८	ना त्रपहसा	नी क्रिया हस्ये
,,	१३	सणाठमो	सणासठमो
४४	२	प्रणामित	परणाति
४८	५	देसण पूर्व	दंसण पुव्वं
,,	७	भात्वार	भात्कार
५२	१	दंसना	देशना
५३	५	जिहांथै	जिहांपे
,,	१३	कांइक	कोईक
,,	१५	वर्त्ता	वार्त्ता
५४	१४-१५	पामै ते शेणे,	पामै ते स्या माटेके
६०	५	असात	असाता
६४	१५	नयं	नेयं
,,	१६	जंम्पई	जंम्मई
६८	४	आत्मागुल	आत्मांगुल
६९	७	उक्कोसेच्छ	उक्कोसातच्छ

॥ शुद्धिपत्र ॥

पृष्ठ.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
६९	८	तेरषलषा जंहं	तेरस लक्खा जहं
७२	९	द्वादश्चैवइत्यादि	कोटिशतंद्वादशश्चैव कोट्योलक्ष्याएयसीति चैवाधिकानि पंचाश दष्टैव सहस्र संख्या मेतच्छ्रतंचांग पदं नमामि.
,,	१०	अट्ठेव इत्यादि	एकावन्नं कोडिओ लक्खा अट्ठेव सहस चुलसिहिं सय छक्क साढा एकवीस पय गंथा.
७३	१७	द्वारवर्त्तौ	द्वार वृत
७९	१६	सम्य	सम
८४	४	आयो	आयं
८५	२	उवकमीया	उवक्कमीया
,,	३	तापानोदिभि	तापानादिभिर्वेद

पृष्ठ.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
८५	५	इत्यार्थ	इत्यर्थः
८७	७	मीचरिमे	मीचरिमे
,,	८	मोहनी१ अकोसे	मोहंमि १ अक्कोसे
,,	१०	पंचेवं	पंचेव
,,	११	सिद्ध	सिद्या
,,	,,	जलेय	जल्लेय
८८	६	अनयोग	अनुयोग
,,	१४	सुत्र	सूत्र
९३	१२	तरयोत	योत
,,	१७	पुल्द्र	पुद्गल
९५	१६	प्रश्नजाणवा	प्रश्न नो जाण
१०३	२	आनि रहै	रहे
,,	७	असवगदं	असव्वगदं
,,	१३	पुद्गलगना	पुद्गल
१०४	१६	द्विणुकादि	द्विअणुकादि
१०७	४	संपऐसा	सपऐसा

॥ शुद्धिपत्र ॥

पृष्ठ.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१०७	१४	अकाश	आकाश
१०८	९	कालाणु	कालसमय
१०९	८-९	यद्यपीएकत्ता	यद्यापि एकठा
११०	१६	सहिताईग्निस्कंतो,	सीहत्ताए निस्कंतो
		सीहताए	सीहत्ताए
१११	१	सीहताए	सीहत्ताए
		सीयालताए	सीयालत्ताए
,,	५	पनिस्कंतोसीय-लता	निस्कंतो सियाल-त्ताए
		निस्कंताए	सियालताए
,,	९	अत्त्वरानुयोग	चरण करणानुयोग
,,	१२	नांणकंम पकरंति	नांमकंमं पकरेंति
,,	१५	रमदीठी	वत्रकितस भचे रवासाणं
११३	५	करजरादि	युजा
,,	११	परिणामा दसधाश्यूं	परिणाम दसधा

पृष्ठ.	पंक्ति	अशुद्ध.	शुद्ध.
११५	४	लेहण	लेण
,,	१३	सन्न	सह
,,	१४	अवस्यं	अवस्सं
,,	१५	ह्यियं सखिज्ञ	ह्यियं संखिज्ज
,,	,,	यन्वी	यन्वा
,,	१७	निर्युक्तो	निर्युक्तोः
११६	१	कीटीकावधो	कीटिका वहवो
,,	,,	वहवा	वहवः
,,	२-३	तदा समूर्छिमप्राण विरह तदाकाटिका स्तोकानरा वहवा	यदा समुर्छिम नराणां विरह काल तदा कीटिका बहवः तैषां विरहो न तदा कीटिका स्तोकाः ॥

॥ शुद्धिपत्र ॥

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध.	शुद्ध.
११७	२	उखलानि षट् ५	उखलानि षट्क शाला ५ एतावत खटीक नी पांच शाला स्या माटे
१२२	१३	अतेन्द्री	अतिन्द्री
१२४	८	किवारेकी	किवारेक
१२५	९	सद्धहणा	सद्दहणा
१२६	१-३-५-८-९	,,	,,
१२७	१६	सोनाहिया	सोनइया
१२९	१७	अथि	अच्छि
१३०	१	चयंत्रिय	चयंतिय
,,	२	पुणोवी	पुणोबि
१३१	८	चरवलो	चरवली
,,	१७	एषांहि	येषांहि
,,	,,	नराब्द	न राष्ट्र
१३२	२	भृत्योन्ये	भृतोन्ये

पृष्ठ.	पंक्ति	अशुद्ध.	शुद्ध.
,,	६	दुरगतोयत	दुरगतौ पतत्
,,	१०	मुनिः	मुनिः सैव
१३२	११	सत्यक्तमेवतन्मोन्यं	सत्योक्तमेवत न्मोनं मौनं
,,	१२	हरिचंद्र	हरिभद्र
,,	१५	जीवना	जीवनो
,,	,,	कथितं	कह्योछे
,,	,,	मुहूर्त्त मीत्रा	मुहुत्तमित्ता
,	१६	चिंता	चित्ता
,,	,,	एगदच्छु मिच्छओ	एगवच्छु मिच्छउ
१३३	१३	अज्ञानावर्णी	ज्ञानावर्णी
१३४	८	कमीया	कंमीया
१४०	१६	सामग्रीय	सामग्रीश्र
,,	,,	व्यवहार	ववहार
१४१	१	भव्वाचिते अणंते	भव्वाविते अणंता
,,	७	अथी	अच्छि
,,	,,	परिणामे	परिणामो

॥ शुद्धिपत्र ॥

पृष्ठ.	पंक्ति	अशुद्ध.	शुद्ध.
१४४	१४	सामण	सामह्य
१४४	१५	ममन्ना मियत्त	मन्ना मियछ
,,	१६	अजियंचरितंदे सूणा	अज्जियचरित्तंदे सूणा
१४५	७	नियाणकमी	नियाणकडा
१४९	२	तानि	तीन
१५०	५	प्राप्ती	पर्याप्ती
१५१	६	अंतमुहूर्त	अंतर्मुहूर्त्त
,,	१२	धारयूं	धारुं
१५३	१५	विषय	विषय कषाय
,,	१६	थी विषय कषाय	थी कषाय
१५५	१	निरती	निवरती
,,	३	हलं	हल
१५६	७	द्धितीय	द्वितीय
,,	१०	स्वप्नात्	स्वप्नान्
,,	११	अपस्यत्तवतस्या कारि धारिणा	अपश्यत् प्रशश्याकार धारिणः

पृष्ठ.	पंक्ति	अशुद्ध.	शुद्ध.
१५७	३	रुचिक	रुचक
१५९	१३	समयठवणानामे रुधे	संमयठवणानामेरुवे
,,	,,	व्यवहार	ववहार
१६२	८	पंत्तमथं	पत्तमत्थं
१६३	१४	अपुधंतुगंधरसंचबधं	अपुठंतुगंधरसं च बद्धं
१६५	१४	विरसायंगुलं	विरस्सायंगुलं
,,	१५	आयगुलेकेणवथू	आयंगुलेणवत्थु
१६७	१३	वकंति	वक्कंति
,,	१६	वर्श	वर्ष
१७२	१५	इम कोडा	इम २० कोडा
१७३	१	तिहां	तिहा
,,	१५	जोबषई	जोव (सम) ई
,,	,,	विषय विरतो	विसय विरत्तो
१७४	२	दोगी	दोसी
,,	३	नाणस्सं	नाणस्स

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१७४	५	नाणंच अणंवा	नाणंच होई अप्प- वा
,,	१३	नाधो यथा वाट	नांधा यथा वार
१७५	७	वधू विलासन्	वधू विलासानु
१७५	७	वसहासत्तो	विसयासत्तो
,,	१३	उपाथक घातक	उप घातक
१७६	१६	अनाभो तथा	अनाभोगतया
,,	१७	साहोत्मिका	साहात्मिका
,,	,,	धावनरे पनव	धावनडे पनह्यव
१७७	१	णानादिक हास्प जन किंवा	णादिक हास्यजन- कंवा
,,	२	प्रमार्थ	प्रमार्ज्ज
,,	३	जुत्ता	युत्ता
,,	४	अयत तनया	अयतनतया
,,	९	असंख्यात गुणा- धिका	विशेषाधिका ,,

पृष्ठ.	पंक्ति	अशुद्ध.	शुद्ध.
,,	१०	असंख्याता वधाता	विशेषाधिका
,,	१२	संख्याताअधिका	,,
१७८	४	कपोत	कापोता
१७९	३	वसाई	वयाई
,,	६	नपुंसय	नपुंसेय
,,	८-९	दुथेय मुढेय आणिते जुगएईय अविबंध एयभिण्य सेहोनी फेडीयाइयंसी ॥४॥	दुट्ठेय मूढेय अणते जुंगिएईय वुग्गहे एय भय ए सेह निप्फेडीये इय गुव्विणी बाल वच्छाय पव्वावे उन कप्पई ॥ ४ ॥
,,	१३	गुणे	मुणे
,,	१४	रुषाण	रुक्खाण
,,	१५	वेपूई	वेट्ठई
१८०	१	नहु अन्नोतह कोह नह	निहुणसन्नो तह-कोहे नह

॥ शुद्धिपत्र ॥

पृष्ठ.	पंक्ति	अशुद्ध.	शुद्ध.
१८०	२	मांणें रू इरोवंति छाय	मांणेंरूदेवइरो- वंति छायइ
,,	३	पलाइ.	फलाइ.
		मूलेहाणुं	मूलेणि हाणुं
१८०	४	चरि	वरि
,,	५	हेवई.	हवई.
,,	,,	रुष	रुक्खे
१८१	७	वथं	वत्थं
,,	८	तत्कालं कुंथु	तक्कालं कुंथु
१८२	७	भाष्या	भाषा
,,	१३	परयासी	पर्यासी
१८३	७	दोषंच	च
,,	८	असमथो	असमत्थो
,,		मो निंदंतो	मोओ निंदंतो
,,	१०९	अविलिय	अबालिय
,,	११	गिणंतो	गिणतो

पृष्ठ.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१८३	१५	दर्शनं चात्	दर्शनं
,,	१६	नेतिछ्म	नेति-छ्म-
१८४	१	तिष्ठति ति	तिष्ठतीति
१८७	१६	भंचत्वा	भंच
१८८	१-२	उजीयगिदिथो	उजोयगियदच्छो
,,	३-४	कच्छय जीवो वलि	कच्छय जीवो
		ओ कच्छाय कंमाइ	वलिओ कत्थाय
		हुंति वलियाइं। जीव	कंमारं हुंति
		समय कंमस्ससपु-	वलियाइं। जीव
		व्वानिवेधाइ॥ ३ ॥	स्सय कमंस्सय
			पुव्वनिबंधो भ-
			णाइय॥ ३ ॥
	५	पुछकयं ४ पुरस्स-	पुव्वकयं ४ पुर-
		कारस्सं ॥ ५ ॥	स्सकारणं पंच ५
,,	६	एगांतिमिथितं ते चेव	एगंते मिच्छतं
		ओममासओ हुंति-	समावाए हुंति

॥ शुद्धिपत्र ॥

पृष्ठ.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
		मत्तं	समत्तं
१८८	७-८-९	नवहिं जीव वहण	नव विहि जीव
		करणं करावण अणु	वह करणं करा-
		मोइय जोगेहि ।	वणे अणुमईय
		कालंति संमत्त एही	जोगे हिं काल-
		गुणिए पाणी वह	त्ति एण गुणिए
		दुस्सय ते याला॥५॥	पाणीवह दुस्सय
			ते याला ॥५॥
१८९	३	चधाया	च छाया
१९४	६	थाई	थापी
	७	राज्योत्मक	राज्यात्मक
,,	१३	प्रमाणे एइ	प्पमाणे पइ
,,	,,	संख्या पईत्तं	संखा पइतं
,,	१४	अंसापई असम	अंसा, पईअ, सम
,,	१५	पईयं, पईएसं	पईप, पएसं
,,	१६	कमाणं वगणा-	कम्माण वग्गणा-
		णंच	णंच

पृष्ठ.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१९९		निकल्यी	निकली
२००		निगोदमउसओ	निगोद ममउ
		अतन्त भुगोये	अनन्त भागोय
२०१	३	मप्साओ	मभाओ
२०४	६	अवसंगत	आवसगंतु
२०५	१२	तव संयमेण मुखो	तवसंयमेणमुक्खो
	१३	दाणेण हुंतिउत्तमा	दाणेणहुंति उत्तम
	१४	भोगा। देव वरणेण	भोग॥देवच्चरणेण
	१५	रयंअनसनमरणेण	रज्जं अनसन मर-
		इंदत्तं चकितं॥पंचोत	णेण देवत्तं इंदत्तं
		रिविमाग वासित	च ॥१॥पंचाणुत्तर
		लोगंता देवदत्त।	विमाण वासित्तं
		अभव जीवादि न	लोगंतिय देवत्तं।
		पावंती॥२॥	अभव्व जीवा न
			पावंती ॥२॥
२०६	१	तुच्छाय निंदाय	तुच्छा निंदायत्तु-
,,		तुच्छमारंभी	च्छमारंभो

॥ शुद्धिपत्र ॥

पृष्ठ.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
			च्छमारंभो
२०६	१	दर्शी नाम्न शुन्य	दर्शीनीनाम मून्य
२०७	१	६ प्रति	९ प्रति
२०९	६-७	पलेचदश गद्याणें स्तेषां सद्ध सतमैणी मणी दसमि रेकाच्च घटिका कथिते बुधः	पलेच दश गद्या-णैं स्तेषां सार्द्ध शतं मणी मणी दशभि रेकाच्च घटिका कथ्यते बुधैः
,,	१०	फूफितम	फूफिता
२१०	२	ग्रन्थं	ग्रन्थी
,,	४	चतुपदं, कुप्पं	चतुष्पदं, ०
,,	६	संगास्यु,	संगास्यूत
,,	१७	भेदो, दंडसी	भेदः, दंडश्च
२११	३	लखा	लरका
,,	६	गजं मिथ्रि	गजं ममि

॥ शुद्धिपत्र ॥

पृष्ठ.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
२१७	१	पाउब	पाउब्बग
,,	१३	अंघ	अधः
,,	१४	कह्याछि	कह्याछे. पन्नवणा नां पहिला पदमांहिपण छे.
,,	१५	पन्नवणाना पहिला पद मांहि	०
२२१	८	निर्पराधे	निरापराधे
२२२	५	तथा. संभकप्पा	तसा. संकप्पा
२२३	२	२०	५
,,	१४	एवं ५	एवं
,,	१५	मिलियं	मलियं
,,	१६	तथा	तहा
,,	४	धमंथकेवल परमथं	धम्मच्छं केवल परमत्थं.
,,	१२	दिन्न न्यदिन्न	दिन्नमदिन्नं.

पृष्ठ.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
२२५	६	पंडरिंइ इत्थीओ	पंरिइ इत्थीओ
		वेश्या परइथिओ	वेसा विहवा रूव
		कुमारी परइत्थी	सहूवा कुमारी
		नियमोय.	जोगरसुइणंस
२३०	१	संसार विसार,नाम	संसारे बेंसार,
		सम्यग्	नाम ए बे सम्यग
,,	५	चत्वारिय	चत्तारिय
,,	७	दुन्नियराओ	दुन्निवाराओ
,,	९	उषसु उव समीय२	उखूउवसमीयं२
		वेयगमुबिसामी	वेयग मुविसामी
,,	१०	समव	संमत्त
,,	११	सुकुमोय	सुहुमोय
,,	१३	पिधा	खिज्जा
२३२	३	योगे	योग
,,	११	दस	देस
,,	१३-१५	पर्याप्त	पर्याप्ति

॥ शुद्धिपत्र ॥

पृष्ठ.	पंक्ति.	अशुद्ध.	शुद्ध.
२३३	६	मध्रि, ऊद्धारिशा	मधि, उद्धारिसा
		तिर्यक	तिरिक
,,	१०	द्विधा सव	द्विधा भव
,,	१३	विमेद्वि	विसिद्ध
,,	१४	अहारियई भरणियं	अहरियई सरीर महारंग भरणियं
,,	१५	शुभ	शुभ्र
२३४	४	प्रदेश	अंदेशै
,,	५	मद्वि	मद्व

श्री

आत्मधारा

यह ग्रन्थ आत्मिक गुण सत्ता बताने में बहुत

—❀—

उत्तम है. बहिरात्मा, अन्तरात्मा, परमात्मा का स्वरूप, समकित के पांच भूषणादि व दस रूची, बंधन करण, संक्रमण करण, उदय वर्त्तना करण, अप व्रतना करण इत्यादि आठ करणों की व्याख्यादि उत्तमोत्तम विषयों से यह ग्रन्थ परिपूर्ण है. इसी ग्रन्थ में बनारसीदासजी कृत ज्ञानपच्चीसी, अध्यात्मबत्तीसी, आगमअध्यात्मस्वरूप, निमित्त उपादान कारण भेद निर्णय, ध्यान बत्तीसी इत्यादिक ७ पुस्तक साथ ही छपे हैं. ऐसे उपयोगी ग्रन्थ का मूल्य केवल ।=) मात्र, डाकव्यय –) है.

पुस्तक मिलने का ठिकानाः—

पंडित श्रीदेवचंद्र गणि विरचिता

श्री अध्यात्मगीता.

पंडित श्री अमीकुंवरजी कृत बालाबोध सहिता.
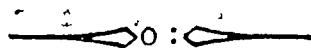
समस्त जैन भाइयों को विदित हो कि ऊपर लिखे नामवाला ग्रन्थ अध्यात्म विषय में अत्यन्त उत्तम है. इस में कर्तृत्त्वता, ग्राहकता, व्यापकता, दान लाभादि, आत्मा के अनादि काल से परानुयाई प्रणमी रहे हैं तिन्हें स्वरूपानुयाई प्रणमाववा तथा उन के विषें निश्चय व्यवहारादि नय निक्षेप प्रमाण, अपवाद, उत्सर्गादि, नित्य अनित्यादि, कर्त्ता कारण कार्यादि, ऐसे अनेक विषयों का वर्णन स्याद्वाद अनुसार बहुत उत्त-मता के साथ किया है. और बालाबोध नाम की अलभ्य टीका से इस का गहन अर्थ बहुत ही सरलता के साथ समझ में आ सक्ता है. अर्थ की स्पष्टता और सुगमता का अनुभव पुस्तक देखनेही से होगा. इस ग्रन्थ की हस्तलिखित प्राति हम को मिली तब बहुत

उत्साह हुवा, तथा इस को पढ़ने से सब को आत्म-स्वरूप का लाभ होने का उपकार समझके तथा यहां के सहधर्मी भाइयों का आग्रह देखकर यह ग्रन्थ मुद्रित कराया है. इस लिये आत्मार्थी पुरुषों को यह ग्रन्थ लेने की सूचना करने में आती है. इस के साथही औरभी पुस्तक छापे गये हैं जैसे—आत्मधारा, साधु वन्दना तथा बनारसीदासजी कृत ज्ञानपच्चीसी, अध्यात्म बत्तीसी, ध्यानबत्तीसी, आगम अध्यात्म स्वरूप निमित्त उपादान चौभंगी इत्यादि इन सब पुस्तकों की एक जिल्द का मूल्य ।।।) है डाक महसूल इस से अलग.

पताः—